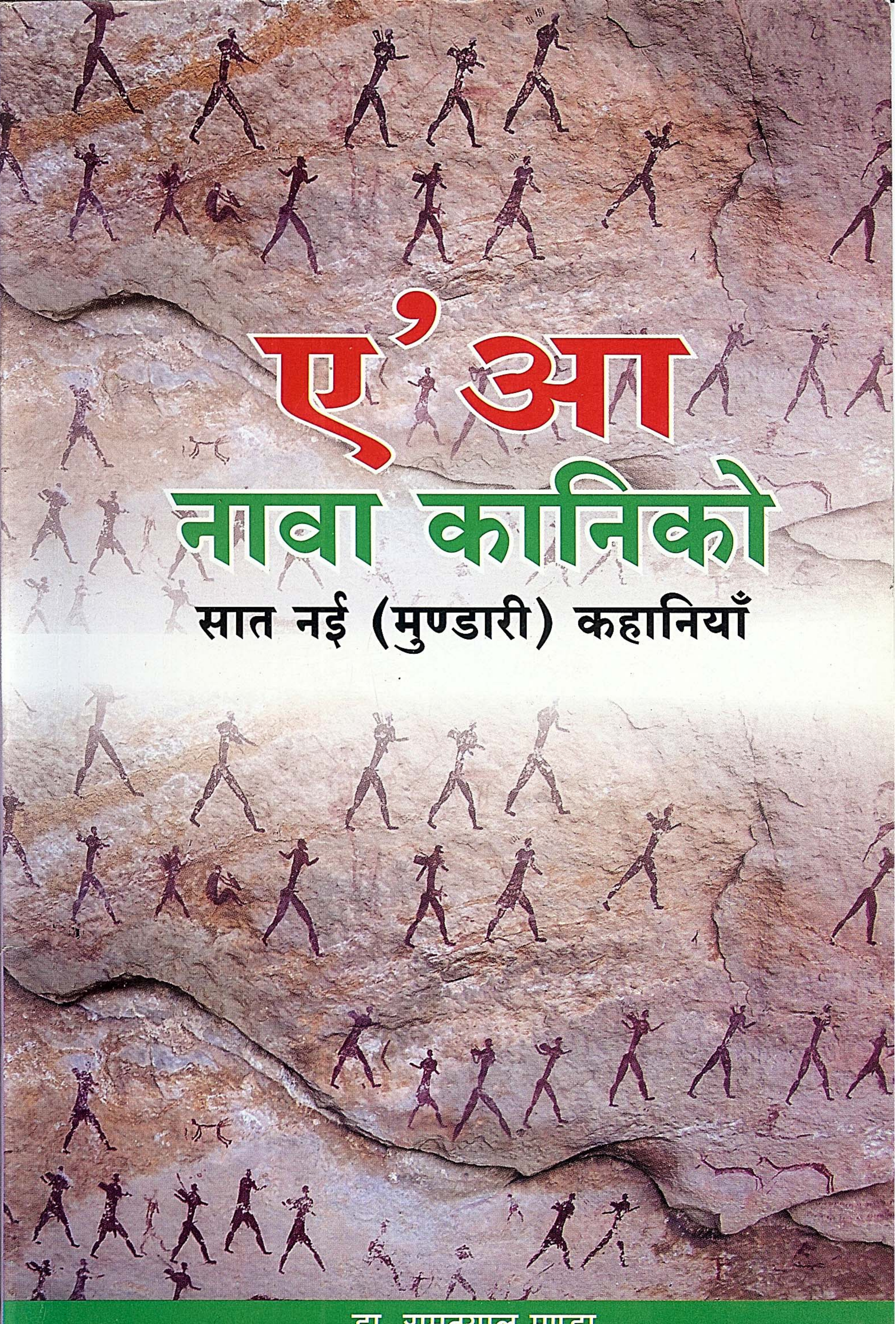


ए'आ नावा कानिको

सात नई (मुण्डारी) कहानियाँ

डा. रामदयाल मुण्डा
अमिता मुण्डा, नालिनी नाग

ए'आ

नावा कानिको

सात नई (मुण्डारी) कहानियाँ

डा. रामदयाल मुण्डा
अमिता मुण्डा
नालिनी नाग

प्रकाशक

रुमबुल

दिरि ओड़ाः, सरनाटोली–हतमा, राँची कॉलेज के पीछे
राँची–834008, झारखण्ड

ए'आ

नावा कानिको

सात नई (मुण्डारी) कहानियाँ

प्रकाशक : रुम्बुल
दिरि ओड़ाः, सरनाटोली–हतमा, राँची कॉलेज के पीछे,
राँची–834008, झारखण्ड
फोन : 07739817358
ई–मेल : rdm.rumbul@gmail.com

द्वितीय संस्करण : 2013

मुद्रक : आई. डी. पब्लिशिंग, कोकर, राँची–834001
मो. 094311 82812

मूल्य : 100/– रूपये

बारिआ संस्करण बारे रे मिद टुड जागार

ए'आ नावा कानि को पुथि बारे रे आञा: कानाजि मेना: चि ने पुथि नावा लेकाते ओल रुआड़ा काना। ने नावा ओल मेनेआ दो ने लेका ते चि बंगाल आर उड़िसा रे ताइन तान मुण्डा को बंगला आर उड़िआि ते जागार मुण्डा होड़ो को ऐटे: बानि रे जुदि 'ा' का लागाओ के रेदो 'ओ' को पाड़ावएआ। चिलका चि 'सबेन' बंगला आर उड़िसा रेन मुण्डा को 'सोबेन' को पाड़ावएआ। एना मेनते सोबेन कोबु राबालो: का मेनते एटे: टुङ कोरे 'ा' केआते ओला काना।

ए'आ नावा कामिनाला पुथि ओड़ो: मिसा छापा रुआड़ा जाद लो: इसु पुरा: रासिका होबाओ ताना। ने पुथि रे ओको पात्रा को मेना: कोआ: इनकु सोबेन हातु साआ रेन तानको। ने पुथि राँची वि.वि. रेआ: टी. आर. एला विभाग आर ओड़ो: चेतान रे काजि कामि कोरे हिजु: बिड़ाओ रेको कुलिओ तान कुनुलि कोरे कामि हिजु: ताना।

आञा: उड्डु: लेकाते ने पुथि इसु पुरा कामि रे हिजुगा। आञ लेकाते ओड़ो: मिसा छापा रुआड़ा जाद लो: सोबेन लेकाते बुगिन उतार बाइओआ। आञा: विसवास मेना: चि नेआ पुथि ते पुरा: उतार दो पाड़ाव तान होन को इसु पुरा: सेड़ा को तुनुम दाड़िआ।

टुंडु रे आञा: आसारए: मेना: चि ने ''ए'आ नावा कामिनाला'' पुथि ते पाड़ाव होन को पुरा:-पुरा: देंगा को नामेआ।

बुगिन सानाङ कोलो: ते

अमिता मुण्डा

डॉ0 बीरेन्द्र कुमार सोय (पीएच0डी)
सम्पादक – संगोम
सम्पादक – कुपुल
आजीवन सदस्य– लिंग्विस्टिक्स सोसाइटी
ऑफ इण्डिया,पूणे



बर टुड.

'एआ नवा कानि को', दोबाड़ा चपा रूड़ा कन पुथि, पड़व तनकुआ ती: रे मेना। ने पुथि रेआ जोतो कानि को माइनन डॉ0 रामदयाल मुंडा ताकिन सिरजव तद, उडु: तद, लेल तद, चिना तद, उरूम तद, पोसोंदी तद, बिड़व तद जोतो कायदा को मेना:। हातु, दिसुम, समाज, ससंकिर, असुल अपासुल, ओल पड़व, जागार साहिति, सोरकार, नेता मंत्री, ऑफिसर, आंव होड़ो, सोबेन कोआ बरनिका मेना:। जोनोका ओड़ो: तुला लेकाते एनेओन कानि को मेना।

सहिति समाज रेआ दोरपोन। एआ नवा कानि रेआ जोतो कानि को समाज रेआ दोरपोन तना। उबर होरा रे सेसेन तन जागार साहिति ओड़ो: होड़ो गोट कोआ लेपेल चिपिना राष्ट्रीय, अन्तराष्ट्रीय लेकाते ओनोल सहिति होरा तेगे उरूमोआ।

डॉ0 मुंडा सयोबा: इकिर उडु :, अकिलान दंड़ा तद कानि सोनोतो: को सोबेन होड़ो कोबु पड़व, सब दड़िका, कानि होरा ते सेंड़ा पेड़े: नम केयाते समाज रेन आगुआ बइन रेआ एनेओन हिजुका, मेनेआ आसाराए मेना।

कानि हारिआ डॉ0 रामदयाल मुंडा, मोयोद साहिति पोकोतो दिरि बिद, तिंगु तुका जना। नेआ जोतोन रेआ जरूडु मेना। ने पुथि मैट्रिक, आइ.ए., स्नातक, स्नातकोत्तर, को जमा जमा ते अनुसंधान, पीएच0डी तन सेपेड़ेद हपानुम कोआ मेन्ते इसु गे गोनोड.ान तना। मुंडा ओल, पड़व ओड़ो: पुचिद गोटा दिसुम रेनकु दड़िका, राबाल होरा ते इदियोका, मेनेया सानाड. गे डॉ0 मुंडा सायोब तकिना ताइकेना। एन लेकातेगे ने पुथि ओल रूड़ा कना। ओल सोतो: रूड़ा रे माइनन प्रो. तुलसीनारायण सिंह मुंडा, प्रो. अमिता मुंडा, श्रीमती नलिनी नाग, श्री विशेश्वर मुंडा ताकोआ जमाते ओड़ो: गे अकिलान गोमके कोआ देंगा मेना। मुंडा जागार होड़ो को जमा जमा ते एटा होड़ो कोआ (झारखण्डी) मेन्तेओ गोनोङान पुथि तना:।

एनाते ताबु कुटुङ कुपुल, हागा मिसि को 'एआ नवा कानि को' पुथि जरूडु गे किरिड. केयाते पड़व लगातिङा। साहिति पोवा, पोसा, पासाराव रे जुलुड. ओड़ो: आसाराए तन लो: जोहार।

डॉ0 बीरेन्द्र कुमार सोय

दो शब्द

''सात नई कहानियाँ''पुनर्प्रकाशित पुस्तक पाठकों के हाथ में है। इस पुस्तक की सारी कहानियाँ श्रद्धेय डॉ0 रामदयाल मुंडा द्वारा सृजित, रचित, कल्पित, दृष्टित, चिन्हित, चित्रित, प्रतिविम्बित यथार्थ कहानियाँ हैं। गाँव, राज्य, समाज, संस्कृति, जीवन यापन, शिक्षा, भाषा साहित्य, सरकार, नेता, मंत्री, अफसर, बेवस जनता, सभी पक्षों पर वर्णित है। प्रतीकात्मक, तुलनात्मक और जागृतिक कहानियाँ हैं।

'साहित्य समाज का दर्पण'। सात नई कहानियों की सभी कहानियाँ समाज के सभी पहलुओं को प्रतिविम्बित करती है। विकासात्मक मार्ग पर साहित्य और समुदाय का अस्तित्व, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लिखित स्वरूप से ही बनती है।

डॉ0 मुंडा की दिग्दृष्टि, दूरदृष्टि, बौद्धिकता, अनुसंधान की महत्ता पर आधारित कहानियाँ, पाठकों के मन मस्तिष्क में चेतना पैदा करता है। कहानियों के उद्धेश्य से ज्ञान चक्षु का मार्ग प्रशस्त हो, समाज मे अग्रणी भूमिका के लिए जागृति पैदा कर नेतृत्व क्षमता विकसित हो, भविष्य की आशाएँ हैं।

कहानीकार डॉ0 रामदयाल मुंडा अद्वितीय व अमिट साहित्यिक स्तम्भ बना गये। संरक्षण, संवर्द्धन और अनुसरण की आवश्कता है। यह पुस्तक मैट्रिक, आई. ए., स्नातक, स्नातकोत्तर के साथ ही अनुसंधान, पीएच0डी अध्ययनरत विद्याथियों, शिक्षाप्रेमियों के लिए अति महत्वपूर्ण है। मुंडारी भाषा को लिखित, ध्वनिगत रूप से सरल, सहज, सुगम और वृहत दृष्टिकोण रखते हुए डॉ0 मुंडा सहाब के आग्रह को केन्द्र बिन्दु मे रखकर इस पुस्तक का पुर्नप्रकाशन द्वितीय संस्करण के रूप में किया गया है। इस कार्य में प्रो. तुलसीनारायण सिंह मुंडा, प्रो. अमिता मुंडा, श्रीमती नलिनी नाग, श्री विशेश्वर मुंडा के साथ ही कई गणमान्य विद्वानों को योगदान है। मुंडा भाषा भाषी के अलावे समस्त झारखण्डियों, देशवासियों के लिए भी महत्वपूर्ण पुस्तक है।

सभी महत्ता को परिलक्षित पुस्तक पाठकों, अतिथियों, बन्धुओं, ''सात नई कहानियाँ'' पुस्तक अवश्य ही खरीद कर पढ़ें। साहित्य के पालन पोषण, विस्तार में रुचि लें और इसी उम्मीद के साथ सभी को जोहार।

डॉ0 बीरेन्द्र कुमार सोय

आनायार

नाआः जाकेद रेआः आदिवासी साइति पुराःतेदो सुआाणा साइति रेआः रूप रेगे मेनाः। नावा कोरे पुराः दुराङ गालाङ कोगे मेनाः। नावा गाःइदि साइति कानि, इनुङ, तोनोल–रेआः सेनेन इसुगे माणिआ। हुड़िङ दिनाआते नेसाः आदिवासी साइति को रेआः पाड़ाओ पाआड़ाओ रेआः काजि होबाओः तानाःते ने तारातुला आएःतेगे लेलोः ताना। सानामाङ रेआः का'नि को ने तारातुला हुड़िङ लेकारेओ पारकाओःका मेने कुरूमुटुतेगे ओलाकाना।

एटाः आदिवासी जागार को लेकागे होड़ो जागार तामबाओः रेआः एनेटेः तिरिङ रे मेनाः। एनामेन्ते होबा दाड़िओःआ चि का'नि नेआको पाड़ाओनिः इसु टायादरे रूडुकोःआते उडुःइ टोगोःआ चि का'नि आएः ओकोतेः इदिजाःइआ। होड़ो आर हिन्दी जागार किन, एटाःएटाः बानाइरेंआः जागार किन तानाः, आर उलथा टुङको लेकाते रिकाएरेआः ले कुरुमुटुआ कादा एनामेन्ते बालाए ओड़ोःगे सांगिआकाना।

ने का'निको ने रुपरे आगुरे आलेआः सोंगेको–गंदुरा, सुन्दर, कमला, लखी, गंगी, मकी, सोंदारी–माइनान भंवरलाल जोसी जी आर सरस्वती प्रेस, उदयपुर रेन कामिआको इसु पुराः देंगा को ओमाकादा। इनकु सोबेन इसु पुराः जोआर। नेआ नावा होड़ोः का'नि–कोरेआः एनेटेः उतार किताब तानाः एनामेनते पाड़ाओ सागाते आले सानांति आ'र उनुसुकुर रेआः ले आसाराएः तना।

सुकान बुरु, 1980 ओलकेनको

आमुख

अब तक के आदिवासी साहित्य का अधिकांश लोक साहित्य के रूप में ही है। जो कुछ नया है उसमें गीत कविताएं ही अधिक हैं। नए गद्य साहित्य की गति अत्यन्य ही धीमी है। इधर कुछ दिनों से आदिवासी साहित्य की पठन-पाठन की बात उठी है तो यह संतुलन और भी अधिक स्पष्ट दिखाई दे रहा है। प्रस्तुत मुण्डारी कहानियां इसी असंतुलन को कुछ हद तक दूर करने के प्रयास में लिखी गई हैं।

अन्य आदिवासी भाषाओं की ही तरह मुण्डारी भी मानकी-करण की प्रारंभिक स्तर पर है। इसलिए संभव है कि पाठक को कई जगह रूककर सोचना पड़े कि कहानी उसे कहां ले जा रही है। मुण्डारी और हिन्दी एक दूसरे से भिन्न प्रकृति की भाषाएं हैं और हमने अनुवाद तथा शाब्दिक करने की कोशिश की है इसलिए भाषान्तरण की कठिनाइयां और भी बढ़ गई हैं।

इन कहानियों को इस रूप में लाने में हमारे सहयोगियों- गंदुरा, सुन्दर, कमला, लखी, गंगी, मकि, सोंदारी, -सम्मान्य भंवरलाल जी जोशी और सरस्वती प्रेस, उदयपुर के कार्यकर्त्ताओं ने बड़ी सहायता की है। उन सबको अनेक धन्यवाद। यह नई मुण्डारी कहानियों की पहली पुस्तक है इसलिए पाठकों की ओर से हम सहानुभूति और प्रोत्साहन की आशा करते हैं।

सुकन मेला, 1980 — लेखकगण

अनुक्रम

नाचा कामिनाला

कुलि बेड़ा–कुलिबेड़ाते मनए राँची रेआ: भूताहा तलाब (बोंगान बांदा) नुतुमाकान टोलाए: दाणा नाम केदा। साहार ताला रेआ: एन बांदाते सोबेन सा: रेआ: हुमु दा: हिजुगा। एना बांदाते दा: का लिंगि उडुङ तान लेकाते एन दा:, दा: लेकाओ का लेलो: ताना। इमिन रेओ होड़ोको रेआड़ानतान गासारेन ताना। तारा सा: रे धुबि को किचिरि को नुरा ताना आर बांदा आतोम रे, चाड़े–चाड़े पिड़िंगि रेको तासे जादा। मिसा–मिसा आचाका गे होयोलेचि कोता:को रेआ: का जीला: दाड़िओ: एदकान सोआन हामटु: राकाबो:आ आर एनतागाते सेकेड़ागे सेन पारोमेगे मोनेआ। इमिन रेओ मनएआ: जी काए: पातिआ तान गेआ। इनि: आद गिड़िआकान आएआ: दाइ बोनाइ ताकिन दाणा नांगेन उडुङाकाना।

मानए दो मोद चाण्डु:लेका होबाओ:ताना राँची ते पाड़ाओ मेनते हिजु:आ काना। साहार बेएसेलेका आउरि: लेल चिनाएआ। हिजु: तान रे एंगाते काजि कुला:इआ– "आम सेनो: तान ता: रेगे बाबु आमा: दाइ बोनाइ ताकिन सेन आदा काना को मेनेआ। सोंजोको जाआ:म नाम किन रेदो दुकु–सुकु रेओ कुपुलि पे।"

पांदरा अगस्त हुलाङ सानिचार ताइकेना। सेता: सा: कॉलेज रेआ: झण्डा ओटाङ होबा जान चि तिकिन रेआ: मांडि जोम केआते मनए आएआ: दाइ बोनाइ ताकिन दाणाए: उडुङ जाना। एंगाते निमिनाङ गे: उदुब लि:आ चि आकिन भूताहा तालाब जापा:रेगे किन ताइन ताना। मनए भूताहा तालाब ओकोमान रे मेना: मेनेआ: दोए: इतुआन तान ताइकेना मेनदो एनसा: जेता इमताङ काए: सेनाकान ताइकेना।

दाणा तान दाणा तान मनए एन बानदाए: सेन तेबा: केदा। लेलेआए: एनता: कोरेआ: हुमु दा: रेआ: नालि को सोबेन एनतेगे मुलिआकाना, आर दा: दो जा:ए लेकाओ का मोने ताना। इमिन रेओ होड़ोको कारकाद–रेआड़ान ताने: लेल केद कोआ। बांदा जापा: रेगे मिआद मांदिर बाइआकाना। इसु होड़ोको एन बांदा रे रेआड़ा कोआते एन रे बोंगा को बोलो ताना। एन जापा:रेगे बांदा आतोम लोसोद रे सुकुरि को ओड़ा बेड़ान ताना।

नया धन्धा

पूछते-पूछते मनए राँची के भूतहा तालाब नामक मुहल्ले में पहुँचा। शहर के बीच स्थित उस तालाब को सभी ओर का गन्दा पानी आता है। उस तालाब में पानी बहकर नहीं निकलने के कारण उनका पानी, पानी की तरह नहीं दिखाई देता है। फिर भी लोग वहां नहा-धो रहे हैं। एक ओर धोबी कपड़े फीच रहे हैं और तालाब के किनारे घास बिहीन आड़ पर सुखा रहे हैं। कभी कभी अचानक ही हवा चलने पर किधर से असहनीय दुर्गन्धपूर्ण हवा उठती है और मन करता है कि वहां से जल्दी ही भाग जाएं। तब भी मनए का मन पीछे हटने वाला नहीं है। वह निकला है अपने खोए हुए दीदी-बहनोई का पता लगाने के लिए।

करीब एक महीना हो रहा है, मनए रांची में पढ़ने के लिए आया हुआ है। शहर में वह ठीक से परिच्चित नहीं है। आते समय उसकी मां ने उसे कहा था "बेटा, लोग कहते हैं कि जहां तुम जा रहे हो वहीं तुम्हारी दीदी-बहनोई जाकर लापता हो गए हैं। संयोग से अगर तुम उनका पता लगा सको तो उनसे दुःख सुख पूछना।"

पन्द्रह अगस्त का दिन शनिवार था। सुबह कॉलेज का झण्डा-तोलन होने के बाद दोपहर का खाना खाकर मनए अपने दीदी-बहनोई की खोज में निकला। उसकी माँ ने इतना ही बताया था कि वे भूतहा तालाब के ही नजदीक ही रहते हैं। भूतहा तालाब कहां है, इसका पता मनए को था किन्तु वह उस ओर कभी गया नहीं था।

खोजते-खोजते मनए तलाब के पास गया। देखता है कि उस आस-पास की सारी गन्दी नालियों का पानी वहीं जाता है और पानी को छूने से भी घृण हो रही है। फिर भी वह देखता है कि लोग उस पानी से मुंह धो रहे हैं, नहा रहे हैं। तालाब के पास ही एक मन्दिर बना हुआ है। नहाने के बाद बहुत सारे लोग वहां पूजा करने को घूसते हैं। वहीं नजदीक तालाब के

एनता: रेगे मिआद चा दोकान ताइकेना। मनए दोकान तानि: कुलि कि:आ– ''भाई साहब इधर इस आस–पास तामाड़ तरफ के कोई आदमी रहते हैं।'' तामाड़ तरफ के?...... क्या करते हैं, कितने लोग हैं?''

''पति पत्नि हैं। पति मध्यम कद का है और घुंघराले बाल हैं। काम के बारे में तो कुछ भी मालूम नहीं है। सिर्फ इतना ही कि आदमी मेहनत मजदूरी करता है।''

''ऐसे आदमी कैसे मिलेगा? काम का पता चले तो आसपास के लोगों से पूछ भी लिया जा सकता है।... देखिए तालाब के उस पार वहाँ एक रिक्शा गराज है। वहाँ जाकर आप पता लगा सकते हैं। हो सकता है वहाँ उसको कोई जाने।''

''अच्छा हम वहीं करते हैं।'' मेता:इ चि मनए बांदाए: सेन बिउर केदा आर एन रेकेसा गाराज ता:ए तेबा: केदा। एनता: गाराज गोमके एनकागे: कुलि कि:आ। गाराज गोमके आर मनएआ: जापागार आयुम केआते मिआद रेकेसा चालाओनि: उदुब केदा– ''हे, एन होड़ो दो हेनमान रे: ताइन ताना। एन दा: नाला जापा: रेआ: छापारि रे।'' मनए एनता:ए सेनो: जाना आरे लेल बेड़ा ताना, सोंजोको जाआ: मोद होड़ो का मोद होड़ो किन लेल नामो: रेदो मेनते। मेनदो एन सोमाए रे आकिन रे जेताएओ ओड़ा:रे काकिन ताइकेना, आ'र ओड़ा: ताकिन चाबिआ कान ताइकेना। मनए दुआर जापा:रे बुरुआकान इटा गुंडा कोरे:दुब जाना–आ'र आकिन हिजुगाए: तांगिताना। नाणे: रेगे ओड़ो: मिआद दुआर ताइकेना। ''एन रेओ जाआ: आञा: दाइ–बोनाइ लेकान कोगे ताइन ताना।'' —मनए जी रे: उडु: ताना। दुआर जापा: बागेआकाना आ'र बिताराते कुलगिआ किन कापाजि तान लेका आयुमो: ताना—

''आम गेदाङ ना मोटाइतेम हिजु:आ काना। नेता: चिलका मेनेआ: दोञ उदुब लेद मेगेआ।'' कोड़ा मेनजादा।

''इमिन रेओ नामिनाङ नेका मेनेआ: दो काञ बुजाओ लेनगेआ। सामा काजिगे राँची रे ताले: कामि ताना मेनोगो:आ आ'र नासा: दो ना ताइन, ना जोम नू, जेताना: रेआ: टेकान बानोगा। जारगि दो जारगि हिजु: ताना। किचिरि डेंगा सोबेन लुमकेआते जोजो गे तेआराकाना।'' इमताङ गे मनए आयुम जादा चि मिआद होन 'मांडिगा', मेन जालोए: गेजेड़ा एटे:न ताना। मनए जी रे उडु: ताना— ''आञा: दाइ– बोनाइ ताकोओजाआ: नेका नो:गे।''...... ठीकी इमताङ गे मनए आएआ: दाइ हिजु: ताने: लेल कि:आ। तारासा: तीरे मिआद गोओंडो–गोओंडो थाइला: रे चाउलि चि ना: दो आटा, आ'र तारा सा: रे मुराइ आड़ा: आ'र मिआद साकाम ते टिपिआकान बोतोलो रे सुनुम। मिआद केचा:–केचा:

किनारे के कीचड़ में सूअर लोट रहे हैं। वहीं चाय की एक दूकान थी। मनए ने दुकानवाले से पूछा —"भाई साहब, इधर इस आसपास तामड़ तरफ के कोई आदमी रहते हैं?" "तामड़ तरफ के?..... क्या करते हैं? कितने लोग हैं?"

"पति-पत्नी हैं। पति मध्यम कद का हैं और घुंघराले बाल हैं। काम के बारे में तो कुछ मालूम नहीं है। सिर्फ इतना ही कि आदमी मेहनत-मजदूरी करता है।"

"आदमी कैसे मिलेगा? काम का पता चले तो आसपास के लोगों से पूछ भी लिया जा सकता है।....... देखिए तालाब के उस पार वहां एक रिक्शा गराज है। वहां जाकर आप पता लगा सकते हैं। हो सकता है वहां उसको कोई जाने।"

"अच्छा हम वहीं करते हैं।" कहकर मनए तालाब की आड़ पर चलते हुए उस रिक्शा गराज के पास आया। वहाँ उसने गराज के मालिक से उसी तरह पूछा। गराज मालिक और मनए की बात सुनकर एक रिक्शा वाले ने बताया— "हां, वह आदमी वहां रहता है। नल के पासवाली छपरी में।" मनए वहां गया और इधर-उधर देखने लगा, यह सोचकर कि संयोग से दोनों में से कोई मिल जाए तो....। लेकिन उस समय इन दोनों में से कोई घर पर नहीं था और दरवाजे पर ताला लगा था। मनए दरवाजे के पास ईंट के टुकड़ों की ढेर पर बैठ गया और उनके आने की प्रतीक्षा करने लगा। नजदीक ही और एक दरवाजा था। "वहां भी शायद मेरे दीदी-बहनोई जैसे लोग ही रहते हैं।" मनए मन में सोच रहा है। दरवाजा पूरा बन्द नहीं है और उसे लगता है कि अन्दर पति-पत्नी में विवाद हो रहा है—

"तुम ही जबरदस्ती यहां चली आई हो। यहां का हाल मैंने तुम्हें पहले ही बताया था।" मर्द कह रहा है।

"तब भी इस तरह बुरा हाल होगा, इसका पता मुझे नहीं था। हम यों ही कहते हैं कि हमारे वो रांची में काम करते हैं, और यहां न रहने का और न खाने पीने का, कुछ का ठिकाना नहीं है। और बरसात तो बरसात आ रही है। उस दिन कुछ देर की वर्षा से ही घर सारा चू रहा है। कपड़ा-लता सब कुछ भींगकर सीठा बन गया है।" .....उसी समय मनए सुन रहा है कि एक बच्चा "माँ, भात दो।" कहते हुए रो रहा है। मनए सोच रहा है— "मेरे दीदी-बहनोई की भी हालत शायद ऐसी ही होगी।"...... ठीक उसी समय मनए को उसकी दीदी आती हुई दिखाई दी। एक ओर हाथ में एक गन्दे थैले में चावल या आटा और दूसरी ओर मूली का साग और पत्ती की ठेपी लगे बोतल में तेल। एक फटी साड़ी पहनी हुई

साड़ि ते: किचिरिआकाना आ'र एने: गे ओकोता: रे कामि नाला केन लेका दानदा–पुनदा गे: लेलो: ताना। सोमाएआकान रे: लेललि: दाइते आचाकागे बुड़िआ जान लेकाए: लेलो: ताना। मोलोङता: रेआ: ऊब कोए: पांडु एटे:आकाना।

"चि बाबु चिमताङ रेम तेबा: तादा?" मेन जालो: मनएआ: दाइते दुआरे: नि: जादा। दाइते तीङ तादा: को दुआर जापा: रे दो केद चि मनए दाइते: जोआराइ ताना।

"चि दाइ पे बेएसगेआ चि?"

"हे नी दिन दो सारे: बाडुए: कान कोले बेएसगेआ।"

"सारे: बाडु:इआकान को?"

"हे आमा: मिआद गेड़ेम कुड़ि ताइकेना। होला–होला गे बांगाइ: जाना। कुपुल कोता: जागारो आउरिगे लिङ कुल दाड़िआ:।"

"हे कारेदो बुड़िआ काचि: काजीआ होनाङ। आबेन नेमान रे मेना: बेना मेनेआ: दो बुड़िआ गे उदुब लि:ञा।"

"हे नेता: दो ने: नेका केसे–रेमबेद नो: गे हेइ।" मेन जाद लो: मिआद गांडुइ: उसुकुरा:इआ।

"हे दाइ मार, जी काजि बेएसेआकान बु ताइनका मेन जालो: मनएआ: जी मोणे सिरमा सिदा आकोआ: हातुते सेनो: जाना। इनि: उडु: तना आको इमताङ चिलका सुकुतेको हारा लेना। ओड़ा: रे जोमेआ: नूइआ: जेताना: रेआ: घाटि का ताइकेना। ओकोआ गेको नाम केना, ओको इमताङ गेको नाम केना। तोवा दो, ताबेन दो, ओड़ा:रेगे होबा तान ताइकेना। माराङलेकान ओड़ा: रे ने टुण्डु हेन टुण्डु आपान मोने–मोने को सेन बेड़ा केना। कोलोम लेकान राचा, आ'र राचा पारोम किसिम–किसिम जो बा कोते पेरे:आकान बागाइचा रे आपान मोने को होनोर केना, इनुङ केना। लान्दातान, जागार तान एन दाइते नेकान केसे रेमबेद रे: टोगाकाना दुबाकान तागातेगे मनए आएआ: दाइ बोनाइ ताकिना: गोटा ओड़ा:ए लेल चाबा जादा। तारा सा:रे इटा कोते तिरिङ केआते बाइआकान जूउला, तारासा: रे बारिआ लेका आलमुनिआम रेआ: चिपा को। एन जापा:रेगे पाचिरि रे मिआद कांटि किलाकाना आ'र एन रे मियाद लोमपो हाकाकाना। हुड़िङ दूर हामि: लोमपो सुकुलते पाचिरि हेनदे गिड़िआकाना।

"आञा: बोनाइ दो चिमताङे: हिजु:रुआड़ा:?" मनए दाइते: कुलि जा:इआ।

"ने:गे: हिजु:आ।" दाइते मिआद हानारूबरे बारिआ लेका पेआजु–मारचि को हाद तान लो:ते मेन रुआड़ाजादा। हे सेकेड़ागे होनाङे: हिजु:को:रे।

है और बालों की अस्त-व्यस्तता से लगता है कि वह कहीं काम करने के बाद आ रही है। मनए को लगा कि उसकी जवान दीदी अचानक ही बुढ़िया गई है। माथे के पास के बाल अब सफेद होने लगे हैं।

"बाबू, तुम कब पहुँचे हुए हो?" कहती हुई मनए की दीदी दरवाजा खोल रही है। दीदी हाथ की चीजें दरवाजे के पास रखती है। मनए उसे प्रणाम कर रहा है।।

"तुम लोग ठीक हो न, दीदी?"

"हां, आजकल, बचे-खुचे हम ठीक ही है।"

"हां तुम्हारी एक भांजी थी। हाल ही में चल बसी। सम्बन्धियों तक बात भी हम नहीं भेज पाए हैं।"

"हाँ, नहीं तो बुढ़िया जरूर बताती। तुम्हारे यहां होने का पता मुझे बुढ़िया से ही मिला था।"

"हाँ, यहां तो हम इसी तरह ठेलम-ठेल मे हैं।" कहते हुए उसने एक पीढ़ा मनए की ओर सरका दिया।

"ठीक है, दीदी। जी प्राण ठीक रहना चाहिए।" कहते हुए मनए का मन पांच साल पहले उसके गांव को दौड़ गया। वह सोचने लगा वे कैसे सुख से बड़े हुए। घर में खाने-पीने की किसी चीज की कमी नहीं थी। जो चाहते थे, जब चाहते थे। दूध-दही घर पर ही होता था। बड़े से मकान में इस छोर से उस छोर मन मुताबिक चला-फिरा करते थे। खलिहान-सा आंगन और आंगन के पार फल-फूलों से भरे बगीचे में मनचाहा घूमते थे, खेलते थे। हंसती-बतियाती उसकी वह दीदी यहां इस रेल-पेल में पड़ी है। जहां बैठा है, वहीं से वह अपने दीदी-बहनोई का सारा घर देख रहा है। एक ओर ईंट पर ईंट रखकर बनाया हुआ चूल्हा, दूसरी ओर अल्युमिनम के कुछ बर्तन! उसके पास ही दीवाल पर एक कांटी लगी हुई है और उससे एक ढिबरी टंगी है। कुछ दूर तक दीवाल ढिबरी के धुएँ से काली हो गई है।

"मेरे बहनोई कब वापस आएंगे, दीदी?" मनए अपनी बहन से पूछ रहा है।

"अब आते ही होंगे।" उसकी बहन एक ढक्कन में प्याज और मिर्च इत्यादि काटते हुए जवाब देती है।

होस्टेल रे काञ काजि तुका कादकोआ। हाजिरिञ तायोमजानरे काको सुकुआ।''

''एह! काचिम काजिआ:कोआ। नामिन दिन रेम हिजु:आ काना, हुड़िङ खोओनो चिकाम ताइना? आमा:बोनाइ दो तांगिलीमे, कारेदो हिजु: लेनाम मेनेआ:ए मुण्डि केरेदो ओड़ो:ए काजिआञा।''

''हे लेपेल दो आञो मोनेजा:ञा होनाङ.....।'' मनए आएआ: बोनाइ बुधना: बारे रे: उडु: ताना। खूब सोमाए राकाबाकान होड़ो। एंगा आपु किना: एसेकार होन। काजिआको चि मोद सोमाए हातु रे आकोगे लाआ: उतार पूंजिआन होड़ो को ताइकेना। मानएआ: आपुते ओते-आड़ि मेनेआ: काजि आयुम तेगे होन कुड़ि एनरे गोङि रेआए: हेला:। मेनदो एन ओड़ा: ने सोमाए नेका बइआकाना चि मनएआ: जी रे पातिआ गे का होबाओ:तना। मनएआ: बोनाइ बुधन एसेकर होन लेकाते इसुगे दुलाड़ाते: माराङ लेना। ओकोआ गे: नाम केना एंगा-आपु किन एनागे किन ओमा:इआ। मिडिल इसुकुल आउरि बोलो रेगे घाड़िदो, साइकाल दो किन किरिङा:इआ। नेआ को नाम केद चि माणि-माणि ते ओल पाड़ाओए: डिलाओ केदा आ'र पीटी-पालान कोए: एटे: केदा। मिद सिरमा बितार रेगे बुधन ओल पाड़ाओए: होका जाना। एन तायोम तेदो आए: लेकान सोंगे को ओड़ो: मिद गाण्डा लेकाए: नाम केद कोआ। पीटि-पालान होरातेगे इलि, आरकिनू आ'र जुआ इनुङ कोए: इतु केदा। एंगा-आपु किन सोंजोको जाआ:, होने: बाइ रुआड़ाओ:आ मेनते गे एन सिरमा जेटेगे मनएआ: दाइते लो: किन आड़ांदि कि:आ।'' मेनदो कोनेआ आउलि: तेओ बुधना: सिदा रेआ: हेओआको कागे बादाला जाना। मोद बार सिरमा दानाङ एंगाते-आपुते ताकिन बाङकिन जाना आ'र बुधन: बोओ: रे आचाका गे ओड़ा: दुआर रेआ: सोबेन बाआरोम उयु: जाना। सिदा रेगे इलि आरकि तेगे हेओआ कान बुधन ना: दो आए: मोने लेका ताइने: एटे: केदा। आपान मोनेते कामि रेआ: हेओआ दो का गे ताइकेन लेकाते सिउ: चालु: कामि लेंगेड़े एटे: जाना आ'र ओड़ा: रे बाबा चाउलि हाराओ: बादाला सिदाआते ताइकेना: को खारचा एटे: जाना। माणि-माणिते बुधन: ओड़ा: रे रिणि बोलो जाना। रिणि को हाल नागेन जेताओ:का मुंडिओ: तान चि मिआद-मिआद ते आएआ: कोनेआ: तुसिङेआ: सोना-सामाड़ोम कोए: आकिरिङ केदा आ'र टुण्डु रे एनाको चाबा जानचि ओते आड़ि बानदारे: एटे: केदा। आपि सिरमा लेका रेदो एना कोओए: चाबाला:। तिसिङ मनएआ सानामाङ रे सोना-सामाड़ोम ते लादि कुल लि: आएआ: दाइते कोए तानि: लेकाए: दुबाकाना।

''ओड़ा: रेआ: ओते साआन दो दाइ ओकोए लेल जादा।'' मनए कुमुआते एओनाकान लेका दाइते: कुलि जा:इआ।

''कोता: रेआ: ओते साआन?'' सोबेन नेते हेनते चाबा काना। नाइआ: इलि आरकि आ'र जुआ इनुङ रेआ: हेओआ कागे चाबओ:आ। आञा: होड़ोमो रेआ: सिंगार

''हां, जल्दी ही आते तो अच्छा होता। छात्रावास में मैंने बताया नहीं है। हाजिरी में पीछे पड़ने से लोग नाखुश होंगे।''

''ओह! उन्हे कहोगे नहीं? इतने दिनों के बाद आए हो कुछ समय के लिए भी नहीं रहोगे? अपने बहनोई का तो तुम इन्तजार करना, नहीं तो तुम्हारे वापस जाने की बात जान जाने पर वह मुझे ही सुनाएंगे।''

''हां उनसे मिलने का तो मेरा भी मन है लेकिन..........।''

मनए अपने बहनोई बुधन के बारे में सोच रहा है। भरपूर जवान आदमी। मां-बाप का एकलौता बेटा। कहते हैं किसी समय उसीका परिवार गांव में सबसे अधिक पूंजीवाला था। मनए के पिता ने जमीन-जायदाद की बात सुनकर ही अपनी बेटी को वहां विवाह में देने की स्वीकृती दी थी। लेकिन वह घर इस समय ऐसा बना हुआ है कि मनए को इसका विश्वास नहीं हो रहा है। मनए का बहनोई एकमात्र पुत्र होने के कारण बड़े ही लाड़-प्यार से पला था। उसने जो भी चाहा, मां-बाप ने लाकर दिया। मिड्ल पास करने के पहले ही घड़ी साईकिल खरीद कर दी। यह सब मिलने के साथ बुधन ने पढ़ाई-लिखाई ढील दी और मेला बाजार इत्यादि का चक्कर मारने लगा। एक वर्ष के अन्दर ही उसने पढ़ना छोड़ दिया। इसके बाद तो उसने अपने सरीखे चार-पांच साथियों को जुटा लिया। मेले-बाजार के रास्ते ही उसने अर्खी पीना और जुआ खेलना सीखा। मां-बाप ने, यह सोचकर कि शादी करने से शायद वह ठीक हो जायगा, उसकी शादी मनए की दीदी के साथ कर दी। लेकिन विबाह के बाद भी बुधन की पहले की आदतें छूटीं नहीं। एक-दो वर्ष के बाद मां-बाप नहीं रहे और अचानक ही घर बार का सारा भार बुधन के सिर पर आ गिरा। पहले से ही शराब पीने का आदी बुधन अब मन माना रहने लगा। अपने मन के काम करने की आदत नहीं रहने के कारण खेती-बाती के काम में ढिलाई होने लगी और घर में धान-चावल बढ़ने की जगह पहले का धन खर्च होने लगा। धीरे-धीरे बुधन के घर में ऋण का प्रवेश होने लगा। ऋण चुकाने का कोई और रास्ता नहीं रह जाने का बुधन ने अपनी पत्नी के सारे गहने एक-एक करके बेच डाले और वह सब भी खत्म होने के बाद अन्त में उसने जमीन बन्धक रखनी शुरू की। तीन वर्षों के अन्दर उसने वह सब भी खत्म कर दिया। आज मनए के सामने सोने गहने से लदकर भेजी गई उसकी दीदी एक भिखारिन की तरह बैठी है।

''घर की जमीन-जायदाद कौन देख रहा है, दीदी?'' मनए स्वप्न से जगते हुए की तरह अपनी बहन से पूछ रहा है।

''कहां का जमीन जायदाद। सारा इधर-उधर हो गया है। इसकी शराब पीने और जूआ खेलने की आदत छूटती ही नहीं है। मेरी देह का सिंगार

पातार कोदोम लेल जाद गेआ। एनाको बेएस लेका तुसिङो काञ पुराओ ला:। मिसा-मिसा दो निर आद गिड़िन गे मोनिञा, मेनदो कोतिङ सेनोगा। नि: लो:गे आपासुलो: मेनतेञ जिमाकाना। ना: दो नेआ को सोबेन जीला: ले एनाङ'' मनएआ: दाइते सुगि पेआजु आ'र आड़ा:-साकाम को हाद चाबाकेआते बिरिद तान लो:ते: मेनजादा।

''काचि दाइम काजि लेकाका:इआ।''

''कोता: काञ काजिआ का:इआ? जेताना: गाआओ:रेचि। चिमिनसालिङ एपेराङ जाना। जागर रे काए: दाड़ि चि ती: चालाओ एटे: केदा। होड़ोमो कोरे ताइकेनरे राटि चिमिनसा लेका आञा: होड़ोमो रे ती उयु: केदा। मिसा-मिसा दोञ मेनेआ एन रोगोद कोतेगे जाआ: एन होन दो हुड़िङ दिन रेगे बाङगाइ: जाना। आञो इमताङाते होड़ोमो बेएस बाङगा:ञा। एन होने: बानचाओ:का मेनतेओ चिमिन लेका ओते कोदो बानदारा काना। मेनदो लाआ: उतार दो निआ: बुलेन हेओआ तेगे लिङ नेका काना। ना: दो नेआको काजिलीरे दोए: मेनेआ ''काम सुकुतान रेदो मार सेनो: मे। आञ जांलेका तेगेञ आसुलेना।''

इमताङगे ओकोए बुलतान-बुलतान दुराङतान लो:ते हिजु: तान लेकाए: आयुम जाना।

झिकि मिकि करेला
टोंगरी तारे बनल सुन्दर डेम
झिकि-मिकि करेला।

''कहाँ का झिकि-मिकि.... हमको साला फेंक दिया इस अंधार गली में.... के है रे..... भाग भडुवा कुकुर हमके सूंघता है..... ए सोमा अइज कने गिया जी.... साला मुफत मिलता है तो हमारा साथ पीने जाता है।....

सेहो देखि
सखि रहल ना जाए रे
सेहो देखि......

बेटा कहाँ जायगा।...... झारखण्ड तो मिला नहीं।..... अरे लेकर के भी क्या करेगा? अब ई जगह रहने के काबिल नहीं है..... अरे घर में केउ है। ए सुगिआ.... ए हो साली हमके गाली देता है। बुधन दोड़ेतान लो: दुआर ताए: तेबा: जादा।

''हापेआ कानेञ ताइना मेनदो का। खूबेञ जुगुतुआ कानाम मेनजादा। नेरे तेंजाम कोड़ा एनाङाआते: तांगि ताना!'' मेनजालो: सुगि दुआरे: नि: केदा आ'र बुधने: ति: आदेर जा:इआ।

''आउ आमचि हाले तेबा:तादा........ दुबमे-दुबमे आलोम बिरिदा। बेएसे

पहनावा तुम देख ही रहे हो। वह सब मैं ठीक से पहन भी नहीं पाई थी। कभी-कभी मुझे मन करता है कि मैं कहीं भागकर लापता हो जाऊं, लेकिन कहां जाऊं? इसी के साथ जीने के लिए मुझे सौंपा गया है। अब तो यह सब सहना ही पड़ेगा।'' मनए की बहन सुगि प्याज और साग इत्यादि काटकर उठते हुए कह रही है।

''क्या तुमने उन्हें कभी कहकर देखा है?''

''मैंने क्या नहीं कहा है? कुछ असर पड़े तब तो। कितनी बार झगड़ा हुआ? बात से हारने पर हाथ चलाने लगा। शरीर भारी रहे के समय तक उसने मुझ पर हाथ गिराया। कभी-कभी सोचती हूँ कि उसी कमजोरी के कारण वह बच्ची कुछ दिन के बाद चल बसी। मैं भी उस समय से ठीक नहीं हूँ। कुछ जमीन तो उस बच्ची को बचाने की कोशिश में भी बन्धक गई है। लेकिन अधिकतर तो इसी की पीने की आदत के कारण हमारी यह हालत हुई है। यह सब कहने पर कहता है ''अगर तुम्हें पसन्द नहीं है तो ठीक है तुम चली जाओ मैं किसी तरह अपना गुजारा चलाऊँगा।''

''उसी समय लगा कि कोई नशे में गीत गाते हुए उधर आ रहा है।''

''झिकिमिकि करेला
टोंगरी तर बनल सुन्दर डेम
झिकिमिकि करेला

''कहां का झिकि, मिकि........ हमको साला फेंक दिया इस अंधार गली में...... के है रे भाग, भडुआ कुकुर हमके सूंघता है..... ए सोमा, आइज कने गिया जी.... साला मुफत मिलता है तो हमारा साथ पीने जाता है.......

''से हो देखि
सखि रहलना जाए रे
से हो देखि.......

बेटा कहां जाएगा? ....झारखण्ड तो मिला नहीं..... अरे लेकर भी क्या करेगा...... अब इ जगह रहने के काबिल नहीं है........ अरे घर में केउ है? ए सुगिया,....... एहो साली हमके गाली देता है।'' बुधन डोलते हुए घर पहुँच रहा हैं।

''चुप रहूँगा, सो नहीं। सोचते हो खूब अच्छे लग रहे हो। यहां तुम्हरा साला तभी से तुम्हारी राह देख रहा है।'' कहती हुई सुगि बुधन को हाथ पकड़कर अन्दर ला रही है।

''अरे, तुम पहुँचे हुए हो.......... बैठो, बैठो, उठना नहीं। कुशल

गे चि तोबे।'' हुड़िङ खोन रेगे बुधन आएआ: बुल सुतिओ: तान लेकाए: आटाकार केदा। सुगि मोद लोटा दा:ए उडुङ ला:। बुधन मेद कोए: आ'बेन जाना आ'र मनए जापा:रे: दुब जाना।

''हे नेरेगे मेना: मेआ मेनेआ: दो लिङ इतुला:, मेनदो ओकोरे मेना: मेआ मेनेआ: दो कालिङ इतुला:।''

''आञो एनका नो: कोतेगे ना: जाकेद लेपेल लेकाओ काञ हिजु: नाम लेद बेना।''

''हे राँची दो इसु पुरा: माराङ साहार। कोता: चिकाना: मेना: मेनेआ: का इतुआन रेदो आद गिड़िआ। दे तेंजाञ कोड़ा दो जा'ना: कोम खिआओ जा:इआ चिका। रेंगे तानाए: जाआ:।'' मेन जालो: बुधने: बिरिद जाना।

''का ताबु आबेन दुब हानताड़ा बेन आञ नाआ: गेञ हिजु: रुआड़ा:।'' मेन जालो: बुधने: सेन एटे: जादा।

''एला बोनाइ नेआ दो चाना:म सेणा केदा। नामताङ कोतेम ताना?''

जेताते का, ने नाणे: तेगे। इसु दिन रेम हिजु:आ काना। मोद पाइटि आरकि रेओ मिसाते लाङ नू लेआ।''

नामताङ कोता: रेआ: आरकि। ने: गे माण्डि इसिनो: ताना। से रेओ आञ एनकाना: को आउरि गेञ हेओआएआ, आ'र आमदो खूबेम ठीकिआकान लेका गेञ आटाकार जादा।''

''पुरा: दो का मोद चोकोए: रेओ। एटा: कोरे कामा: रेओ आञ लो: दो दुब सांगि लेका बाइओ:आ जाआ:।''

''एना बा'रि दो मोदचोकोए:ओ आञ दो काञ दाड़िआ गेआ आ'र ने:गे नेरे माण्डिओ इसिनो: तान लेकाञ टोओर जादा। नेआगे जाआ:लाङ सातेआ: चि?''

''माण्डि दो जाओ गेबु जोमजादा। तिसिङ सोंजोकोम हिजु:आ कानाञ मेन जादा होनाङ। आमा: साए-साए तेरेओञ बोसाओ:आ जाआ:ञ मेन जादा।''

''नामिनाङ दो बोनाइ आलोम होसोड़ोञा। आञ का रेओ बेगार नू तेदो आमा: दिन का सेनो: ताना।''

''ओकोएआ: काजितेम पातिआ ताना हाले। कोरेञ बोसाताना रो'ज। मार आमा: दाइ कुलिमे रो'जोए: ओमाञ तानाचि।''

''आञा: दाइ चाना:ञ कुलिआ? आमगे काजि लेम।''

है न? कुछ ही देर में बुधन को लगा कि उसका नशा छूट रहा है। सुगि ने लोटे से पानी निकाला। बुधन ने आंख-कान धोए और मनए के पास बैठ गया।

"हां यही हो, इसका पता तो हमें था लेकिन कहां रहते हो इसका पता हमें नहीं था।"

"मैं भी इन्हीं कारणों से आप लोगों से अब तक नहीं मिल पाया था।"

"हाँ, राँची तो बहुत ही बड़ा शहर है। कहां क्या है इसका पता न होने पर तो आदमी खो जाता है।........ मेरे साले साहब को कुछ खिला रही हो या नहीं? उसे भूख लग रही होगी।" कहते हुए बुधन उठ गया।

"तुम दोनों बैठते रहो, मैं अभी वापस आ रहा हूँ।" बुधन चलने को तैयार है।

"बहनोईजी, यह आप क्या कर रहे हैं?" इस समय आप कहां जा रहे हैं?

"कहीं नहीं, यही नजदीक ही बहुत दिनों के बाद आए हो। कुछ नहीं तो एक पैंटी दारु ही हम एक साथ पी लेते हैं।"

"इस समय कहां का दारु। अब खाना तैयार होने ही वाला है। वैसे भी मुझे उन चीजों की अभी आदत नहीं हुई है और मुझे लगता है कि आपने मन भर चढ़ा लिया है।"

"अधिक नहीं, थोड़ा ही पियो। कहीं दूसरी जगह न भी पियो, लेकिन हमारे यहां साथ देने की तरह पीने से कोई शायद हर्ज नहीं है।"

"वह तो मैं थोड़ा भी नहीं पी सकता और मुझे लगता है कि यहां अब खाना भी तैयार होने जा रहा है। हम इसीसे सन्तोष करें।"

"खाना तो हम रोज ही खाते हैं। मैं सोच रहा था कि तुम आज संयोग से आए हुए हो सोच रहा था कि तुम्हारे साथ के बहाने मुझे भी पीने को मिलेगा।"

"इतना झूठ न कहिए, बहनोईजी! मेरे नहीं रहने पर भी आपके दिन बिना पिए नहीं जाते।"

"किसकी बात पर जा रहे हो भाई! मुझे रोज कहां मिलता है? अपनी बहन को पूछो, क्या वह मुझे रोज देती है?"

"अपनी बहन से क्या पूछुंगा। आप ही कहिए।"

''हे इमिनाङ दो ओकोए काए: नू ताना। गोटा सिंगि कामि को:आते मोद पाइटिञ नू ताना। एनाओ चिम मानाजा:ञा।''

''माना दो आम ओकोए माना दाड़िआ मेआ। आमेम आरजाओ जादा आमगेम खारचा जादा। एटा: नि:आम कुमबुडु तान जुमबुड़ि तान रेचा।''

''आछा मार हों इमिनाङ गे काजिआञ मे। नेआ बारे रेदो इमिनाङ गेलाङ जागारा। ना: दो एटागा: को लाङ जागार को:आ।''

''का, बेएसेआ: कोगे लाङ जागार तान लेकाञ आटाकारजादा। चि कोता: कोञ ओणा जाद रेदो मार.......।''

''का, काम ओणा कादा, माजा गेम जागाराञ ताना।''

''ने: नेआ गेदाङ बालाए दो बोनाइ। टोओर जाद रेओम काजि रिकान ताना आ'र एनकातेगे आबेना: ने हालात होबाकाना।''

''होका ताबेन, चिमिन एनकाना: कोबेन कापाजिआ। माण्डि इसिन जाना। ने आबङेन बेन।'' सुगि बुधन लोटा दा:ए ओमाइ ताना।

''आलिङ-आलिङ रे कालिङ कापाजि रे ओकोए लो: लिङ कापाजिआ काचि बोनाइ?'' मनए आबुङेन बिरिद तान लो:ते मेन जादा।

''मार जां लेकागे ताबु।'' सुगि बोकोते कोड़ा जापा: रे गिउ:गान गे: टोओर जादा।

''निमिनाङाते ओड़ो: पुरा: चिमिनाङेम नाम ताना। होस्टेल रे दो नाआ: नेआ तेओ एदकाले जोम ताना, एना दो मुण्डिगे बानो:।''

''कोता हाले, आले चि आपे दिकु कोलो: ले जुड़िओ:आ। आपे हाई-जिलु दो....। आले दो आड़ा: साकामो काले बोसा ताना।'' बुधन मेन जादा।

''कोता: रेआ: हाई आर जिलु? सोबेन रेंगे: ओड़ा: को रेन होन को गेआ। ओम पुराओ लेरे चि।''

मनए आ'र बुधन होस्टेल आ'र कॉलेज रेआ: किन जागार ताना, सुगि जिनगानि रेआ: बारे रे: उडु: ताना। उडु: तानाए: आए:ओ होनाङ बोकोञ कोड़ा लेकागे इसुकुल जान रेदो निमताङ होनाङ ने गोणाओड़ा: लेकानता: बादालारे ओको एटा: ता: रे दाङ मेना:इआ। सुगि आएआ: होन दिपिलिरा: कोए: उडु: ताना। टोला पाड़ा रेन होनकोलो: आए:ओ इसुकुल रेको भारति लि:आ। मोद सिरमा लेका जाआ: इसुकुल रे: ताइकेना। टीकि

हां, उतना कौन नहीं पीता है? दिन भर काम करने के बाद एक पैंटी पीता हूँ। क्या वह भी मुझे मना कर रहे हो?''

''मना? आपको कौन कर सकता है? आप कमा रहे हैं, आप खर्च कर रहे हैं। किसी दूसरे की चोरी चकारी करते होते तब न।''

''अच्छा, मैं मान गया, मुझे इतना नहीं सुनाओ। इस सम्बन्ध में हम इतनी ही बात करेंगे। अब हम दूसरी बातें करेंगे।''

''नहीं, मुझे तो लगता है कि हम अच्छी ही बातें कर रहे हैं। या कुछ बुरा कह रहा हूँ तो....।''

''नहीं बुरा नहीं कह रहे हो। मुझे ठीक ही कह रहे हो।''

''यही न परेशानी है, बहनोईजी! जानते हुए भी आप खुद को सुनवा रहे हैं और इसी से आपकी यह हालत हुई है।''

''अब बस करो, कब तक ऐसा विवाद करते रहोगे। खाना तैयार हो गया। लो हाथ धोओ।'' सुगि बुधन को लोटे में पानी दे रही है।

''हम आपस में विवाद नहीं करेंगे तो किसके साथ करेंगे, है न बहनोईजी?'' मनए हाथ धोने के लिए उठते हुए कहता है।

''हां, हम आपस ही में विवाद कर रहे हैं, पराये के साथ नहीं।'' बुधन ने हाँ मिला दी और दोनों खाने को बैठ गए।

''तो, रूखा-सूखा ही....।'' सुगि अपने भाई के सामने लज्जा का अनुभव कर रही है।

''इससे अच्छा और क्या चाहते हो। छात्रवास में, इससे भी खराब खाना मिलता है। तुम्हें इसका पता नहीं है।''

''कहां भाई, तुम दिकुओं के साथ हमारी क्या तुलना हो सकती है। तुम तो मांस-मछली...। हमें तो साग-पात तक नहीं मिलता।'' बुधन कहता है।

''कहां का मांस-मछली? सभी गरीब घरों से ही आते है। खर्च पूरा कर सकें तब तो।''

मनए और बुधन कालेज की बातें कर रहे हैं और सुगि अपनी जिन्दगी के बारे में सोच रही है। सोच रही है कि अगर वह भी अपने भाई की तरह पढ़ पाती तो इस समय इस गोहार घर के बदले कहीं दूसरी जगह होती। सुगि को अपने बचपन की बातें याद आ रही है। टोले-महल्ले की लड़कियों के साथ उसे भी स्कूल में दे दिया गया था। वह करीब एक साल तक स्कूल में रही।

किताब पेंसिल को साब हेओआ जाद लो: गे होन (मनए) हेबे आ'र मेरोम गुपि बाआनाते इसुकुल को होका रिका कि:आ आ'र एन होकागे: होका उतार जाना। तायोमतेदो बोकोते कोड़ा पाड़ाओ जाना। एना आए: पाड़ाओ जाना: गे: हिसाब केदा आ'र आए: सा:ते चिमिनाङ होबा जाना सुगि मनए: राबालो:आ: गे उडु: जाना। एन होन सोमाए रेआ: उडु: नापाणे: ताइगिड़ि जाना। ने सोमाए रेन हारा ताना मनएआएआ: सानामाङ रे ओड़ो:गे माराङा काने: लेल जा:इचि सुगि मोद खोन नांगेन आपान दुकुए: रिड़िङ गिड़ि केदा। नेआए: रिड़िङ केदा चि चिलका ते पुंजि पाटिते पेरे:आ कान ओड़ा: दुआर उतुणु चाबा जाना, चिलकाते बुधन लांडिआते ओड़ो: लांडिआए: बाइ इदि जाना आ'र आएआ: जुआ इनुङ आ'र आरकि रेआ: हेओआ का बादाला जान गेआ। चिलकाते आएआ: किसाना: लेसेड़ाइ ते आकिना: एनेटे: होन बांगाइ: जाना; चिलकाते आए: मिसा हाका गो:एन राटि: उडुङ लेना।

"नेता: दो बोनाइ बेन हिजु: उतारा काना चि हुड़िङ दिन नागेन कामि उदाम लेका बेन हिजु:आकाना।" मनए बुधने: कुलि जा:इआ।

"जेता लेकारेओ, आपाना: हातु दिसुम चि बागेओ:आ? नेता: दो जांलेकाते साब दाड़िन बाआरि। केटे: नो: को: कालिङ मेने लेका ते लिङ हिजु:आ काना। मिसा एन दुबबाड़ा काना: को राड़ा रुआड़ा जान रेगे लिङ बाइ रुआड़ा ओ:आ।" बुधन केटे:आन गे काजि रुआड़ा केदा।

रेकेसा राचा: केआते चि बोनाइ मोटोनेम मोने केदा? आञा: जी रेदो पातिआ का हिजु: ताना। गोटा सिंगि रे गेल टाका लेकाम कामीआ आ'र रेकेसा भाड़ा एमान ओम केआते तारा लेका सारेगो:आ। एनातेओ लाआ: उतार सा: दो ओड़ा: ते आउरि तेबा: एतेलो: गे बाटिओड़ा: रेम बागे तुका:। सारे: बाडुइ: कोरा: चाउलि, दालि, सुनुम बुलुङ। आयारते नागेन कोतागाते बामचाओ:आ? आञ दो जे रेकेसा चालाओ तानेञ लेलकोआ सोबेन उसु:तान गेञ लेल कोआ।"

"का, नेआ दो एटागा: को आउरि मुण्डिओ: सुमुङ लाङ कामि ताना। मापाराङा: दो आउरि नामो: बाआरि नेआ रेलाङ साब दाड़िआ काना। मिसा पोंका नाम जान लो: गे नेआ कामि लाङ होकाएआ आ'र नावा धान्दा लाङ साबेआ।" बुधन हिजु: तान सोमाए पारचिआन गे लेल जाद लेकाए: जागार केदा।

"नावा धानदा मेन लेरेगे चि बोनाइ होबाओ:आ। ने सोमाए जा'न कामि रे सिदाआते ती आउरि हिरिगो: सुमुङ जेताओ: का नामो:आ। चिमिनाङ-चिमिनाङ ट्रेनिंग नाम ताद को राटि कामि काको नाम जादा।"

"आह, एनाको सोबेन माणि-माणिते लाङ जुगुतुइआ। हाटिया रे कारखाना रे कामि तान होड़ो: को लो: आञा: लेपेल मेना:। मिसा काजिञ सोआब का।

ठीक किताब–पैन्सिल पकड़ने की आदत हो ही रही थी कि बच्चा (मनए को) खिलाने और बकरी चराने के बहाने उसे स्कूल से छुड़ा लिया गया और कब से उसने स्कूल छोड़ दिया सो सदा के लिए छोड़ दिया। बाद में उसका भाई पढ़ने लगा। भाई का पढ़ना उसने अपना ही पढ़ना समझ लिया और अपनी ओर से उसने मनए का रास्ता हल्का करने की यथाशक्ति कोशिश की। बचपन का उनका आपसी प्यार सदा के लिए रह गया। इस समय युवा प्राप्त मनए को अपने सामने एक पूर्ण वयस्क की तरह देखकर सुगि कुछ समय के लिए अपना सारा दुःख भूल गई। वह यह भूल गई कि किस तरह धन–दौलत से भरा घर बिलकुल उजड़ गया। किस तरह बुधन आलसी से महा आलसी बन गया और उसकी जुआ खेलने और अखीं पीने की आदत छूटी ही नहीं किस तरह उसके आदमी की ला परवाही से उनकी पहली सन्तान चल बसी। किस तरह वह एक बार फांसी लगाकर मरने कोभी निकल गई थी।

''बहनोईजी, यहां आप लोग सदा के लिए हैं या कुछ ही दिनों के लिए आए हुए हैं?'' मनए बुधन को पूछ रहा है।

''कुछ भी हो, अपना ग्राम–देश कभी छूटता है? यहां तो हम अपना पेट टिकाने के लिए आए हुए हैं। हमारी हालत जरा सुधर ले, इसी उद्देश्य से हम यहां आए हुए है। एक बार वह बन्धक जमीन छूट जाए तो हम फिर से बन जाएंगे।'' बुधन ने बड़े आत्म–विश्वास के साथ कहा।

''क्या आप रिक्शा चलाकर मोटे होने की बात सोच रहे हैं? मेरे मन में विश्वास नहीं होता। दिन भर में आप दस रुपये कमाइएगा और रिक्शा भाड़ा इत्यादि देने के बाद करीब आधा बचा रहेगा। उसमें भी अधिकांश तो आप घर वापस आने के पहले ही भट्टीघर में छोड़ आइएगा। बचे–खुके से चावल–दाल तेल–नमक। आगे के लिए कहां से बचेगा? मैं तो जितने रिक्शावालों को देखता हूँ दुबला–पतला ही देखता हूँ।''

''नहीं, यह काम हम कोई दूसरा काम नहीं मिलने तक ही कर रहे हैं। एक बार कोई रास्ता मिलते ही हम यह काम छोड़ देंगे और हम नया धन्धा पकड़ेंगे।'' बुधन ने ऐसे कहा मानों वह अपना भविष्य साफ देख रहा है।

''नया धन्धा कहने मात्र से तो होता नहीं। इस समय पहले से हाथ की सफाई न रहने से कोई काम नहीं मिलता। कितने ट्रेनिंग पाए लोगों तक को काम मिल नहीं रहा है।

''आह, वह सब हम धीरे–धीरे ठीक कर लेंगे। हटिया कारखाने में काम करने वाले लोगों के साथ हमारा परिचय है। एक बार अन्दर

एनाआते दो बार सिरमा रेगे नाआ: जाकेद बागाड़ाओआ काना: को सोबेन लाङ बाइरूआड़ाएआ।''

''आम लेकान को चि बोनाइ एनता:रे। एनता: रेदो आबुआ: होड़ो कोदो हासा उर बेड़ा तान कुलि काबाड़ि कोगे पुरा:ञ लेल कोआ। आम दो मोद बार सिरमा रे बाइ रुआड़ाओ:म काजि ताना। आञ दो कारखाना जापा:-जापा:ते बुसु:ते, ताड़ साकाम कोते दाबाकान जुरु-जुपु ओड़ा: कोरे इसु दिनाआते एनका गेञ लेल कोआ।''

''एना दो हे दो हे'गे। मेन्दो आको दो आको दाङ, आलाङ दो आलाङ। मिसा काजि एन रेलाङ बोलो को:का। एनाते दो तायोम सा: हेता रुआड़ा गे का।''

''आकिन जापा:रे दुबाकान सुगि आयुम ताना। आएआ: किसानते नेकागे जाओगे: मेनेआ– मिसा होनाङ........ मिसा होनाङ।'' मेनदो नाआ: जाकेद आकिन रेंगे: – हुआङ रेकिन जिलाद हाड़ागु तान गेआ।

आऊं तो सही। इसके बाद तो एक ही दो बर्षो में अब तक बिगड़ा सारा हम ठीक कर लेंगे।

''आपके जैसे लोगों को वहां कौन पूछेगा? वहां अपने लोगों को तो मैं सिर्फ मिट्टी कोड़ते और कुली का काम करते हुए ही देखता हूँ। आप एक दो वर्ष में हालत सुधारने की बात कर रहे हैं। मैं तो कारखाने के किनारे किनारे पुआल से, ताड़-पत्तियों से छाए-छपरियों से रहने वाले लोगों को बहुत दिनों से वैसा ही देख रहा हूँ।''

''सो तो बात सही है। लेकिन उन लोगों की बात छोड़िए हम अलग हैं। एक बार अन्दर आएं तो सही। इसके बाद तो पीछे देखने का नाम नहीं लेंगे।''

उनके पास बैठी हुई सुगि यह सब सुन रही है। उसका आदमी हमेशा यही कहता है— ''काश, एक बार.....काश, एक बार....।'' लेकिन अब तक वे भूख के गड्ढे में फिसलते ही जा रहे हैं।

एन दिलाङ होरा रे

बांदापिड़ि रेन बुरुहातु आएआ: बारिआ होन किन लो: एंगा आपु ओड़ा:ते: सेनो: ताना। बोओ: रे मोयोद हुड़िङ लेकान पोटोम, हेबेरे मोयोद होन, आ'र ओड़ो: मोयोद होने: सुतु: ता:इआ। जेटे सिंगि रेआ: सोमाए। होरा ओड़ो: बार गाउदि लेका सारे:आ कान गेआ। होन किन खाने 'दा:गा, माण्डिगा' किन मेन कातेएआ। हुड़िङ दूर सेन के चि ओकोरे गे उमबुल नो: दारु को नामेआ एन रेगे को रूडुना। एनका गे होरा जापा: रेआ: मिआद बाड़े दारु सुबारेको रुडुन ताना। हेबे रेन कुड़ि होन दोए: नुनु ताना आ'र कोड़ा होन दो एंगाते पोटोमाआते हुड़िङ लेका ताबेने: चु:आ का:इआ। इमताङ्गे मिआद होड़ो साइकाल ते: हिजु: लेना। बाड़े दारु तेबा: लेद चि साइकाल माणि नो: जाना। ने: गे: तिंगुइआ मेनेगे आटाकार लेना, मेनदो काए: तिंगुन जान गेआ। इमिन रेओ एन होड़ो खाने-खाने बुरुहातु मुलिगे: हेताकेन, हेताकेना। बुरुहातुओ ने होड़ो कोता:रे लेलाकाइ: लेकागेञ ठोरेआ मेनते जी रे: मेन जादा। एन जालो: गे एन होड़ो साइकाले: रुआड़ा केदा, आ'र बाड़े सुबाते: हिजु: लेना। चिना:जा:इलो:गे बुरुहातु होन नुनुइ होका कि:आ। एन होड़ो नाणेगाते: लेल कि:आ, इनि: दो मनु मासटार। बुरुहातु जोआर नांगेने: बिरिद जाना।

"चि ताबु आपे चि?" मनु मासटार साइकालते हाड़ागुन तानलो:ए कुलि ताना।

"हे आले गे।..... बेएस गेआपे चि तोबे।" बुरुहातुए: मेनकेदा।

"हे जां लेका, जां लेका दोले बेएस गेआ।..... आपे दो?" मनु मासटार कुलि रुआड़ा ताना।

"आलेओ बेएस गे।...... मार बाबु कुमाम जोआर नोगाइमे।" बुरु हातु सुतु: रेन होन पांडुइ: मेताइ ताना। पांडुओ मोद होनाआते जोआर जागार इतु ताद लेकाते: आचु ताआबेन जाना आ'र मनु मासटारे: जोआरा:इआ। मनु मासटारो 'आञ लेकागे हाड़ामाकान ताइनो:मे। मेन जालो: एन होने: हामबुद पानति कि:आ, आ'र बोओ:ए सिपि नो: कि:आ।

उस दिन रास्ते में

बन्दापिड़ि की नंदि (बुरुहतु) अपने दो बच्चों के साथ अपने नैहर जा रही है। सिर पर एक छोटीसी पोटली, एक बच्ची गोद में, और एक बच्चा उसके आगे-आगे चल रहा है। गर्मी का दिन। रास्ता अभी और करीब दो मील बाकी है। बच्चे बार-बार 'भूख लग रही है, प्यास लग रही है' यही रट लगाए हुए हैं। थोड़ी दूर जाने के बाद जहां थोड़ा छायादार पेड़ मिलता है वे वहीं रूकते हैं। इसी तरह वे रास्ते के किनारे के एक बड़ पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे। गोद की बच्ची दूध पी रही है, और बच्चे को पोटली से थोड़ा चिउड़ा निकाल कर दी हुई है। उसी समय एक आदमी साईकल पर चढ़कर आया। पेड़ तक पहुँचने पर साइकिल कुछ धीमी हुई और लगा की वह आदमी साइकिल खड़ी करने वाला ही है, लेकिन वह रूका नहीं। तब भी वह आदमी बार-बार बुरुहतु की ओर ही पीछे उलट कर देख रहा था। बुरुहतु भी मन में सोच रही है कि 'इस आदमी को मैंने कही देखा है'। तभी उस आदमी ने साइकिल घुमाई और बड़ पेड़ के नीचे वापस आया। उस आदमी को पहचानते ही बुरुहतु ने बच्चे को दूध पिलाना बंद किया। उसने आदमी को नजदीक से देखा वह तो मनु मास्टर थे। बुरुहतु जोहार करने के लिये उठी।

''अरे आप लोग हैं? मनु मास्टर साइकिल से उतरते हुए पूछ रहे हैं।''

''हाँ हम ही हैं............ अच्छे तो हैं?'' बुरुहतु ने पूछा।

''हाँ किसी तरह, अच्छे ही हैं। ......और आप लोग?'' मनु मास्टर पूछ रहे हैं।

''हम भी अच्छे ही ने। .....मामा को प्रणाम करो, बेटे।'' बुरुहतु अपने बेटे, पाण्डु से कह रही है। पाण्डु भी, बचपन से लोगों के साथ मिलने जुलने की आदत होने के कारण, तुरन्त बात मान गया और उसने मनु मास्टर को प्रणाम किया। मनु मास्टर ने 'मेरी ही तरह दीर्घायु बनो।' कहते हुए उस बच्चे को प्यार से अपनी ओर खींचा और उसका सिर छुआ।

''एदका हाड़ामेम बाइन ताना।'' बुरुहातु नेसा: हेनसा:ए लेल बेड़ा केना, आरे: मेताइ ताना।

''काचिम लेल जा:ञा बोओ: कोञ पाण्डु चाबाओ: ताना।'' मनु मासटार बोओ: चापुन तान लो: बुरुहातु मुलि: मेद केदा।

''बोओ: पाण्डु: ताना: इमिनाङ गेम उडु: तान रेदो होनाङ निमिन लो: दो काचिम बोओरेन जाना होनाङ।''

''ओकोए लो:ञ आड़ांदिना। जेताए काको सुकुआञ ताना, गेल सिरमा सिदारे मिआद नि:लो: आड़ांदिनेञ जोका केना, मेनदो इनिओ:ए: बागेन जाना।''

''हे ना: दोड़ो: एनकागे काजिओ:आ।''

गेल सिरमा सिदा रेआ: काजि। ने सोमाए बाड़े सुबा रे मानु मासटार सानामाङ रे दुबाकान होनान एंगा बुरुहातु दो नांदि गे: ताइकेना। नांदि एने:गे हाइ इसुकुल चाबा केआते ओड़ा:ते हिजु: रुआड़ा कान ताइकेना। इमताङ मनु पाआड़ाओ रेआ: ट्रेनिङ नामकेआते नांदिताकोआ: हातु जापा: रेआ: मिडिल इसुकुल रे नावा-नावागे: बा'लिआकान ताइकेना। इसुकुल रेआ: मानजुरि का होबाकान ताइकेना; आ'र एना मानजुरि रिकाए नागेन नावा ओड़ा: बाइरेआ: दारकार ताइकेना। नंदिआ: आपुते एन आस-पास रेन नुतुमान होड़ो कोरे: ताइकेना आ'र एन लेकाते पाड़ाओ ओड़ा: चिलकाते बाइओगा, ओकोतागाते टाका पाएसा नामोगा, चिलकाते होनको सांगिओगा मेनते मनु मासटार आए:ता: सेनो:काते ताने: ताइकेना। नंदि लो: एटे: उतार लेपेल दो एनका तेगे होबा लेना। मुसिङ मनु मासाटार नंदिआ: आपुते लो: जापागार मेनते: हिजु:आकान ताइकेना। मेनदो एन हाड़ाम सिउ: कामि को लेललेका ओड़ागाते: उडुङाकान ताइकेना। ओड़ा:रे नंदि आ'र एंगाते बाआरि किङ ताइकेना। मनु मासटार बुड़िआ लो: दो सिदाआतेगे लेपेलाकाने: ताइकेना। जोआर जागार होबाजान चि बुड़िआ मनु मासटार मांचि: बिला:इआ आ'र ''मार माइ मासटार दा:को जाआ:ए तेताङ तान रेदो।'' मेन जालो: नंदि: रा: कि:आ।

''का गा काञ तेताङ ताना। एना को ताइनो:का।'' मनु मासटार काजि रुआड़ा केदा।

मेनदो एन जालो: नंदि मिआद गिलास ते दा:ए आउ उताराकाद ताइकेना आ'र मनु मासटार 'काञा:' मेनते काए: काजि दाड़ि जाना।

''आमदो नंदि चिमताङेम हिजु: रुआड़ा लेना।'' दा: तेला जालो: मनु मासटार कुलि कि:आ। ''होला-होला गे दादा।...... आमदो चिमताङाते कामिम साबा कादा।'' नंदि मनु मासटारे: कुलि कि:आ।

''बहुत बुढ़े बनते हो।'' बुरुहतु ने इधर उधर देखकर कहा।

''नहीं देख रही हो? सिर के बाल सफेद हो चले।'' ''मनु मास्टर ने अपना सिर छूते हुए बुरुहतु की ओर देखा।''

''सिर के बाल सफेद होने की उतनी ही चिन्ता थी तो तुम ने अब तक शादी कर ली होती।''

''किसके साथ सादी करूंगा? कोई मुझे पसन्द नहीं करता दस साल पहले मैंने एक के साथ शादी करने की सोची थी लेकिन उसने भी मेरा साथ छोड़ दिया।''

''हाँ, अब तो वैसा ही का जायेगा।''

दस साल पहले की बात इस समय पेड़ के नीचे मनु मास्टर के सामने बैठी हुई बच्चों की मां बुरुहतु उस समय नंदि थी। नन्दि हाईस्कूल समाप्त करके घर आई हुई थी। उस समय मनु पढ़ाने की ट्रेनिंग पास कर नन्दि के गांव के पास के मिडिल स्कूल में नया–नया बहाल हुआ था। स्कुल की मन्जूरी नहीं हुई थी, और उसे मन्जूर कराने के लिये एक नया मकान बनाने की जरूरत थी। नन्दि के पिताजी उस आस–पास के नामी लोगों में थे। और इसलिए, स्कूलघर कैसे बनेगा, रूपया पैसा कहां से मिलेगा, कैसे बच्चों की संख्या बढ़ेगी इन बातों को लेकर मनु मास्टर बार–बार उनके पास जाते थे। नन्दि के साथ उनकी, भेंट इसी तरह हुई थी। एक दिन मनु मास्टर नन्दि के पिताजी के साथ बात करने के लिये आये हुए थे। लेकिन बूढ़ा खेत का काम देखने के लिये घर से बाहर निकला हुआ था। घर में सिर्फ नन्दि और उसकी मां थी। मनु मास्टर का बुढ़िया से पहले से ही परिचय था। प्रारंभिक औपचारिकता के बाद बुढ़िया ने मनु मास्टर को बैठने के लिये एक मचिया दी और 'बेटी देखो मास्टरजी को अगर प्यास लग रही हो तो......' कहते हुए उसने नन्दि को बुलाया।

''नहीं, मुझे प्यास नहीं लगी है। वह सब रहने दीजिये।'' मनु मास्टर ने जवाब दिया।

लेकिन तब तक नन्दि एक गिलास में पानी ला चुकी थी और मनु मास्टर 'नहीं' न कर सके।

''नन्दि, तुम कब वापस आई। ग्लास का पानी लेते हुए मनु मास्टर ने नन्दि से पूछा। हाल ही में दादा।..... आपने कब से काम पकड़ा है?'' नन्दि ने मनुमास्टर से पूछा।

"आञो होला–होला गे। नेआ नावा इसुकुल ताना: आ'र नेआ मांजुरि रिका नांगेन इसुगे कामिआ: को मेना:। ने काजि कामि कोरे आपे ओड़ा:रेन हाड़ाम पुरा:गे: देंगा जादा। एन लेका कोतेगे आए: लो: जापागार लेका गेञ हिजु:लेना। कामि दो होनाङ इसुगे मेना: आ'र आमोम देंगा दाड़िआ लेआ। फुरसाइतिओ: रेदोम आयारते पाड़ाओ आउरि साब रुआड़ाए जाकेद आलेलो: कामि नो: को:मे।"

"आञ चाना:ञ देंगा दाड़िआ पेआ, दादा। पाड़ाओ दो काञ इतुआना, पाआड़ाओ दो ओड़ो: चिमिन हामबाला।"

"चाना: हामबाला? लातार कोरेन कोदोम दाड़िआ कोगेआ।" बुड़िआ पाटि गालाङ तान लो: आकिना: जागारे: आयुम ताना।

"…. सेएरेओ दाङ नेता: इपाए: रेम गेआ।" पाड़ाओ को सोबेनेम रिड़िङ उतार जादा मनु मासटार आ'र नंदि ताकिन जापा: रे दुबाकान बुड़िआए: मेनकेदा।

"आमदोगा राबाल गेम काजि जादा। होनको पाआड़ाओ इसु हामबाल कामि।" नंदि मेन केदा।

"हे कामि दो हामबाल कामि गे, मेनदो आमदोम दाड़िआ: मेने गेञ ठोओरेआ।" मनु मासटार नंदि: उसुकुर नो: जा:इआ।

"एला दादा आञ दो ट्रेनिङो काञ नामाकादा।"

"एह, ट्रेनिङ बानो: चाना:, होनको पाआड़ाओ रे जी मेना: रे कामि तान कामि तान गे ट्रेनिङेम नामेआ।" मनु मासटार आएआ: काजि काए: बागे जाद गेआ।

"हे होनकोलो: ताइन दो एदका सुकुञा। पाआड़ाओ दो टोगो: चा का टोगो:। आम नामिनाङेम जो'र जाद लेकाते नाआ: बाआरि दो जांलेका–जांलेकाञ हेआम ताना। टुण्डु जागार दो हाड़ाम जागार लिआते एनाङेञ ओम रुआड़ा मेआ।" नंदि काजि: टुण्डु केदा। मनु मासटार रासिका जीआनगे: बिरिद जाना आ'र तोबे दोगाञ सेन रुआड़ा जादा, हाड़ाम दो कोता: रे टेकाद जान गेआ। हिजु: लेनाए: मेनेआ: उदुबाइपे हेइ; मेन जाद लो: मनु मासटार साइकाले: साब केदा आ'रे: सेनो: जाना।

होरा जापा:रे मिआद गुरि: दुबि रे मिआद सांडि सिम कोकोड़ोचो: ताने: ताइकेना आ'र एन जापा: रेगे एंगा सिम आएआ: होनको चाराए: पासका को तान ताइकेना।

एन तायोम ते, चिलका चि मनु मासटारे: आसराए: तान ताइकेना नंदि पाआड़ाओ देंगाए: मोने केदा। मोदरे कामितान लेपेलतान लो: आकिना: सोंगोति हारा इदि जान गेआ। नेका तेओ नंदिआ: आपुते लो: लेपेल चिपिना ताइकेन लेकाते मनु मासटार नंदि

''हाल ही में। यह नया स्कूल हैं, और इसे मन्जूरी कराने के लिये बहुत सा काम बाकी है। इन बातों में तुम्हारे पिताजी हमारी बहुत मदद कर रहे हैं। इन्हीं बातों को लेकर मैं उनसे मिलने के लिये आया था। काम तो बहुत ही है और तुम भी हमें मदद कर सकती हो। अगर तुम्हें फुर्सत हो तो, आगे की पढ़ाई शुरु करने के पहले तुम हमारे साथ काम करो।''

''मैं क्या मदद कर सकती हूँ, दादा! मुझे पढ़ना तो नहीं आता है, पढ़ाना तो और ही कितना भारी काम होगा।''

''कठिन क्या होगा? निचले दर्जे के बच्चों को तो पढ़ा हो सकोगी।'' बुढ़िया चटाई बनाते हुए उनकी बातें सुन रही थी।

''वैसे भी तो यहां तुम बेकार पड़ी हो। पढ़ना लिखना भी तुम भूल रही हो।'' मनु मास्टर और नन्दि के पास बैठी हुई बुढ़िया ने कहा।

''तुम तो, मां, आसानी से कह देती हो। बच्चों को पढ़ाना बहुत भारी काम है।'' नन्दि ने कहा।

''हां काम तो भारी काम ही है लेकिन तुम कर सकोगी, ऐसा मुझे लगता है।'' मनु मास्टर नन्दि को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

''दादा, मैंने तो ट्रेनिंग भी नहीं ली है।''

''ट्रेनिंग की क्या बात कर रही हो, बच्चों को पढ़ाने में मन होने पर तुम काम करते करते ही ट्रेनिंग पा जाओगी।'' मनु मास्टर अपना आग्रह नहीं छोड़ रहे हैं।

''हां, बच्चों के साथ रहना मुझे बहुत पसन्द है पढ़ाई हो या न हो, बहुत जोर लगा रहे हैं इसलिये मैं अभी आधे मन से हां कर रही हूँ अन्तिम निर्णय तो बूढ़े के साथ बात करने के बाद ही मैं आपको दूंगी।'' कहकर नन्दि ने बात खत्म की। मनु मास्टर प्रसन्न मन से उठे और 'तब तो चल रहा हूँ बूढ़ा तो कहीं अटक गया लगता है। उनको बता दीजियेगा कि मैं आया था।' कहते हुए मनु मास्टर ने साइकिल पकड़ी और निकल गये।

रास्ते के किनारे गोबर के ढेर पर एक मुर्गी बांग दे रहा था और उसके पास ही एक मुर्गी अपने बच्चों के लिये पैरों से चारा ढूंढ रही थी।

उसके बाद, जैसा कि मनु मास्टर आशा करते थे, नंदि ने पढ़ाने की इच्छा व्यक्त की। एक साथ काम करते हुए, एक दूसरे से मिलते जुलते हुए उनकी मित्रता बढ़ती ही गई। ऐसे भी नन्दि के पिताजी के साथ परिचय रहने के

ताकोआ: ओड़ा: ते: हिजु: सेनो: तान ताइकेना। नंदि लो: सोंगोतिओ: तान लो: एना हिजु: सेनो: ओड़ो:गे हारा जाना।

एन सिरमागे नंदि ताको बा तान रे मनु मासाटारे: रा: कुल जाना। ने'ग होराते बोंगा बुरु ओड़ो: जोम नू जानाओ सिरमा लेका होबा जान गेआ, मेनदो बुरुहातु आकाड़ा रे एन सिरमा लेका सुसुन जेता इमताङ का होबा लेना। गापा तेरे डाड़ि दा:रे चा पांचाड़ि दिरि ता: रे होड़ो को 'बापारि, नंदिआ: खेरकाइ' मेनेआ: गेको काजिआ। गापा तेरे नंदि आ'र मनु मासटार इदाङ रेगे इसुकुल किन तेबा: ला:। सांगिनाआ तेगे किन लापान्दा दारोम जाना। "नाका मेनेआ: दो काञ ठोओर लेद मेआ।" सारे: बाडुइ: बुरुहातु होड़ो को लेका गे मनु मासटार दानदाते: पेरे:आकान लो:ते: जागार केदा।

"चाना: मेनेआ: काम ठोओर लि:ञा? काञ बुजाओ बाइउ:ताना।"

"का ठोओर गेम बाइन ताना। जी रेदो जाआ: 'खाने होनाङ नेआ को जागार काते रे मेनतेम मेन जादा।..... कोतागातेम इतु ला: नामिनाङ सुसुन दो?"

"हे, एनाम कुलि ताना? आम दो कोतागातेम इतुला:।"

"आलेदो मार पाड़ाओ तान रे इसुकुल जापा: हातु कोते मिसा-मिसा सुसुन सेनो: ले टो: जादले ताइकेना। आपे दोड़ो: बाकिड़ि कोटोङाकान लेकापे ताइकेन लेकाञ आटाकारेआ।"

"एह, एन बाकिड़ि बितार रे चाना: होबाओ: ताना मेनेआ: आम चाना:म इतुआना। मिसा-मिसा ले सुसुन तान ताइकेना, ओड़ो: दो आङ गिड़िओ:गे।"

"गाड़िकाद दुराङ दो मार हे, मेनदो बेगार रु ते आङ गिड़ि मेन लेरे दो नाजोम को सुसुन ताना मेनेगेञ आटाकारेआ।"

"कोता: बेगार रूते? आले दो रुरू का इतुआन गेम बाइजाद लेआ।"

"नाआ: दोञ पातिआ जाना। होला दो आञ दो का होनाङ आङो: रे मेने लेका गेञ सानाङ तान ताइकेना। आम जापा: रेदो जाओआते आकाड़ा रे आयारेन तानको राटि को तायोमेन जाना।"

"हे, रासिका पेरे: जान रे ने जी रेआ: मुण्डि का नामोगा।...... आमो दाङ हुड़िङ लेका दोम बुल लेन लेकाञ टोओरेआ।"

"हे, एनका दो एनका नो:गे।........ भाला आम आयार लेरे ओकोए काए: बुलो:आ?"

कारण नन्दि के यहां आया जाया करते थे। नन्दि के साथ उनकी दोस्ती के साथ उनका आना-जाना और ही बढ़ गया।

उसी साल सरहूल त्यौहार के समय मनु मास्टर को नन्दि के यहां आमन्त्रित किया गया। पर्व के तौर पर पूजा पाठ और खान-पान हर वर्ष की तरह हुआ ही लेकिन बुरुहतु गांव के अखाड़े में उस वर्ष की तरह नाच पर किसी समय नहीं हुआ था। दूसरे दिन डाड़ी घाट पर या पेड़ की छाया में बैठे-बैठे लोग 'वाह री, नंदि का क्या कहना!' लोग यही सब बातें कर रहे थे। दूसरे दिन नन्दि और मनु मास्टर जल्दी ही स्कूल पहुँचे हुए थे दूर से ही उन्होंने मुस्कानों से एक दूसरे का स्वागत किया।

"तुम ऐसी निकलोगी इसका मुझे पता नहीं था।" बुरुहतु के बाकी लोगों की तरह मनु मास्टर ने आश्चर्य चकित होकर कहा।

"किस बात का पता नहीं था? ठीक से नहीं समझ पा रही हूँ।"

"जैसे कि तुम्हें पता ही न हो। मन में तो शायद सोच रही होगी कि कोई बार-बार ऐसा ही कहते रहता तो कितना अच्छा।..... इतना सारा नाच तुमने कहां से सीखा?"

"वो? उसकी बात पूछ रहे हैं। आपने कहां से सीखी?"

"हमें तो पढ़ते समय स्कूल के पास गांवों में कभी-कभी नाचने-गाने का मौका मिलता था, लेकिन तुम तो, मुझे लगता है, घेरे के अन्दर ही बन्द थी।"

"उस घेरे के अन्दर क्या होता है उसका आपको क्या पता? कभी-कभी हम लोग सुबह होने तक नाचा करते थे।"

"थोड़ी देर तक गा लेने की बात मैं मान सकता हूँ लेकिन बिना बाजे के साथ नाचकर बिहान करना मुझे डायनों का नाच-सा लगता है।"

"बिना बाजे के कौन नाचता है? आपको लगता है कि हमें बजाना आता ही नहीं है।"

"अब तो विश्वास हो गया। कल तो मन करता था कि काश! बिहान ही नहीं होता तुम्हारे सामने तो सदा से आगे नाचने वाली लड़कियों भी पीछे चली गई।"

"हां उमंग से भर जाने पर इस मन का कुछ ठिकाना नहीं होता। ...... मुझे भी तो लगता है कि आप भी कुछ-कुछ नशे में आगए थे।"

"हां कुछ ऐसा ही था। ....भला जब तुम सामने होती हो तो किसे नशा नहीं आएगा।"

''एन जालो: दो इसुकुल घंटी साड़ि जाना आ'र आकिन पाआड़ाओ कामिरेकिन लागतिङ जाना।''

मुसिङ आयुब सा: मनु मासटार इसुकुल रेन सोबेन मासटार को आएआ: ओड़ा:ते चा नू लेकाए: रा: केद कोआ। चा नू बेड़ा तान लो: हेड़ा जान चि एन रेगे सोबेन कोआ: माण्डि उतु बाइ जाना। इसु निदा मासटार को आपान–आपान ओड़ा:तेको रुआड़ा लेना। नंदि दो कुड़ि होन लेकाते इसु पुरा: निदा जान चि एन रेगे: ताइ आङेन का मेन जाना। मोद लेकाते दो नेआ नंदि नांगेन ठीकि जान गेआ चिआ: चि आए: एन मनु मासटार: एंगाते लो: जापागार रेआ: होराए: नाम केदा। गापातेरे सेता: दो नंदि इदाङ रे बिरिद जाना आ'र जेताइमताङ का जो: टोगो: तानता: को राटि: जो: पारचि केदा। मनु मासटारा: एंगाते बुड़िआ दो मांदुकाम हालाङ सा: ते: उडुङाकान ताइकेना। मनु मासटार आआब बेड़ा को:आते रुआड़ा लेनरेओ नंदि लुण्डा–बिण्डा कामि रे आचुआकानगे: ताइकेना।

''चाना: आमिनाङेम बालाएन ताना? आम सेनो: जान तायोम तेदो ओड़ो: सिदा लेकागे गोओंडो रुआड़ाओ:आ।''

''हे आलो मुसिङ रेओ जाआ: बुड़िआए: दु: नोगो: रेञ मेन जादा।''

''मुसिङ दाङेम जोगाइआ। जानाओ गे चि?''

''जानाओगेड़ो:, जो: रिकाञ रेदो पे।''

''सारतेगे?'' मनु मासटार नंदि लेल गिड़ि कि:आ। नंदि मिसागे मानु मासटार मुलि: हेता ला: आ'र चिपा–थाड़ि को गासार नागेन डोबा मुलि: सेनो: जाना। मनु मासटार: मेद किङ इसु सांगिन जाकेद नंदि किन ओतोङ गिड़ि केना।

''एन हुलाङ गे बासिआम सिंगि नंदि आको ओड़ा: ते रुआड़ा लेना। आए: रुआड़ा जान तायोमतेओ मनु मासटार: जी रेआ: ओड़ा: राचा रे नंदिआ: जालिआ मारा: लेकान सेन बेड़ा आ'र मुगुइ: लेका लानदा इसुदिन जाकेद ताइन जाना। नेकातेगे नंदि आ'र मनु मासटार ताकिना: हिजु: सेनो:, हारा इदिजान गेआ। नेआ को लेल केआते नंदिअ: एंगाते–आपुते ताकिन उडु: रेकिन टो: जाना। मिआद दो मनु मासटार ताकोलो: नंदि ताकोआ: कुपुल का तेपेबा: तान ताइकेना आ'र एटागा: दो नेआ गे चि मनु मासटार मिआद रेंगे: ओड़ा: रेन होने: ताइकेना। चिलका चिलकाते मनु मासटार आ'र नंदिआ: जागार नंदिआ: कुमाते ताकोता: तेबा: लेना। गापातेरे गे नंदिआ: कुमाते बुरुहातुए: तेबा: ला:। नंदिआ: आपुते सोओजे 'का' मेनते: मेता:इआ। नेआओ आए: उदुब तुकादा चि मनु मासटार: एंगाते नाजोम को साब लि:आ आ'र इमताङा–आते हागा को एन ओड़ा: रे काको जोम नू ताना। तायोमते

उसी समय स्कूल की घन्टी बजी और वे पढ़ाने के काम में लग गए।

एक दिन शाम को मनु मास्टर ने स्कूल के सभी शिक्षकों को अपने घर पर बुलाया। चाय पीते-पीते जब देर हो गई तो वहीं सबका खाना तैयार हुआ। शिक्षक बहुत रात हुए, अपने-अपने घर वापस गए। एक स्त्री के लिए रात बहुत अधिक हो जाने के कारण यह निश्चय हुआ कि वहीं रात बिताए। एक प्रकार से तो नन्दि के लिए ठीक ही हुआ क्योंकि उसे मनु मास्टर की मां के साथ बातचीत करने का मौका मिला। दूसरे दिन सुबह नन्दि बहुत ही जल्दी उठी और पहले कभी भी नहीं साफ की हुई जगहों तक को झाड़-बुहार कर साफ किया।

"तुम क्यों उतना कष्ट उठा रही हो? तुम्हारे चले जाने के बात तो यहां फिर से पहले की ही तरह गन्दगी भर जाएगी।"

"हां, बुढ़िया को एक दिन भी आराम मिले, यही सोच रही हूं।"

"उसके लिए एक ही दिन झाड़ू लगा सकती हो। क्या हर रोज कर सकोगी?"

"हां, हर रोज, अगर आप ऐसा करने दें।"

"सच?" मनु मास्टर ने नन्दि को देर तक देखा। नन्दि ने एक ही बार मनु मास्टर की ओर आंख उठाई और बर्तन मांजने के लिए डाड़ी की ओर चली गई। मनु मास्टर की आँखों ने बहुत दूर तक नन्दि का पीछा किया।

उसी दिन दोपहर के पहले नन्दि अपने घर वापस आई। उसके वापस जाने के बाद मनु मास्टर के मन के घर-आंगन में नन्दि का मयूर की तरह चलना फिरना और उसकी मधुर मुस्कान बहुत दिनों तक रही। इसी तरह नन्दि और मनु मास्टर का मिलना जुलना बढ़ता ही गया। यह सब देखकर नन्दि के मां-बाप चिन्ता में पड़ गए। एक तो मनु मास्टर के परिवार के साथ उनका कौटुम्बिक सम्बन्ध नहीं पहुंचाता था। दूसरा यह कि मनु मास्टर एक गरीब घर से आते थे। कैसे कैसे मनु मास्टर और नन्दि की बात नन्दि के मामा तक पहुँची। दूसरे ही दिन नन्दि का मामा बुरुहतु पहुँचा। नन्दि के पिता को उसने सीधे 'ना' कह दिया। वह उसे यह भी बताता गया कि मनु मास्टर की मां को गांव वालों ने डायन पकड़ा था और उस समय से उसके बिरादर के लोग उस घर में खाते-पीते नहीं है। बाद में

आयुम जाना चि नंदि एन जेटेगे लातार सा: रेन मिआद ओते आड़िआन ओड़ा: रेको गोङ कि:आ।.........

''आमताङ दो आमा: आड़ांदि रे उदुब कुल रेआ: राटि काम फुरसाइति जाना।'' मानु मासटार कुमुतानाते: एओन जाना।

हे चाना: मेनतेञ उदुबामेआ? आपेलो: दो कुपुलो दाङ काबु तेपेबा: ताना।''

''आ'र एंगाञो दाङे: नाजोम ताना। कुपुल तेपेबा: जान रेओ जोम नू दो कापे बाइउ: तेआ: होनाङ।''

''हे एनाओ'गेडो:''

''मेनदो पुरा: उतार का सुकुदो आले रेंगे: ताना: गेदाङजाआ: का?''

''हे एनाओ ठीकिगे।....... चाबा ला:म चि ओड़ो: मेना: गेआ।''

''नाआ:ते कोता: चाबाओ:आ। नाआ: दोञ एटे:आकाद आ। गेल सिरमा रेआ: जागार को मोद टुङ रे चिलका चाबाओ:आ?''

जे काजिआ: को काजीमे मार। आम लेकाते दो आञ गेजा:ञ नेकातादाम मेन जादा का?''

''सोबेन गेदो का, मेनदो आम लो:ते आमिनाङ हामि: जागार टुण्डु लेद रेओ मोका रे जारुडुन तान लेका दो मोद चोकोए:ओ काम बाइन जाना।''

''नेआ दो आम कुड़िआकान रे एनाङेम टोओरेआ। आम लेका तेदो आञ आम लो:ञ निर गिड़ि जान रे होनाङ बे'सेओ:तेआ: का?''

''का एनका दो का, मेनदो एंगाम-आपुम ताकिनेम बुजाओ केद किङ रेदो होनाङ किन बुजाओ जान तेआ:।''

''आम चिलका तेम टोओर जादा चि आञ आकिन बुजाओञ लागातिञ केना चि का?...... इन किन दो जेता लेका रेओ काकिन बुजाओ:आ। टुण्डु रे इनकिन चाना: किन मेनला:म इतुआना?''

''चाना:?''

''एन कोड़ा लो:म आड़ांदिन जान रेदो गोए: जाना लिङ मेनेआ: गे हिसाब ताम। एंगाञ-आपुञ ताकिङ: एसेकार होन। आकिन जिनीद बा'रि सादाओआ: चिलकातेञ कामिआ?''

सुना गया कि उसी गर्मी में नन्दि का विवाह पूर्वी इलाके के एक जमीन–जायदाद वाले परिवार में हो गया।

"पिछली बार अपनी शादी के समय, तुम्हें हमारे यहां बात भेजने तक की फुर्सत नहीं हुई!" मनु मास्टर स्वप्न से जगते हुए बोले।

"हां मैं आपके पास क्यों बात भेजूं? आपके साथ तो हमारा सम्बन्ध ही नहीं पहुंचता है।"

"मेरी मां डायन भी तो है। सम्बन्ध पहुंचने पर भी हमारे साथ खाने–पीने में कठिनाई होती!"

"सो भी है।"

"लेकिन सबसे अधिक पसन्द न आनेवाली बात तो शायद हमारा गरीब होना ही है, न?"

"हां, वह भी सही है।..... क्या आपने बात खत्म की या कुछ बाकी है ही?"

"इतनी जल्दी कैसे खत्म होगी? मैंने अभी बात शुरु ही की है। दस वर्ष की बातें एक मिनिट में कैसे खत्म होगी?"

"जितना कहना हो कह लीजिए। आपके विचार से तो यह सब मैंने ही किया है, है न!"

"सभी बातों में नहीं मगर तुम्हारे साथ इतनी दूर तक बात होने पर भी मौके पर, मुझे ऐसा नहीं लगा कि तुम्हें इसमें थोड़ा भी मन था।"

"ये तो आप अगर एक स्त्री होती तभी पता चलता। आपके विचार से तो अगर मैं आपके साथ भाग जाती तो बहुत अच्छा होता।"

"नहीं वैसा तो नहीं, लेकिन मेरा विचार है कि अगर तुम अपने मां–बाप को समझाती तो वे समझ जाते।"

"आपको कैसे पता है कि मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की या नहीं? .....वे किसी तरह समझने वाले नहीं थे। अन्त में उन्होंने क्या कहा, पता है"

"क्या?"

"उस लड़के के साथ अगर तुमने शादी की तो समझो कि हम मर गए हैं।" मां–बाप की अकेली बेटी उनको जीवन भर कष्ट पहुँचाने का काम मैं कैसे करती?

''हे एना दो हेएगे। इमिन रेओ आसाराए: तानेञ ताइकेना चि टुण्डु रे जाआना: का जाआना: दोम काजि कुले गेआ।''

''हे एना दो काञ दाड़ि जान गेआ। सोबेन-सोबेना: दाणे चाबा जान तायोम ते ओड़ो: चाना: आउकेआते आमता: तेञ हिजुगा होनाङ। इपाए: ती हिजु: कोआते आलाङ बारान किना: दुकु हारा आञ का सानाकि:ञा। नेआ गुना दो आञ ते होबा जान गेआ। आञा: नागेन माराङ उतार दुकु दो नेआ गे चि आमता: आञ मापि आसे राटि काञ हिजु: दाड़ि जाना। ....मनु मासटार, गेल सिरमा सेनो:जन रेओ तिसिङ आम नेआञ जागर रुआड़ाम ताना। होबा दाड़िओ: रेदो आञ माप ताञमे।'' मेन जालो: नंदि कुसुद-कुसुद एटे: केदा।

''का, का, एनका दो का। मापि दो आञ आसि लागातिङा होनाङ। कोड़ा होन तान लेकाते आञगे आम पिचा लागातिङ तान ताइकेना होनाङ। मेनदो एनाको जेताओ: काञ रिका दाड़ि जाना।''

नेआ को आयुम जालो: नंदिआ: कुसुद कुसुद इआम रे बादाला जाना। एंगा: इआम लेल केआते होन किन ''चाना: गाम रा: ताना'' मेनते किन कुलि जा:इआ।

''जेताओ: का बाबु। जू इनुङबेन हेनसा:रे। मेन जालो: नंदिआ इआम होका नो: जाना आ'र आए: साड़ि रेआ: आचोणो ते मेद दा: कोए: गोसोगेन जाना।'' मानु मासटार आएआ: सोनो: ताइलागाते मिआद आट आना सिका आ'र मिआद चाइर आना सिकाए: उडुङ केदा आ'र होन किन उमार लेकाते: हाटिङा: किना। होन किन पाएसा नामकेआते इसु पुरा: किन रासिका जाना आ'र आपान इनुङ रेकिन लागातिङ जाना।

''कामि उदाम कोदोपे चिलका जादा ताबु।'' मनु मासटार जागार बादालाए: मोने केदा।

''चालाओ ताना जां लेका जां लेका?''

जाँ लेका जाँ लेका? आमिनाङ दासि दो कामिणि दो मेना: कोते चिलका जाँ लेका जाँ लेका?

''कोता: रेन दासि आ'र कोता: रेन कामिणि। दासि-कामिणि मेन लेरेगे दो का होबाओ: ताना। इनकु पुराओ लेकोरेचा। मोद होंजारिञ बांगाइ: जाना तेदो कामिओ ले नेसा:-हेनसा: चाबाकाना।''

''चाते? इरुलमे कोड़ा ताकिनो दाङ बार होड़ो मेना: किन लेकाञ टोओरेआ?''

''हे मेना: दो मेना: किना, मेनदो ना: दोले बिनगा काना।''

''तोबे दोबेन एसेकारा काना का? एनका रेदो ओड़ो: कामि

''सो तो है ही। फिर भी मुझे आशा थी कि अन्त में तुम कुछ न कुछ बात भेजोगी।''

''हां, वह तो नहीं कर सकी। सब कुछ का बलिदान देने के बाद और क्या लेकर मैं आपके पास आती। मैं नहीं चाहती थी कि खाली हाथ आकर हम दोनों ही का दु:ख बढ़े। यह गुनाह मुझसे हो ही गया। मेरे लिये सबसे बड़ा दु:ख तो यही है कि मैं आपसे माफी भी नहीं मांग सकी। दस साल गुजर जाने के बाद भी यह बात फिर से कह रही हूँ, मनु मास्टर यदि सम्भव हो तो आप मुझे माफ कर दें।''

''नहीं, नहीं, वैसा नहीं करते। माफी तो मुझे मांगनी चाहिए। पुरुष होने के नाते मुझे ही तुम्हारी खोज-खबर लेनी चाहिये थी। लेकिन मैं वह सब कुछ भी नहीं कर सका।''

''यह बात सुनते ही नन्दि का सिसकना रोने में बदल गया। अपनी मां का रोना देखकर बच्चे उसे पूछ रहे हैं— 'मां, तुम क्यों रो रही हो?'

''कुछ नहीं बेटे, जाओ उधर खेलो।'' कहते हुए नन्दि का रोना कुछ समय के लिए रूका और उसने अपनी साड़ी के आंचल से अपने आंसू पोंछे। मनु मास्टर ने अपने कुरते के पॉकेट से एक अठन्नी और एक चौवन्नी निकाली और उम्र के अनुसार उन्हें बच्चों में बांटदी। बच्चे पैसा पाकर बहुत खुश हुए और खेल में लग गये।

''तो तुम लोगों का काम-धाम कैसा चल रहा है?'' मनु मास्टर ने बात बदलनी चाही।

''चल रहा है किसी तरह।''

''किसी तरह? इतने नौकर चाकर रहते हुए किसी तरह कैसे?''

''कहां का नौकर और कहां का चाकर! नौकर चाकर सिर्फ कहने से कुछ नहीं होता, उन्हें देकर पूरा कर सके तब तो। जब से मेरे ससुरजी नहीं रहे तब से हमारा काम भी ठीक से नहीं चल रहा है।''

''क्यों? तुम्हारे दो देवर भी तो हैं?''

''हाँ, है लेकिन अब तो हम अलग-अलग हैं।''

तब तो तुम बहुत अकेले हो गये होंगे। जब ऐसी बात है

दोबेन बालाए नोगो: गेआ, आ'र सोंजोको जाआ: हुड़िङ लेका पाड़ाओ नो:आकान लेकाते सिउ: चालु: रेआ: हेओआ बानो: रेदो नेकान कामि को बालाए गेआ। ......कोता: रे नुकुरि–नुकुरि तान दाङे: ताइकेना?''

''हे काचाइरि रे: कामि–कामि केना। एनाओए: होकाजाना।''

''चाते?''

''एनता: दिकु कोलो: कामि काए: मुण्डि केदा। आको लेका ताइन आ'र जोम–नू बाआरि इतुआउ ला:?''

''एलातोबे: बुलो:आ चि ताबु?''

''हे मिसा–मिसा दो निर गिड़िगे मोनेञा।''

''आमिनाङ जाकेद चि?''

''हे, ना होड़ो कोता:आते बुलेने: इतुन जाना। पीटि हुलाङ दो जुआ इनुङ कोलो:गे आङेन ताना। गापातेरे तिकिन एनाङ साम बुल कोते, रेंगे:कोते ओड़ा: मुलि: कोकोले आउइआ।''

''नेआ दो कापे ठीकि उतार जानगेआ। काचिपे काजि बेड़ाइ ताना?''

''आनि ओकोए काजिआइआ? मिसाले कोटोङ नो: लि:आ आना दो दालतेगे, रु तेगे: नाम जा: लेआ। ने बुल आ'र जुआ इनुङ रेआ: तेगे हुड़िङ लेका ओतेओए: बानदार तादा। आञदो ने होन किन चिलकाते किन माराङो:आ मेनेआ: गेञ उडुगा।''

''होन किन दो किन माराङो: गेआ। कुमा को ओड़ा: दो नाआ:ओ बेएसे गेआ। हुड़िङ लेकाकिन माराङ जान चि होन किन दो एनतेगे कुल ताकिन पे। एनाते दो आलेआ: इसुकुल (मोद सोमाए दोड़ो: आमा: इसुकुलोगे) नाणे: गेआ।''

'आमा: इसुकुल' मेन जालो:गे नंदिआ: जी दो तुञ केद लेका बुरुहातु ते सेनो: जाना। एनता: को इनि: गेल सिरमाआते: लेलाउ जादा। आकिन सेनबेड़ा लेद होरा को हुआङ बाइआ काना, बादाला इदिआ काना। आकिन उमबुल केनता: को टेटे चाबाकाना। आकिन नू केन ता: द: सेतोम होका जाना। नेआ कोलो: जुड़िआ कान लेकागे ने सोमाए आएआ: सिदा रेन सोंगे मिआद लो सारे: दारु लेकाए: तिंगुआ काना।

'रे: जा:ञाए: गा।'' मेन जालो: माराङ होन एंगाते: नालिसिआइ ताना।

तो काम में थोड़ी कठिनाई होगी ही और दुर्योग से अगर कुछ पढ़े लिखे होने के कारण जोतने–कोड़ने की आदत नहीं है तो काम करना कठिन ही है। ....वह कहीं नौकरी करते थे न?

"हां, कचहरी में उन्होंने कुछ दिन तक काम किय, उसे भी छोड़ दिया।"

"क्यों?"

"वहाँ दिकु लोगों के साथ काम करना उसे नहीं आया। उनकी तरह सिर्फ रहने और खाने–पीने का ढंग सीखकर आए।"

"तो क्या ये नशा भी करते हैं?"

"हां कभी–कभी तो एकदम भाग जाने का मन करता है।"

"इतना तक?"

"हां, पता नहीं यह आदमी कहां से पीना सीख गया। बाजार के दिन तो यह जुआ खेलने वालों के साथ ही रातभर रहता हैं। दूसरे दिन दोपहर को भूख और नशे में चूर होकर दुल–मुल होते हुए वापस आता है।"

"यह तो तुम लोगों के लिए ठीक नहीं हुआ। क्या तुम उसे कुछ कहती नहीं?"

"उसे कौन कहेगा? एक बार मैंने रोकने की कोशिश की तो मुझे मारने–पीटने के लिए दौड़ने लगा। इसी नशा और जुआ के कारण कुछ जमीन भी बन्धक रखी है। मुझे तो इस बात की चिन्ता है कि ये बच्चे कैसे बढ़ेंगे।"

"बच्चे तो बढ़ेंगे हीं। बच्चों के मामा का घर अब भी ठीक ही है। कुछ बढ़ जाए तो उन्हें वहीं भेज दो। इसके बाद तो हमारा स्कूल (कुछ समय के लिए तो तुम्हारा भी) नजदीक ही है।"

'तुम्हारा स्कूल' कहते ही नन्दि का मन तीर की तरह बुरुहतु चला गया। उस जगह को वह दस वर्षों से देखती आ रही है। जिन पगडन्डियों से होकर वे कभी साथ–साथ घूमे थे वे गढ्डों में बदल गए थे। जिन पेड़ों की छाया में वे बैठे थे वहां अब कुछ भी नहीं है। उन्होंने जहाँ पानी पिया था। वहां अब पानी का झरना बंद हो गया था। इन सारी चीजों के साथ समता रखने की तरह इस समय उसका पुराना साथी एक अधजले पेड़ की तरह खड़ा था।

"मां, मुझे यह लूट रही है।" कहते हुए लड़का मां से नालिश कर रहा है।

''ओमाइमेआए: इनुङ को: तेका।'' नंदि होन किने: बुजाओ जाद किना। हुड़िङ खोन नांगेन एन जेटे कालकाल रे ओकोसागाते: होयो नो: ला: आ'र मनु मासाटार आ'र नंदि ताकिन जापा: तेगे मिआद हुरलुसि पारोम जाना।

''आते नंदि, आमदो तायोम सा: दो मिसा लेकाम हेएता: चि का?''

''हेता दोञ हेएता रेओ चाना:ञ चिका लेका। ओकोआ बागे जाना, आद जाना, एना दो का नाम रूआड़ाओ: गेआ।''

''बागे मेनेआ: दो हे, मेनदो आद मेनेआ: दो जाआ: का।''

मोद लेकातेदोड़ो: हेएगे। चिआ: चि एन बादाला रे एटागा: नामा काना। .....तायोम सा: चिमिनाङेम हेता: मनु मासटार, आयार सा: रेआ: जीनिदो सारे:आकान गेआ। एनाओदाङ उडु: लागातिङा।''

''उडु:आ कादाञ चिमिनसाञ उडु:आ कादा। मेनदो आम सेनो: जानते आञा: जीरा: ओकोआ कुंदुड़ि खालिआकाना एनादो कागे पेरेगो: ताना।''

''कोता: हाबि:ञ इतुआना ने बारे रे आमदो काटा ती गे काम एकेलाकेदा। चिलकातेम इतुआना चि पेरेगो:आ चि का?''

''कोसिसिआ कादाञ, लेल बेड़ा तान गेआञ, मेनदो इमिन रेओ आञा: जी तोलो:ता: आउरिगेञ तेंबागेआ।'' मेन जालो: मनु मासटार नंदि उदुबा:इआ चि चिलका आए: मिआद कुड़ि मासटार लो:ए सोंगे लेना। सोंगेजान तायोम ते इनि: मुसिङ ओड़ा:ते एंगाते बुड़िआ लो: लेपेल मेनते: आउलि:आ। मानु मासटार ताको ओड़ा: रे बारसिङ ताइकेन रेगे मनु मासटार मुण्डि केदा चि चेतान ते इमिनाङ सुगाड़ा लेलो: आ'र हेड़ेम टोओरो: कुड़ि बितारते चिलका एटा:गे: बाइआकाना। मनु मासटार मुण्डि केदा चि एन कुड़ि हाड़ाम बुड़िआ कोदो सुकुगे काए: सुकुआ कोआ आ'र ओड़ा: राचा रेआ: कामि रे ताए: जी गे बानोगा। चिलका चि, इनि: गोणाता: को सेन बेड़ा एटेदिआ, चिपा गासारो का मोनिआ, पाटिरे गिति:गे: बोरोएआ, गोड़ा चाउलि रेआ: माण्डि काञ जिराओएआए: मेनेआ।

''एन हुलाङाआते इनि: लो: मोचा जागार गे होकाकाना। नंदि नेआ को जागार तान मनु मासटारे: लेल गिड़ि कि:आ। मिआद बारिआ ऊबको पाण्डुआकान मनु मासटार आचाकागे ओड़ो: गे हाड़ामनो: जान लेकाए: लेल जाना।''

"दे दो बेटे, उसे खेलने दो।" नन्दि बच्चों को समझा रही है। "थोड़ी देर के लिए उस चिलचिलाती धूप में थोड़ी हवा चली और नन्दि और मनु मास्टर के नजदीक से हवा का एक बवण्डर पार हुआ।"

"क्या तुमने कभी पीछे की ओर मुड़कर देखा है नन्दि?"

"मुड़कर देखने पर भी मैं क्या करती। जो छूट गया, जो खो गया, वह तो फिर से नहीं मिलेगा।"

"छूट गया सो तो ठीक है लेकिन खो गया यह कहना शायद ठीक नहीं होगा।"

"एक प्रकार से तो बात सही है क्योंकि उसके बदले में दूसरी चीज मिल गई है। .....मनु मास्टर पीछे की ओर कब तक देखते रहिएगा? आगे की जिन्दगी भी बची हुई है इसके बारे में भी आपको सोचना चाहिए।"

"सोचा है, मैंने कई बार सोचा है, लेकिन तुम्हारे चले जाने के बाद मेरे हृदय का जो कोना खाली है वह तो कभी भरता ही नहीं है।"

"जहां तक मैं जानती हूँ, इस बारे में आपने कभी कोशिश ही नहीं की है। आप कैसे जानते हैं कि भरेगा या नहीं।"

"मैंने कोशिश की है। मैं इधर–उधर देख रहा हूँ किन्तु तब भी मन बन्धने की जगह मै अभी पहुँचा नहीं।" कहते हुए मनु मास्टर ने नन्दि को बताया कि कैसे उनकी दोस्ती एक स्कूल मिस्ट्रेस से हुई। दोस्ती के बाद एक दिन वे अपनी मां से मिलाने के लिए उसे घर ले आए। उनके घर पर दो दिन रहने पर ही मनु मास्टर को पता चल गया कि ऊपर से उतनी सुन्दर और मीठी लगने वाली स्त्री भीतर से कैसे दूसरी बनी है। मनु मास्टर को पता चला कि उस स्त्री को बूढ़े बुढ़िया पसन्द नहीं, और घर–द्वार के काम में उसे मन नहीं लगता। उदाहरण के लिए उसे गोहाल घर के आस–पास चलने फिरने में घिन लगता है, बर्तन साफ करना उसे पसन्द नहीं। चटाई पर सोने में उसे डर लगता है, 'गोड़ा चावल नहीं पचा सकती हूँ' कहती है।

नन्दि यह सब बातें कर रहे मनु मास्टर को देखती रह गई। मनु मास्टर, जिनके एक दो बाल पके हुए थे अचानक और ही प्रौढ़ दिखाई देने लगे।

हुराङ जालोम

ताला निदाआते पारोमाकान नुबाः निदा। माराङ गाड़ा जापाः रे रोटेआः होड़ोमो डागा–डागा तान लो ताना।

गाड़ा रे दाः लेमकेन–लेमकेन लिंगि ताना। सेंगेल जुल तान जापाः रे बारिआ होड़ो किनाः उमबुल हुड़िङ खोओन नांगेन लेल जाना। आ'र एन तायोम तेदो रोटेआः जाङको लो तानाः ठुल तानाः साड़ि बाआरि सारेः जाना। गाड़ा रे दाः माणि–माणिते सांगि जाना आ'र लेल जा लेल जालोःगे रोटेआः तोरोएःआकान होड़ोमो माराङ गाड़ा रे आतु गिड़ि जाना। मुसिङ सिदा जाकेद लानदा तान–जागार तान हारा राकाब तान, एंगातेआः एसेकार होन रोटे जुगु–जुगु नांगेन बाङगाइः गिड़ि जाना।

एतवार पीटि रेआः दिन। बुसुःडी रेन पुराः उतार होड़ोको पीटिते को सेनाकाना। सेणा नोगाकान कोरे जानुमपिड़िआः एसेकार होन रोटे बाआरि सारेःआकाना। दांगाड़ा चोटेगोः तान लेकाते आएःओ होनाङ एतवार पीटितेः सेनोः लागातिङा मेनदो हुड़िङ लेका रोगोद नोः तान लेकाते एन हुलाङ ओड़ाः रेगेः ताइन जाना।

ठीकि नेःगे सिंगिः डुमबुइगोः इमताङ बुसुःडी हातु ते दुड़ा ओटाङ जालोः मिआद जीप गाड़ि हिजुः लेना। हाटिआ होरा जापाः रे आतिङ तान सिमको खादा–खादा तान को आपिर गिड़ि जाना। आ'र एन तायोमते गाड़ि माड़िं जाना आ'र आकाड़ा ताः रेआः जोजो सुबा रे तिंगु जाना। तिंगु जान लोःगे गाड़िआते पेनटे सोनोः तुसिङाकान बारिआ होड़ो किन हाड़ागुन जाना। मोटो नोः निः, लाआइः मोदचोकोएः डुल–डुलाकानिः दो, रामपुर ब्लोक रेन बी.डी.ओ. तानिः आ'र ओड़ोः मिआद निः दो आएआः सोंगे।

"अरे कोई है?..... ओकोए मेना चि? बी.डी.ओ. सायोब काकालातेः कुलिताना। तिसिङ दो बी.डी.ओ. सायोब लोः आएआः डइबर दो काएः ताइकेना। गाड़ि आपान तेगेः चालाओ आउआकादा। होड़ो को गाड़ि जापाः ते जेताएओ काको होपोरेन जाना। बी.डी.ओ. सायोब नेसाः हेनसाः दाणा बेड़ा तान लोः रोटे ताकोआः राचाएः तेबाः लाः। रोटे पारकोम रेः बारिआ कान ताइकेना।

"अरे कौन है? उठो और हमारे साथ चलो। हम सरकारी तालाब से मछली पकड़ना चाहते हैं। अरे नहीं समझता है...... हाइ गोए चलो।"

फेंका जाल

आधी रात के बाद की अंधियारी रात। तजना नदी के किनारे रोटे का शरीर धधक कर जल रहा है। नदी में पानी उफनकर बह रहा है। जलती हुई आग के पास दो छायाऐं कुछ देर के लिये दिखाई दी और कुछ देर के बाद तो सिर्फ रोटे की हड्डियों के जलने और टूटने की आवाज ही रह गई। धीरे–धीरे नदी में पानी ऊपर आया और देखते ही देखते राख में परिवर्तित शरीर नदी में बह गया। एक दिन पहले तक हंसता–बतियाता, बढ़ता अपनी मां का एकलौता बेटा रोटे सदा के लिए खो गया।

एतवार–बाजार का दिन। बुसुःड़ी गांव के अधिकांश लोग बाजार गए हुए हैं। सयाने लोगों में जनुमपिड़ि बुढ़िया का एकलौता बेटा ही बचा हुआ है। जवान हो रहा है इसलिए उसे भी एतवार बाजार जाना चाहिए था लेकिन उसका शरीर ठीक न रहने की वजह से वह उस दिन घर पर ही रह गया।

ठीक सूर्य डूबने के समय एक जीप धूल उड़ाती हुइ बुसुडी गांव पहुँची। उसके साथ ही गांव की गली के पास चरती हुई मुर्गियां शोर मचाती हुई भाग गई उसके बाद गाड़ी धीमी हुई और गांव के पास एक इमली के पेड़ के नीचे रूक गई। कुछ मोटा आदमी, जिसका पेट थोड़ा निकला हुआ था, रामपुर ब्लोक का बी.डी.ओ. है और दूसरा उसका साथी।

''ओकोए मेना ची.... अरे कोई है?'' बी.डी.ओ. साहब ने जोर से आवाज देते हुए कहा। आज बी.डी.ओ के साथ उनका ड्राईवर नहीं था, गाड़ी खुद चलाकर आये है। चूँकि लोग बाजार गए हुए थे, गाड़ी के पास कोई नहीं आया। बी.डी.ओ. साहब इधर उधर खोजते हुए रोटे के आंगन में पहुँचे। रोटे खटिया पर लेटा हुआ था।

''ओकोए तानी, दोला अले लो: सेनो। सरकारी बान्दारे हाई को साबेआ। .....अरे नहीं समझता है? .....मछली मारने चलो।''

‘‘का गोमके आञ दो काञ दाड़िआ, रूआ–रूआ जा:ञा।’’ मेन जालो: रोटे पारकोम रे बाटिआकानाते: दुब जाना।

‘‘क्या कहा? काञा बोलता है। तुम्हारा क्या नाम है? हम तुमको बांधकर ले जाएंगे। क्या समझता है? चलो तुम्हारा जाल कहाँ है।’’ बी.डी.ओ. सायोब रोटे के धामकाओ जाइ: लो:गे: ति: बिरिद कि:आ। रोटे का मोने जाइ: रेओ जाकामारि काकाते ताको ओड़ा:ते: सेनो: जाना आ’र काकातेआ: जालोम गो: केआद बी.डी.ओ. सायोब आ’र आएआ: सोंगे लो: सरकारी बानदा तेको सेनो: जाना।

‘‘बानदा को तेबा: ला:। बान्दा नावागे उराकान ताइकेना आ’र आतोम को आचाका गे हुआङ कुला कान ताइकेना। बिड़िङ लेका पेरे:आकान बानदा लेल केआते रोटेआ: जीरे बोरो हिजु: जाना। इनि: बानदाए: लेल गिड़ि केदा। बानदा लेल जारेओ रोटे तिंगुआ कानगे: लेल कि: चि बी.डी.ओ. सायोब मेन जादा। ‘‘क्या देखता है? जाल कब फेंकोगे। रोटेआ: होड़ोमो रे बाल–बाल पेरे: जाना। एनकातेगे आएआ: लेंगा तीरे जालोमे: साला केदा आ’र बानदा आतोमाआते: हुराङ केदा। आना दो जालोम साते तेगे आए:ओ जालोमते: हारूब मिसा जाना आ’र बानदा रे: चाडु जाना। बानदा आतोम को सिड़िगिर गाराङाकान ताइकेना आ’र रोटे जालोम रे गुड़ि पुटुड़ि जान चि ओणान तान लो: बितारतेगे: उडुल–बुडुल इदि जाना। बी.डी.ओ. मार आएआ: सोंगे एन सोमाए रे चाना: चिका लागातिङा मेनेआ: सोबेन सेणा किन आद केदा आ’र लेल जाइ: लेल जाइ:गे रोटे दा: बितार ते बुडु–बुडु राकाब तान लो:गे: आद जाना।’’

‘‘आलाङ नागेन मिआद होड़ो डुमबुइ: गोए: जाना।’’ मेनते साम बोरो सोरो बी.डी.ओ. सायोब आ’र आएगा: सोंगे हातु मुलिकिन दाउड़ि केदा। इमताङ जाकेद पीटिआते मिआद बारिआ होड़ोको हिजु: रूआड़ाकान को ताइकेना। रोटे बानदा रे: डुमबुइ: जाना मेनेआ: आयुम केद चि होड़ोको जामा ताआबेन जाना आ’र हुड़िङ खोओन रेगे इनि: बानदाआते को तुनुम उडुङ कि:आ। रूआ कोते सासाङ गिड़िआकान रोटेआ: होड़ोमो दा: नू–नू ते मो गिड़िआकान ताइकेना। जानाओआते लेल हेओआ काइ: होड़ो लेकाओ काए: लेलो: ताना। होड़ोमो–आते दा: को उडुङ चाबा को:रे सोंजोको जाआए: बाइ रुआड़ाओ:आ मेनते हातु होड़ोको इनि: दारू रे उलटातेको हाका कि:आ, मेनदो रोटेआ: सायाद का रूआड़ा जान गेआ। टुण्डु रे जेताना: का मुंडिओ: तान चि बी.डी.ओ. सायोब आएआ: सोंगे लो: चाना: को किन जागार जान चि हातुरेन होड़ो: कोए: मेताकोतान– ‘‘हम इसको इलाज कराने के लिए राँची ले जाएंगे। घबाराने की कोई बात नहीं है। आलो बोरो।’’ नेआ मेन जालो: बी.डी.ओ. सायोब आ’र आएआ: सोंगे गाड़ि रेकिन दे: जाना आ’र रोटेआ: होड़ोमो तायोम सा:रे किन लादि रिका केद चिकिन सेनो: जाना। हातु रेन

''नहीं साहब हम नहीं सकेगा, बीमार होता है।'' कहते हुए रोटे चारपाई पर उठ बैठा।

''क्या कहा? काञा बोलता है? तुम्हारा क्या नाम है? हम तुमको बांधकर ले जायेंगे क्या समझता है? चलो, ...जालोम् ओकोरे मेना।'' बी.डी.ओ. साहब रोटे को धमकी देते हुए बिस्तर से खींचकर उठाते है। रोटे नहीं चाहते हुए भी लाचार होकर अपने चाचा के घर गया और वहां से उसका जाल लेकर बी.डी.ओ. साहब और उनके साथी के साथ सरकारी बांध की ओर निकल गया।

वे बांध पर पहुँचे। बांध हाल ही में खोदा गया था और उसके किनारे अचानक ही गहरे बने हुए थे। पानी में लबालब भरे तालाब को देखकर रोटे के मन में डर समा गया। वह बांध को देर तक देखता रह गया। रोटे को देर तक खड़ा देखकर बी.डी.ओ. साहब ने कहा---'क्या देखता है? जाल कब फेंकोगे?' रोटे को पसीना आने लगा। उसी हालत मे उसने जाल समेटा ओर बांध के किनारे से उसे फेंका। उसका ऐसा करना ही था कि वह जाल में बझ गया और बांध में गिर पड़ा। बांध की ढलान काफी तीखी थी और जाल में बंधा रोटे डूबता-उतरता भीतर की ओर ढुलकता चला गया। बी.डी.ओ. साहब और उसके साथी को उस स्थिति में क्या करना चाहिए यह सारा ज्ञान भूल गया।

''हमारे कारण ही यह आदमी मर गया।'' यह सोचकर डर के मारे बी.डी.ओ. और उसका साथी गांव की तरफ दौड़े। तब तक बाजार से एक दो आदमी वापस आए हुए थे। रोटे डूबककर मर गया, यह सुनकर लोग तुरन्त जमा हुए और थोड़ी ही देर में उसे बांध से टटोलकर निकाला। बिमारी से पीला पड़ा हुआ रोटे का शरीर पानी पीने के कारण फूल उठा था। वह एक परिचित व्यक्ति की तरह बिल्कुल ही नहीं लग रहा था। उसके शरीर से पानी निकल जाने पर शायद उसकी सांस वापस आए यह सोचकर गांव वालों ने उसे पेड़ से उल्टा लटकाया लेकिन रोटे की सांस वापस नहीं आई। अन्त में कुछ भी नहीं सूझने पर बी.डी.ओ. साहब ने आपने साथी के साथ न जाने क्या क्या बात करने के बाद गांव वालों को कहा--- 'हम इसको इलाज कराने के लिये राँची ले जायेंगे। घबराने की कोई बात नहीं है। 'अलो बोरो।' यह कहते हुए बी.डी.ओ. साबह और उसका साथी गाड़ी पर चढ़े और रोटे की लाश गाड़ी के पीछे लदवाकर चले गए। गांव वाले गांव छोड़ती हुई जीप गाड़ी की पिछली दो लाल बत्तियों को देर

होड़ो को हातु बागे जाद जीप गाड़ि रेआ: तायोम सा: रेआ: बारिआ आरा: बाति किन इसु खोओन को लेल गिड़ि केदा। गाड़ि सेनो: जान तायोमते आचाका गे रोटेआ: एंगाते आएआ: होन नांगेने: इआम एटे: केदा। हुड़िङ खोओन तायोमते हातु रेन होड़ोको आपान-आपान ओड़ा:तेको सेनो: जाना।

गापतेरे बुसु:डी होड़ो को हातु रे मोयोद दुनुबको रा: केदा। एन रेको बिचार केदा चि आको सेनो: जान निदा बी.डी.ओ. सायोब इदिआ काद रोटेआ: होड़ोमो पिचा लागातिङा। बार गाण्डा लेका होड़ोको ने कामि नांगेन तेआरेन जाना आ'र डाण्डा: चातोम को साद केआद बी. डी.ओ. सायोबा: ओपिस मेना: रामपुर सहर तेको सेनो:जाना।

हातुआते उडुङ तान लो:गे रोटेआ: होड़ोमो पिचा नांगेन उडुङाकान होड़ो को लेल केदा चि आकोआ: हातु सिमान रेआ: बाड़े रे गिदि को दुबाकाना आ'र ओकोता: रे जोम बी लेआतेको एपेलाङेङ ताना।

तिकिन चोटेगो: लो: बुसु:डी होड़ोको बी.डी.ओ. सायोबा: उपिस को तेबा: ला: आ'र उपिस दुआर रेको दुब जाना। हुड़िङ खोओन को तांगि-तांगि केना मेनदो नाआगे बी.डी.ओ. नाआगे आएआ: गाड़ि एनता: रेको लेल केदा। टुण्डु रे आको बी.डी.ओ. सायोबा: दारबाआन को दाणा नाम कि:आ आ'र को कुलि कि:आ। दारबाआने: उदुबाद कोआ चि बी.डी.ओ. सायोब मिआद जारुडु कामिते बाहरते: सेना काना। आ'र बारसिङ आपिमा तायोमते एनाङे: रुआड़ा:। बी.डी.ओ. सायोब लो: लेपेल का होबाओ:आ मुंडि केद चि बुसु:डी होड़ोको थानाते सेनो: को मोने केदा।

थाना को तेबा: ला:। थाना जापा: रेगे मिआद माराङ लेकान बाड़े दारु ताइकेना। बुसु:डी होड़ोको एन दारु उमबुल रेगे को दुब जाना। एन हुलाङ थाना रे सिङ सोणोए: गे आटाकारो: तान ताइकेना। मिआद बारिआ सिपाइ को नेआ दुआराते हेना दुआर को उडुङ बोलो तान ताइकेना। मेनदो इनकु हायाड़ा तेगे को जागार तान ताइकेना। मोदचोकोए: को साताओ नो:न जान चि बुसु:डी होड़ोकोआ: पांचाइटि रेन चाउकिदार थाना ते: बोलो जाना। बुसु:डी होड़ोको आकोआ: चाउकिदार चिमताङे: रुआड़ा: मेनेआ: गेको लेल होराताना। चाउकिदार इसु खोओन रे: हिजु: रुआड़ा लेना। चाउकिदार बुसु:डी होड़ोकोता: रुआड़ा तान लो: गे बाड़े दारु रे दुबा-कान का'उ:को काओं-काओं एटे: केदा। इमताङ गे एन हुलाङ बुसु:डी ते सेन केन बी.डी.ओ. सायोब लेकान मिआद होड़ो दारोगा सायोबा: उपिसिआते: उडुङ जान गे: लेल जाना आ'र हुड़िङ खोओन रे जीप गाड़ि चालाओ एटेगो: रेआ: साड़ि आयुम जाना।

"चि ताबु चिलका तोबे?" बुसु:डी होड़ोको चाउकिदार को कुलि दारोम जा:इआ।

तक देखते रहे । गाड़ी जाने के बाद अचानक ही रोटे की मां अपने बेटे के लिए रो उठी और थोड़ी देर बाद गांव के लोग अपने-अपने घर चले गये।

दूसरे दिन बुसुड़ी के लोगों ने एक सभा बुलाई। उसमें उन्होंने कहा कि उन्हें रोटे की लाश, जिसे पिछली रात बी.डी.ओ. साहब ले गए हैं, का पीछा करना चाहिए। आठ-दस आदमी इस काम के लिये तैयार हो गए डण्टा और छाता इत्यादि लेकर बी.डी.ओ. साहब के ऑफिस, रामपुर को चले गए।

गांव से निकलते ही रोटे की लाश का पीछा करने वाले लोगों ने देखा कि उनके गांव की सीमा पार के बड़ के पेड़ पर गिद्ध बैठे हुए हैं और कहीं भर पेट खाने के बाद धूप ताप रहे हैं।

दोपहर होते-होते बुसु:डी के लोग बी.डी.ओ. के ऑफिस पहुँचे और दरवाजे पर बैठ गए। थोड़ी देर तक उन्होंने प्रतीक्षा की किन्तु उन्हें न बी.डी.ओ. साहब दिखाई दिए और न उनकी गाड़ी। अन्त में उन्होंने बी.डी.ओ. साहब के दरबान को खोज निकाला और उससे पूछा। दरबान ने उन्हें बताया कि बी.डी.ओ. साहब से उनकी भेंट नहीं होगी, यह जानकर बुसु:डी ग्रामवासियों ने थाना जाने का निश्चय किया।

वे थाना पहुँचे। थाना के पास ही एक बड़ा-सा बड़ का पेड़ था। बुसु:डी के लोग उसी पेड़ की छाया में बैठे। उस दिन थाना बहुत सुनसान लग रहा था। एक दो सिपाही एक दरवाजे से दूसरा दरवाजा आ जा रहे थे। लेकिन सभी लोग कानाफूसी की भाषा में बात कर रहे थे। थोड़ी देर आराम करने के बाद बुसु:डी वालों के पंचायत का चौकीदार थाने में गया। लोग चौकीदार कब वापस आयगा, यही इन्तजार कर रहे हैं। चौकीदार बहुत देर के बाद वापस आया। चौकीदार के वापस आते ही बड़ पेड़ पर बैठे हुए कौए कांव-कांव करने लगे। उसी समय बुसु:डी गांव वालों को एक आदमी जो बी.डी.ओ. साहब की तरह ही लगता था, दरोगा साहब के ऑफिस से निकलता हुआ दिखाई दिया। थोड़ी देर बाद उन्हें एक जीप गाड़ी के चलने की आवाज सुनाई दी।

''तो, कहिए क्या बात है?'' बुसु:डी गांव वाले चौकदार को उसके आते ही पूछ रहे हैं।

जागार दो दुकु रेआ:गे। पुरा: गे काबु ठीकि जाना। आबुआ: होड़ो दो होलारेगे बांगाइ: जाना। नेता: तेबा: लि:आते ब्लोक रेन डाक्टर चिमिनाङे: कोसिसि केना। मेनदो एन होड़ोआ: सायाद कागे रुआड़ा जाना।

''आटाकार दो होलाओगे सायाद टुण्डुआकान लेका गे: आटाकार लेना, मेनदो इमिनरेओ आसाराए: दो ताइकेन गेआ।...... जाँ चिका जान रेओ मार, ओकोआ होबाओ:आ ना: दो होबा जान गेआ। ना: दो ने दुकु दो सोबेन कोते जीला:ले एनाङ। नेरा: कामि दो टुण्डु जाना। ना: दो आबुआ: होड़ोआ: होड़ोमोबु इदि रुआड़ा केआ।'' मेन जालो: बुसु:डी होड़ोको बाड़े सुबाआतेको बिरिद एटे:जाना।

''हों, हों, हों, हुड़िङ लेका काजि सारे:आ कान गेआ। ....काजि दो नेआगे चि होला निदा पुरा:गे हेड़ाओ: तान चि रोटेआ: हासा गाड़ा एमान दो सायोब कोगेको पारोम केदा।''

''आबु हातु रेन होड़ोआ: काजि–कामि आबु बेगार चिलकाते पारोमो:आ? आबुदो जेताए काबु ताइकेना। नेआ दो का कामिआ: कामि होबा काना। जू सायोब काजिआइमे, का रेदो सांगि तेगेबु काजिआइआ, चि रोटेआ: हासा गाड़ा दो बुसु:डी रेगे होबाओ: लागातिङा। रोटेआ: एंगाते चाना:बु मेताइआ। सारे: बाडुइ: हातु रेन होड़ोको चाना:बु मेता कोआ। टोला–पाड़ा रेन होड़ोको चाना:को मेनेआ।''

''चाउकिदार ओड़ोए: सेनो: रुआड़ा जाना। हुड़िङ खोओन होबा लेन चि: हिजु: रुआड़ा लेना आ'र बुसु:डी होड़ोकोए: उदुबाद कोआ चि दारोगा सायोब आएआ: डिउटि रे साहाराते बाहारते: सेनो: जाना। बुसु:डी होड़ोकोआ: जी कागे बाराबारि जाना आ'र आको बी.डी.ओ. सायोबा: उपिस ते ओड़ो: मिसा सेनो: रुआड़ा को मोने केदा।''

''थाना आंकाआते इनकु उडुङको उडुङ लेन चि सानडाका रे सालगा हातु रेन मंगातराए को नाम ता:इआ। माँगातरए दो राँची रे: पाड़ाओ ताना। उकिलेने: मोनेआ कादा। एनमान कोरे आए:गे लाआ: उतारे: पाड़ाओआकाना। टोला पाड़ा रेन होड़ो कोलो: आएआ: जोआर–जागार बुगिन गे ताइकेन लेकाते इनि: सोबेन गेको आसाराए: तान ताइकेना चि जाँ इमताङ माराङ होड़ोए: बाइओगा मेनेआ: को आसाराए: तान ताइकेना। तिसिङ बुसु:डी होड़ोको आकोआ: सोंकोटो सोमाए रेको नाम ता:इचि आकोआ: जागार को जागारा:इआ। मंगातरए दो होनाङ चुटिआकान लेकाते हातु ते: हिजु: तान ताइकेना। मेनदो आकोआ: जागार आयुम केआते ओड़ो: राँची ते रुआड़ाए: मोने केदा। इनि: बुसु:डी होड़ो कोए: मेताद कोआ– ''आपे ताबु ओड़ा: ते रुआड़ा पे आ'र आञ गापा राँची रेन माराङ सायोब साते तेञ आऊइआ आ'र आपेता:ते लिङ हिजु:आ।''

''बात तो दुःख की ही है। बहुत ही बुरा हुआ। हमारा आदमी कल ही चल बसा। यहाँ पहुँचकर ब्लॉक डाक्टर ने कितनी कोशिश की लेकिन उस आदमी की सांस नहीं लौटी।''

''लगने को तो कल भी लगता था कि उसकी सांस खत्म हो गई थी लेकिन तब भी आशा तो थी ही।..... जो भी हो, जो होना था सो हो ही गया। अब तो यह दुःख हम सबको मिलकर ही सहना है। यहां का काम खत्म हो गया। उब उन्हें अपने आदमी की लाश ले चलनी चाहिए।'' कहते हुए बुसुःड़ी के लोग उठने लगे।

''जरा ठहरिये, अभी कुछ बात बाकी ही है।..... बात तो यही है कि कल रात को बहुत देर होने की वजह से रोटे की लाश साहब लोगों ने ही दफना दी।''

''हमारे गांव के आदमी का क्रिया-कर्म हमारे बिना कैसे होगा? हम में से तो कोई नहीं था। यह तो जो नहीं होना चाहिए वह हुआ है। जाओ, साहब को कह दो नहीं तो हम सब मिलकर कहेंगे कि रोटे का क्रियाकर्म हमारे गांव में होना चाहिए। हम रोटे की मां को क्या बताएंगे? अड़ोस-पड़ोस के लोग क्या कहेंगे?''

''चौकीदार फिर वापस चला गया। थोड़ी देर बाद वापस आया और उसने बुसुःडी वालों को बताया कि दरोगा साहब अपनी ड्युटी पर बाहर गये हुए हैं। बुसुःड़ी वालों को सन्तोष नहीं हुआ और फिर एक बार उन्होंने बी.डी.ओ. साहब के दफ्तर को जाने का निश्चय किया।''

''थाने के अहाते से वे निकले ही थे कि उन्हें रास्ते पर सलगा गांव का मंगतरए मिला। मंगतरए रांची में पढ़ता है। वकील बनना चाहता है। उस आस-पास वही सबसे ज्यादा पढ़ा लिखा है। अगल-बगल के लोगों के साथ उसका बात व्यवहार ठीक रहने के कारण सारे लोगों को उसे बड़ी आशाएँ थी कि किसी दिन वे बड़ा आदमी बनेग। आज बुसुःड़ी वालों को उनके संकट के समय मिला तो उन्होंने उसे अपनी बात सुनाई। मंगतरए कॉलेज बन्द होने के कारण अपने गांव आ रहा था। लेकिन उनकी बात सुनकर उसने राँची वापस जाने का निश्चय किया। उसने बुसुःड़ी वालों को बताया--- ''आप लोग घर वापस जाइये और मैं कल राँची के बड़े साहब को साथ लेकर आपके यहां आऊँगा।''

"चिमताङ बुसु:डी होड़ो को बी.डी.ओ. सायोब लो: जापागार मेनते को उड़ुङलेना इमताङ नो:गे आकोआ: पांचाइटिरेन मुखिया जोगो आ'र सरपंच नागो ताकिनो बिनगाते बी.डीओ. सायोबता: ते सेनो: किन मोने केदा। सेनो: जान निदा गे बी.डी.ओ. सायोब हापे-हापेते मिआद होड़ो आकिनताए: कुल लि:आ चि सेकेड़ाते-सेकेड़ा मुखिया आ'र सरपंच किन जेताए काको टोओरे लेका आञा: ओड़ा:ते किन हिजु:को:का, साइकालते किन सेनो: तान लेकाते बुसु:डी होड़ोकोआते इसु पुरा: सिदा किन तेबा: केदा। बी.डी.ओ. सायोब दो सेनो: जान गोटा निदा बोरोते एओन आङाकाद ताइकेन लेकाते: गोसो चाबाकान ताइकेना। जोगो आ'र नागो ताकिन आएआ: ओड़ा: किन तेबा: केद चि दुकु-सुकु कुपुलि जान तायोमते बी.डी.ओ. सायोब मेन केदा- "आञ चिलकान बालाए रेञ टोगाकाना मेनेआ: आबेन बेन इतुआन गेआ। ने बालाएआते चिलकातेञ पारोमो:आ मेनेआ: होरा नाम देंगा मेनते गे आबेन दोञ रा: ताद बेना। आञ रेआ: ते आबेनो चिमिनसा सोंकोटोआतेबेन बानचाओआ काना मेनेआ: दोबेन इतुआन गेआ। एनाको रेआ: बादाला रे निसुकान आबेन आञ बानचाओ ताञ बेन मेनेआ: गेञ रा: ताद बेना।"

"हे गोमके एना कोदो सोबेन लिङ टोओर जादा, आमताङ एन होरा रेआ: ठीकाञ आउ लेद रे मोद- चोकोए: हिसाब को नेसा:- हेनसा: लेन इमताङ आम काआ- रेदो होनाङ इदो चिमिन सिरमा रेआ: साजाइञ नाम केद तेआ:।" जोगो मुखिया नोरोमानगे: मेन केदा।

"आञो दाङ एन बानदा उर रिकारे सरकार सा:ते नाम लेन गोहोम कोरेआ: हिसाब बेएस लेका काञ ओम दाड़ि जाना। बुगिम बानचाओ कि:ञा, काआरेदो होनाङ जारुडुञ तोल जान तेआ:।" मेनते नागो सरपंच काजि केदा।

"हे मोदता:रे बु ताइन तान लेकाते हुड़िङ दो देपेंगा को: एनाङ। आबु काबु देपेंगा रेदो चिलकाते बाइउगा।" बी.डी.ओ. सायोब आकिना: जागार आयुम केआते बेएसे नो:ए टोओर केदा।

"हे नेआ दो सांगितेबु लेले गेआ।आलिङ मेना: लिङ सुमुङ आम जेताना: आलोम उड़ुगा। नेआगे मिआद चि जां लेकाते होनाङ एन गोए: जान होड़ोआ: एंगातेबु बाइ नो: ताइ रे। आएआ: एसेकार होने: ताइकेन लेकाते बुड़िआ दोड़ो: इसु पुरा: उड़ु: रे: टोगा काना। जाँ लेकाते आएआ: मोचा तेपेद जान रेगे आबु जेताए सागाते जेतान बोरोका ताइना।" मुखिया आ'र सरपंच बी.डी.ओ. सागाते टाका पोटोए: तेआ: होरा किन लेलाम केदा।

"आ'र हातु होड़ोको जाआ: को गोआके रेदो?" बी.डी.ओ सायोबा: बोरो कागे चाबाकाना।

"ओकोए गोआ ओमेआ? एना को सोबेन आलिङा: ती रे बागे

जिस समय बुसु:ड़ी वाले बी.डी.ओ. साहब से मिलने के लिये निकले करीब उसी समय उनके पंचायत का मुखिया जोगो और सरपंच नागो ने भी अलग से बी.डी.ओ. साहब से मिलने का निश्चय किया। पिछली रात को बी.डी.ओ. साहब ने चुपके से एक आदमी उनके यहां भेजा था कि मुखिया और सरपंच जल्दी से जल्दी लोगों की नजरों से बचकर हमारे घर आएं। चूंकि वे साइकिल से आ रहे थे इसलिए बाकी बुसु:ड़ी वालों से बहुत पहले पहुँचे। बी.डी.ओ. साहब पिछली सारी रात डर के मारे सो नहीं सके थे इसलिए वे बिल्कुल मुरझाये हुए थे। जोगो और नागो के उनके यहां पहुँचने पर दु:ख–सुख की बातें होने के बाद बी.डी.ओ. साहब ने कहा— "आप लोगों को अच्छी तरह पता है कि इस समय मैं किस प्रकार के संकट में फंसा हूँ। इस संकट में मैं किस प्रकार पार पाऊंगा इसी का रास्ता खोजने में आप से मदद मिलने की आशा में ही आप लोगों को बुला भेजा है। उन सबके बदले आप लोग मुझे इस बार बचाइयेगा इसी उम्मीद से मैं आप लोगों को बुला भेजा है।"

"हां सर, वह सब हम अच्छी तरह समझते हैं। पिछली बार जब मैंने उस बांध का ठेका लिया था हिसाब में थोड़ी गड़बड़ी होने से अगर आप नहीं होते तो न जाने मुझे कितने वर्षों की सजा मिलती।" जोगो मुखिया ने विनम्रता पूर्वक कहा।

"मैं भी तो उस बांध को कोड़वाने में सरकार से मिले गेहूँ का हिसाब ठीक से नहीं दे सका। अच्छा हुआ कि आपने मुझे बचा लिया नहीं तो मै अवश्य ही बंध जाता।" नागो सरपंच ने कहा।

"हां, चूंकि हम एक जगह रहते हैं इसलिये जरूरी है कि हम एक दूसरे को मदद करें। अगर हम ऐसा न करें तो काम कैसे चलेगा।" बी.डी.ओ. साहब को उनकी बातों को सुनकर थोड़ा अच्छा लगा।

"हाँ, इस स्थिति का सामना तो हम सब मिलकर ही करेंगे। एक बात, कि अगर किसी प्रकार उस मृत आदमी की मां के लिये कुछ व्यवस्था होती तो बड़ा अच्छा होता। उसका एकलौता बेटा होने के कारण बुढ़िया बहुत ही दुःख में पड़ी है। किसी प्रकार अगर हम उसका मुंह बन्द कर सकें तो हमें किसी भी तरफ से किसी भी प्रकार का डर नहीं होगा।" मुखिया और सरपंच ने बी.डी.ओ. से रुपये ऐंठने का मौका देखा।

"अगर गांव वालों ने गवाही दी तो?" बी.डी.ओ. साहब का डर अभी खत्म नहीं हुआ है।

"कौन गवाही देगा? वह सारा आप हमारे ऊपर छोड़

ताम। आलिङ सोबेन मिआद–मिआद तेलिङ बाइ कोआ। आलिङ लेका तेदो नेरे निमिएङ काजिआः मेनाः चि रोटे आएआः मोनेतेगे हाइको गोएः सेन केना। बी.डी.ओ. सायोब ताकिन सरकारी बानदा लेल नोः लेकाते बुसुःडी किन हिजुः लेना आ'र एन रेआः बानदा लेल सेन केन इमताङ रोटे दाः रे डोबेआ कान किन नाम लिःआ। सोंजोको जाआएः बानचाआओःआ मेनते आकिन इनिः आसपाताल तेकिन इदिकिःआ। मेनदो एन होड़ो होरा रेगेः चाबाकान ताइकेना।''

''अच्छा मार तोबे एनका गे हेइ।'' बी.डी.ओ. सायोब खूब रासिका किःआ।

एनलेका जापागार जानचि जोगो मुखिया आ'र नागो सरपंच ताकिन हातु किन रुआड़ा लेना। एन हुलाङ निदा हापे–हापेते हातु किन होनोर जाना आ'र मूल–मूल होड़ो को बी.डी.ओ. सायोब लोः जापागार केन लेका आकिन साः रेकिन जामा केद कोआ। रोटेआः एंगाते राटि ''आबेन चिलका बेन काजीआ एनका गे मार'' मेनतेः हेआद किना।

''गापातेरे नेःगे तिकिनोः लेका रे डी.सी. सायोबाः गाड़ि बुसुःडी तेबाः लेना। सायोब लोः मंगतरएओएः ताइकेना। मंगतरए डी.सी. सायोब सोओजे सरकारी बानदा ताःए इदि किःआ। ओकोताःरे रोटे हाइकोएः जालोम केना एनताः कोएः इदि बेड़ा किःआ। डी.सी. सायोब हातु रेन मिआद बारिआ होड़ोको रोटेआः बारे रेः कुलि बेड़ा केद कोआ आ'र एन हुलाङ चिलकातेः गोएः जाना एनाएः कुलि केना, मेनदो ओकोए गेः कुलि केद कोआ इनिः गे ''आञदो पीटि तेञ सेन केना'' मेनेआः गेः जागार केदा। टुण्डु रे मंगतरए डी.सी. सायोबेः मेताःइआ चि कामिदो हातु रेन होनको कुलि लेकोरे बाइउगा। नेआ सेणा सारतेगे कामिः ओम केदा आ'र डी.सी. सायोब इदो चानाःको मोदपुराः आएआः बही रे ओलकेदा। इसु खोओन होबा जानचि डी.सी. सायोब आ'र मंगतराय किन रुआड़ा ताना। जागार इदि ताना किन। डी.सी. सायोब गाड़ि बिताराआतेगे होरा को, लोयोङ को, पिड़ि कोएः लेंल इदि ताना।

''ने बाबा होबा गिड़िआिकान लोयोङ कोदो ओकोएआः को? डी.सी. सायोब कुलि ताना।

''आलेआः मुखिया जगन्नाथ साहुआः तानाः। एन बानदाआते लातार साः जे लेलोः तानाः कोदो आएआः कोगे।

''नामिनाङ ओते मोद होड़ोआः गे मेन लेंरे दो। ......हातु होड़ो कोआः ओते कोदो कोसाः रेआ?''

''ओड़ोः दो बानोः। पिड़ि जापाः तेआः को हातु होड़ोको सी ताना। तारा दो जे ओते ताइकेना, ने साउताः रेगेको दुबा कादा आ'र इनिआः गेको कामि ताना।''

दिजिएगा। हम सब लोगों को रास्ते पर लायेंगे। हमारी राय में तो यहां इतनी ही बात कहने की है कि रोटे अपने ही मन से मछली मारने गया। बी.डी.ओ. साहब और उसका साथी सरकारी बांध देखने के लिये बुसुड़ी गये हुए थे और उसी समय उन्होंने रोटे को पानी में मरा हुआ पाया था। शायद वह किसी तरह बच जाय, यह सोचकर वे उसे अस्पताल ले गये, लेकिन वह आदमी रास्ते में ही मर गया था।

''अच्छा तब ऐसा ही हो।'' बी.डी.ओ. साहब को उनकी बात सुनकर बड़ी खुशी हुई।

इस तरह की बातें करने के बात जोगो मुखिया और नागो सरपंच गांव को वापस आए। उस रात वे चुपके-चुपके सारे गांव में घूस आये और बी.डी.ओ. साहब की बात के अनुसार गांव के मूल-मूल लोगों को अपनी ओर मिला लिया। रोटे की मां तक ने 'आप जैसा कहियेगा वैसा ही मैं भी कहूंगी' कहकर उनके साथ अपनी सहमति प्रकट की।

दूसरे दिन करीब दोपहर को डी.सी. साहब की गाड़ी बुसुःड़ी पहुँची। साहब के साथ मंगतरए भी था। मंगतरए ने डी.सी. साहब को वह जगह दिखाई जहां से रोटे ने जाल फेंका था। डी.सी. साहब ने गांव के एक दो लोगों से रोटे के बारे में पूछा और यह जानना चाहा कि वह कैसे मरा, लेकिन जिससे भी उन्होंने पूछा उसने सिर्फ यही कहा कि— ''मैं तो उस दिन बाजार गया हुआ था।'' अन्त में मंगतरए ने कहा कि काम गांव के बच्चों से पूछने पर बनेगा। मंगतरए की यह बुद्धि सचमुच काम कर गयी और डी.सी. साहब ने न जाने क्या- क्या बहुत सारी अपनी बही में लिख लिया। बहुत देर के बाद डी.सी. साहब और मंगतरए वापस आ रहे हैं। वे आपस में बातें करते जा रहे हैं। डी.सी. साहब गाड़ी के भीतर से ही रास्ते और खेत-मैदान देखते हुए जा रहे हैं।

''ये जिनमें धान खूब हुआ है, किनके खेत हैं?'' डी.सी. साबह पूछ रहे हैं।

''ये खेत हमारे मुखिया जगन्नाथ साहू के हैं। उस बांध के नीचे जो दिखाई दे रहा हैं वह सारा उन्हीं का है।''

''इतनी सारी जमीन सिर्फ एक आदमी की।.... गांव वालों की जमीन कहां है?''

''और जमीन नहीं है, गांव के लोग टॉड़ से लगी जमीन जोतते हैं। कुछ लोगों ने अपनी सारी जमीन इसी साहू के यहां बंधक दी है और उसी का काम करते हैं।''

दागाड़ा–दुगुड्डु होराते डी.सी. सायोबाः जीप गाड़ि माणि–माणिते सेनोः ताना। होरा ओकोताः रे जां लेका गे बाइआ काना। कोताः रे पुल बुःआकाना आ'र पाइप एमान को एनताः रेगे थेर गिड़िआ काना। ओकोताः रे दारु–डुटु को होरा ताला कोरे गे बागेआ काना।

"ने होरा दो पंचाइटि सागाते बाइलेना चि डिसट्रिक बोर्ड सागाते? डी.सी. सायोब कुलि ताना।"

"पंचाइत सागातेगे। आलेआः मुखिया गे बाइरिका लाः।" मंगतराय डी.सी. सायोबेः उदुबाइताना।"

सेनोः ताना किन, सेनोः ताना किन। डी.सी. सायोब उडुः ताना...... "चिलकाते हातु होड़ोको रोटेआः गोनोएः बारे रे जेतान जागार काको जागार ताना?"

"नेआ बिर नेताः कोदो हालि–हालि गेको माः लेद लेका लेलोः ताना होड़ोकोआः चि सरकाराः? डी.सी. सायोब कुलि ताना।"

"नेआ दो गोमके सरकाराः गे। मेनदो कूप दो मुखियाः साराते कोड़ागे आउलाः। जेतान जो दारु राटि काएः बागे केदा।" नेकागे जापागार तान लोः दो डी.सी. सायोबाः जीप गाड़ि काचा सांडाकाआते पाका सांडाकारे तेबाः जाना। गाड़ि सापेल होरा रे लेम–लेम तान चालाओ ताना। जागार तान जागार तान पोंका नाम केआते मंगतराय डी.सी. सायोबेः कुलि जाःइआ– "आते गोमके ने होड़ो कोआः मामला दो चिलकाओःआ।"

"निमताङ दो चिलकाञ उदुब दाड़िआ मेआ। बी.डी.ओ. सायोब लोः जापागार का होबा काना। हातु रेन होड़ो कोलोः जापागार मेनतेञ हिजुः लेना, मेनदोम लेल लेद गेआ, सोबेन कोआः मोचा तुकुइःआ काना। सेणा नोः लेलोः तान को राटि जेताओः काको जागार केदा।" डी.सी. सायोब इसु दुकुतेः जागार जादा।

आञ लेकाते दो मुखिया आ'र सरपंच जारुडुते जारुडु किन कुलिओःका। इनकिनाः दुब जाआरु बी.डी.ओ. सायोब लोः इसु पुराः गे मेनाः। बी.डी.ओ. सायोब निकिन बागे किआते ओड़ोः जेताए काको बानचाओ दाड़िआइआ। आ'र निकिनो गे बी.डी.ओ. सायोबः होराते किन मोटोआ कान लेकाते आएः ओकोआएः काजीआ एनागे किन रिकाएआ। आञ लेकाते दो ने सोमाए मुखिया आ'र सरपंच ताकिन बी.डी.ओआः गे किन कामि ताना। बोरोते चा लोओबोते होड़ोकोआः मोचा तोलाकान लेका बाइआ काना।"

"नेआ गेदाङ माराङउतार दुकु रेआः काजि दो, हातु रेन होड़ोको मोचा ओटाः काको दाड़िताना। जिला बितार रे कोतेगेञ सेना काना सोबेन ताः नेः नेका गेञलेल केदा चि आबुआः होड़ोको सोबेन ताः नेः नेका गे मोद बार होड़ोआः पासे तेको पासे.....

उबड़-खाबड़ रास्ते पर डी.सी. साहब की जीप धीरे-धीरे चल रही है। सड़क कहीं-कहीं पर पूरी नहीं हुई हैं। कहीं पुल टूटा हुआ है और पाईप इत्यादि वहीं पड़े हुए हैं। कहीं-कहीं कटे हुए पेड़ों के टुकड़े रास्ते के बीच में पड़े हुए हैं।

"यह रास्ता पंचायत की ओर से बना था या डिस्ट्रीक्ट बोर्ड की ओर से?" डी.सी. साहब पूछ रहे हैं।

"पंचायत की ओर से ही! हमारे मुखिया जी ने ही बनवाया था।" मंगतरए डी.सी. साहब को बता रहा है।

वे दोनों जा रहे हैं जा रहे हैं। डी.सी. साहब सोच रहे हैं — "गांव वाले रोटे की मृत्यु के बारे में क्यो कुछ भी बात नहीं कह रहे हैं।"

"यह जंगल, इसके आस-पास हाल ही में कटा हुआ सा लगता है। यह जंगल गांव के लोगों का है या सरकार का?" डी.सी. साहब पूछ रहे हैं।

यह तो सरकार का ही है लेकिन कूप को मुखिया के साले ने ही लिया था। फल वाले वृक्ष तक उसने एक भी नहीं छोड़े।" इसी तरह बातें करते हुए डी.सी. साहब की जीप गाड़ी कच्चे सड़क से पक्की सड़क पर आयी। गाड़ी समतल रास्ते पर निरावरोध चल रही है। बातें करते-करते मंगतरए ने मौका पाकर डी.सी. साहब से पूछा— "सर, इन लोगों के मामले का क्या होगा?"

"अभी मैं कैसे बता सकता हूँ। बी.डी.ओ. साहब के साथ मेरी बातचीत नहीं हुई है। मैं गांव वालों से बात करने के लिये आया था लेकिन तुम ने देखा ही है, सबके मुंह बन्द हैं। कुछ समझदार लगने वाले लोगों ने भी कुछ नहीं कहा।" डी.सी. साहब बड़े दु:ख के साथ कह रहे हैं।

"मेरा विचार है कि मुखिया और सरपंच निश्चित रूप से पूछे जाएं। बी.डी.ओ. साहब के साथ इनका काफी मेल-जोल है। बी.डी.ओ. साहब को इन्हें छोड़कर और कोई नहीं बचा सकता है, और वे दोनों भी चूंकि बी.डी.ओ. साहब के कारण बने हैं, इसलिये वह जो कहेगा वही करेंगे। मेरे ख्याल से मुखिया और सरपंच इस समय बी.डी.ओ. साहब का ही काम कर रहे हैं। डर से कहें या लोभ से, इस समय लोगों का मुंह मानो बांध दिया गया है।"

"यही तो सबसे बड़े दु:ख की बात है। गांव के लोग मुंह खोलने में असमर्थ हैं। जिले भर में जहां भी जाता हूँ मैं देखता हूँ कि हमारे लोग इसी तरह सभी जगह एक दो व्यक्तियों के फांस में फंसे हुए हैं। जब तक

आकाना। चिमताङ जाकेद आबुआ: होड़ोको आको सानातान लेका सारते जागार काको जागार दाड़िआ: इमताङ जाकेद गुना ताद होड़ो दो बेएसे लेका काए: साब केटे गो:आ। एन लेकाते आमेम लेल जाद गेआ चि आञ लेकान होड़ोकोआ: कामि चिमिनाङ हामबाला।'' डी. सी. सायोब काजि ताना।

''हे एना दो हेएगे। मेनदो नेआओ हेएगे चि ने बोरोआकाद होड़ोकोआ: जीआते बोरो हार गिड़ि रेआ: कामि सरकार गे कामि ले एनाङ। चिमताङ जाकेद हातु होड़ोकोआ: जी रे नेआ बोरो ताइना चि ने मुखिया ले विरोध कि: रे आले बानचाओ को जेताए बांकोआ, इमताङ जाकेद सारते काजि दो चेतान ते का राकाबो: गेआ। एना मेनते आञ सानाङ ताना चि हातु होड़ो कोलो: आम जागार रुआड़ा को:मे आ'र आकोआ: जीआते ने बोरो को पारकाए रेआ: कोसिस लेम।''

''बार चाण्डु तायोम ते नेआ आयुमजाना चि रामपुर रे एन बी.डी.ओ. सायोबा: नुकुरि चाबा जाना आ'र इनि: एटा: ता: रे बादिलि जाना। नेआओ आयुम जाना चि रोटेआ: एंगाते नातेन चिमिन लेका सरकार सागाते टाका नामो: रेआ: हुकुम हिजु: लेना, मेनदो एन टाका को होरा कोरे गे आद चाबा जाना।

हमारे लोग अपनी इच्छानुसार सच बात नहीं कह पायेंगे तब तक दोषी व्यक्ति ठीक से पकड़में नहीं आयेगा। इस तरह से तुम देखते ही हो हमारे जैसे लोगों के लिये काम करना कितना कठिन है।'' डी. सी. साहब कह रहे थे।

''सो तो है ही, लेकिन यह भी है कि डरे हुए लोगों के मन से डर भगाने का काम सरकार को ही करना पड़ेगा। जब तक गांव वालों के मन में यह डर रहेगा कि हमें बचाने के लिये कोई नहीं है तब तक सत्य ऊपर नहीं आयेगा। इसलिए मैं चाहता हूँ कि गांव वालों के साथ आप फिर से बात करें और उनके मन से यह भय दूर करने की कृपा करें।''

दो महीना बाद ये सुना गया कि रामपुर में उस बी.डी.ओ. की नौकरी खत्म हो गई है और उनकी तबदीली कहीं दूसरी जगह हो गई है। यह भी सुना गया कि रोटे की माँ के लिये कुछ रूपये सरकार की ओर से मिलने का हुक्म हुआ था, परन्तु वह रूपया रास्ते में ही गुम हो गया।

कुलाए कोआ: बालाए

''मिसा मिआद बिर रेन कुलाए को मिआद माराङ दुनुब को रा: केदा। दुनुब रा: रेआ: मातालाब चि चिलकाते आबु कुला कोआ: मोचाआतेबु बानचाओ दाड़िना। जानाओ कुलाको कुलाए को ताइन सा: बिरते को हिजु: इदि तानगेको ताइकेना आ'र माणि–माणिते कुलाए कोको जोम चाबाजादको ताइकेना। ने लेकाते सारेगाकान कुलाए कोआ: जीरे निमिनाङ हामि: बोरो बोलो जाना चि आको बानचाओन तेआ: होरा नानाम को ठानाओ केदा। तारा को मेन केदा चि आबु ने बिराआतेगे बु निर उतारा। मेनदो नेआओ को आटाकार केदा चि आको बिर रेआ: एन कोचा रे सोबेन सागाते कुला कोतेगे को कोटोङा कान ताइकेना। ने सेणाओ कामि काए: ओमेआ: ठोओर जाना। तारा खाँआट नो: को मेनकेदा– का, बोरो लेरे ओड़ो: कामि का चालाओ:आ। आबु इनकु सोओजे गेबु काजिआ कोआ चि आपे आले इसु पुरा: पे बालाए जाद लेआ। निमिन दिन जाकेद ले साआतिङ केद गेआ मेनदो ओड़ो: काले मानातिङा। आकोआ: कानाजि ताइकेना चि सांगि–पाति लेकोरे आबु मिआद–मिआद ते सोबेन कुलाको बु गोए: चाबाकोआ। आको इमिनाङ काजि जालो: गे मिआद हाड़ाम कुलाए: मेन केदा– ''ओकोरेपे आयुमा कादा चि सांगि–पाति तेरेओ कुलाए को कुला को गोए:आका:इआ चा बिराते को हार गिड़िआ का:इआ?'' माणि–माणिते एन खाआंटे कुलाए को गोसो चाबा गिड़िजाना आ'र को तिरुब गिड़ि केदा। टुण्डु रे मिआद सेणा नोगान कुलाए काजि केदा चि आबु तालारेन मोयोद पोकोतो नो: कुलाए कुला लेका गे बाइ लिआते आबु कुला कोता: भेद आउ लेकाबु कुलिआ। इनिआ: होरा तेगे पाता बु लागाओ लेआ चि चिलकाते आबुआ: कामि बाइउगा।

''नेआ काजि सोबेन हुड़िङ माराङ कुलाए को पातिआ जाना। मेन्दो नेआ सावाल ताइकेना चि चिलकाते एन कुलाए कुला लेकाए: लेलोगा। नेआ रेआ:ओ सांगि पाति तेको उपाए केदा। मिआद माराङनो: कुलाए गोटा सिरमा खूब को खिआओ– पिआओ कि:आ। निमिनाङ जाकेद चि चारा एमान का नामो: तान रे आपान चारा बानचाओ केआते राटि इनि: को ओमा:इआ, एनका–एनकाते एन कुलाए एटा: कुलाए कोआते इसु पुरा:गे: माराङजाना। एन सिरमागे सोंजोको रेआ: काजि चि सेंदेरा तान रे होड़ोको मिआद कुला

खरगोशों का कष्ट

एक बार एक जंगल के खरगोशों ने एक बड़ी सभा बुलाई। सभा बुलाने का उद्देश्य था कि हम कैसे सिंहों के मुंह से बच सकेंगे। दिन-दिन उस जंगल के सिंह खरगोशों के रहने की ओर आ रहे थे और धीरे-धीरे खाकर खत्म करते जा रहे थे। इस तरह से बचे हुए खरगोशों के मन में इतना भय समा गया कि उन्होंने उनसे बचने का रास्ता निकालने का निश्चय किया। कुछ ने कहा कि हम इस जंगल से बिल्कुल भाग जाएं। किन्तु उन्होंने यह भी अनुभव किया कि उनके लिए भागकर छिप जाने के लिए कोई और अन्य जगह नहीं थी। वे जंगल के उस कोने में सब ओर सिंहों से ही घिरे हुए थे। कुछ जोशिले खरगोशों ने कहा— नहीं, अब डरने से काम नहीं चलेगा। हम सीधे जाकर उनसे कहें कि तुम हमें बड़ा कष्ट दे रहे हो। इतने दिनों तक हम सहते रहे लेकिन अब से हम मानने वाले नहीं हैं। उनका कहना था कि सब मिलकर हम एक-एक करके सब सिंहों को मारकर खत्म कर देंगे। उनके ऐसा कहते ही एक बूढ़े खरगोश ने कहा— तुमने कहा सुना है कि बहुत सारे खरगोशों ने मिलकर किसी बाघ को कभी मारा है, या जंगल से भगाया है? धीरे-धीरे वे जोशीले खरगोश मुरझा गए और उन्होंने अपना सिर झुका लिया। अन्त में एक किंचित बुद्धिमान खरगोश ने कहा कि हम अपने बीच से एक मजबूत खरगोश को सिंह के वेश में सिंहों के यहां उनका भेद लेने के लिए भेजें। उसी के द्वारा हम पता लगाएंगे कि कैसे हमारा काम बनेगा।

यह बात सभी खरगोशों ने मान ली। लेकिन सवाल था कि कैसे वह खरगोश एक सिंह की तरह दिखाई दे। इसके लिए भी उन्होंने सब ने मिलकर एक उपाय सोचा। एक कुछ बड़े खरगोश को उन्होंने साल भर तक खूब खिलाया-पिलाया। इतना तक कि चारा न मिलने के समय भी उन्होंने अपना खाना बचाकर उसे खाने के लिए दिया। इस तरह से वह खरगोश अन्य खरगोशों से बहुत बड़ा दिखाई देने लगा। उसी वर्ष, संयोग की बात है कि शिकार करने के

को तुञ टो: कि:आ मेनदो गोजो: सिदा रे आए: लाता ते: बोलो जाना आ'र एन लेकाते सेंदेरा तान होड़ोको एन कुला काको नाम कि:आ। इनकु सांगि पातिते इनि: को गो: आउ कि:आ। आ'र को पोटा: कि:आ। इनिआ: डाटा को आ'र सारसार को सोबेन को ओचो: कि:आ आ'र एना को सोबेन एन कुला कोता: कुली कुलाए को तुसिङ कि:आ। कुला कोआ: सामपोड़ो को तुसिङ केआद एन कुलाए नाणे: रेआ: डाड़ि दा: रे लेल केना आनादो सारतेगे कुला लेका गे: लेल जाना। हुड़िङ दिन नेआ साना पाना कोए: तुसिङ हेओआ केद चि इनि: कुला को ताइन तान बिरते: सेनो: जाना।

एटे: रे नावा कुला आकोआ: बिररे लेल कि:आते कुला कोआ: जी रे हुड़िङ लेका सनदेह होबा जाना मेनदो इनि: आएआ: हातु दिसुम को नेका जुगुतु, जुगुतुते: उदुब केदा चि इनिआ: काजिको पातिआ जाना। इनि: उदुबाद कोआ चि आले आपेजामा कुला कोगे मिआद चारा दाणातान दाणा तान आले एटा: बिर तेले सेन आदाकान ताइकेना। सेनदेरा कोआ: बोरोते आले आकोआ: पुरना बिरते काको हिजु: रुआड़ा दाड़ि जाना। ना: दो एनता: रेगेले डी डुंगुरि केदा। इनि मेताद कोआ चि आञ आपान पुरना हागा होनकोलो: लेपेल लेका नो: गे आपेता:तेञ हिजु:आ काना। कुलाएआ ने हेड़ेम जागार आयुम केआते कुला को सिदा हागा दुलाड़ा तेको लुम चाबा जाना। इनि: ओकोतेगे: सोनो: जाना, इसु सुगाड़ा ते: जोगाओ जाना।

कुलाए एन कुलाको ताला रे ताइन तान लो: आ'र होनोर बेड़ा तान लो: नेआए: मुंडिकेदा चि कुला कोआ: जी रे कुलाए को नागेन चिमिनाङ हिलाङ हेनदो पेरे:आ काना। इनि: नेआए: मुंडिकेदा चि इनकु कुलाए को चिलका पोसोड़ा तेको लेल जाद कोआ। एन कुला को लेकाते दो माणि-माणि ते सोबेन कुलाए को जोम चाबाओ:का।

कुलाए नेआ जागार को सोबेन जी रे: दो केदा आ'र मुसिङ हापे-हापेते एन कुला कोआ: बिराते: निर जाना आ'र आएआ: हागा होन कोता: ते: रुआड़ा जाना। आपान हागा इसु दिन तायोमते: रुआड़ाकाना मेनेआ: काजि आयुम केआते हुड़िङ माराङ सोबेन कुलाए को जामान जाना आ'र नावा जागार इतुन नागेन लुतुर को चुडुकुद केदा। कुला कोरे कुलाए-पोसोड़ा पेरे:आकाना, मेनेआ: आयुम केआते कुलाए को इसु पुरा: खाएराओ केद कोआ। "ना: दो आबु नागेन मिआद एटा: बिर नामले एनाङबु टीकिओ:आ। ने कुला को तालारे ताइ ताइते आबु नांगेन जेतान सुकु बानो: जाना।" मेनेआ:गे सोबेन को काजि केदा। नेआ को लेल केआते सालाआकान कुलाए मिआद माराङ दुनुबे: रा: केदा आ'र एनरे इनि: आपान हागा को नांगेन मिआद बिर कुला कोआ: राजआते बिनगाए रेआ: काजि: काजि केदा। इनि: आकोए: उदुबाद कोआ चि आञ आबुआ: जागार को इदि केआते कुला कोता:ञ सेनोगा आ'र आकोआ: राजा: सानामाङ रेञ दोएआ।

समय लोगों ने एक सिंह को तीर से लगाया किन्तु मरने के पहले ही वह अपने खोह में घुस गया और इस तरह शिकारी उसे नहीं पा सके। वह सिंह खोह में ही मर गया। कैसे-कैसे खरगोशों ने उस सिंह को पाया। सब मिलकर वे उसे ढोकर लाये और उन्होंने उनकी खाल उखाड़ी। उसके दांत और नाखून उखाड़े और उन्हें सिंहों के यहां भेजे जाने वाले खरगोश को पहना दिया। सिंहों का पहनावा पहनकर उस ने जब डाड़ी के पानी में देखा तो उसे लगा कि वह सचमुच ही एक सिंह की तरह दिखाई दे रहा था। कुछ दिनों के बाद जब उसे यह पहनावा पहनने की आदत हो गई तो वह सिंहों के जंगल में चला गया।

शुरु में एक नये सिंह को अपने जंगल में पाकर सिंहों को कुछ संदेह हुआ किन्तु उसने उन्हें अपना नाम गांव इस तरीके से बताया कि उन्होंने इसकी बात मान ली। उसने उन्हें बताया कि हम तुम्हारे ही दल के सिंह हैं। खाने की खोज में एक दूसरे जंगल में भटक गये थे। शिकारियों के डर से हम अपने पुराने जंगल में वापस नहीं आ सके। अब तो हमने वहीं अपना गांव-ग्राम बसा लिया है। उसने उन्हें बताया कि मैं अपने बिछुड़े भाइयों के साथ मिलने के तौर पर ही आप लोगों के पास आया हूँ। खरगोश की यह मीठी बात सुनकर सिंह भ्रातृ-प्रेम से द्रवित हो गए। वह जहां भी गया, बड़ा सम्मानित हुआ।

सिंहों के बीच रहते हुए और विचरते हुए खरगोश को मालूम हुआ कि सिंहों के मन में खरगोशों के प्रति कितनी घृणा भरी हुई है। उसे मालूम हुआ कि किस तरह सिंह खरगोशों को हीन दृष्टि से देखते हैं। उन सिंहों के अनुसार ती धीरे-धीरे सारे खरगोश खाकर खत्म किये जाएं।

खरगोश ने ये सारी बातें मन में रखीं और एक दिन चुपचाप सिंहों के जंगल से भाग गया और अपने भाई बन्धुओं के पास वापस आया। हमारा भाई बहुत दिनों के बाद वापस आया है ये सुनकर छोटे-बड़े सभी खरगोश जमा हुए और नई बात सुनने के लिए उन्होंने अपने कान खड़े किये। सिंहों के मन में खरगोशों को हीन दृष्टि से देखने की भावना भरी है ये सुनकर खरगोशों को बड़ा क्रोध आया। 'अब तो अपने लिए एक अलग जंगल प्राप्त करने पर ही हमारा कल्याण सम्भव है। इन सिंहों के बीच रहते-रहते हमारे लिए कोई सुख नहीं रह गया।' यही सब ने कहा। यह सब देखकर चुने हुए खरगोश ने एक बड़ी सभा बुलाई और उसमें उसने अपने भाईयों के लिए सिंहों के राज्य से एक अलग राज्य बनाने की बात कही। उसने उन्हें बताया कि मैं हमारी बातों को लेकर सिंहों के पास जाऊंगा और उनके राजा के सामने रखूंगा।

एन ताला रेगे कुला को मुंडिकेदा चि एन हालिरे आकोता: हिजु: लेन कुला ओड़ो: जेताए दो का एन कुलाए गे: ताइकेना। हिजु: तुपुरुब दाल रेन आगुआ एन कुलाए आकोआ: सोबेन भेएदे: इतुआन लेकाते खींसिते कामि आउ काकोआ: जाना चिआ: चि आको बिर रेन एटा: जीव-जानतु कोता: बादनाआमो: रेआ: बोरो ताइकेना, एना मेनते आको सेणा खारचा को मोने केदा। मुसिङ आको एन कुलाए को रा: कुल कि:आ। नेण्डाकान हुलाङ कुलाए आकोता: ह़िजु:लेन इमताङ कुला कोआ: राजा आए: गे एन कुलाए दारोमे: उडुङ जाना। कुला कोआ: सभा रे इनि: आपान जापा: रेगे: दुब कि:आ। कुलाए कुला कोआ: राजा लेकागे जोम नू आ'र सोबेना:गे: नाम केदा। सिदा हिनि:जु: रे चिमिनाङ माइन जाइन होबा लेना एनाआते ओड़ो: पुरा:गे निसुकान दोए: सालांगि जाना। एन कुलाए कुला कोआ: राजा लो: ताइ ताइते आए: लेकागे सुकु रे ताइने: हेओआ जाना। माणि-माणिते जी बितार रे: सानाङ जाना चि नेकागे होनाङ जाओगे सुकु रेञ ताइन रे। मिसा-मिसा इनि: उडु: रुआड़ा: चि चिलका आको दिसुम रे रेंगे: साबाङगे: ताइन ताना आ'र चिलका आएआ: सोबेन हागा को बालाए ताना। मेनदो इनि: निमिनाङ सुकुआरि हेओआ जाना चि कुला कोआ: राजा कोता: चाना: चिकाए: हिजु: लेना मेनेआ: राटि:ए रिड़िङ केदा। नेआको मुंडि केद चि कुला कोआ: राजा इनिए: रा:कुल कि:आ। कुलाए होपोरेन जान चि: कुलि कि:आ- "मार तोबे चिलकाते नामिनाङ सांगिनतेम हिजु:आ काना?" आड़ा: उडु: तान लो: कुलाए आएआ: जागारे: जागार केदा। "हे मिआद दो नेआगे चि आञ आमताङ आपे लेका बाइको:आते आपेआ: भेएद आगुञ हिजु: लेना। नेआ मोद लेकाते दो का ठीकि कामिञ कामि केदा। आञ एना रेआ: मापिञ आसि ताना। मोद लेकाते दो आञ ने कामि रे जेतान दोओस का होबा:ओ लागातिङा, चिआ: चि आले कुलाए को सारतेगे आमा: राज रेले बालाए ताना। आले ताइन मुलि माणि-माणिते इसु किसिन रेन बिर जानवार को बोलो इदि ताना आ'र इनकु रे लाआ: उतार दो आले जोम तेगेको नाम जाद लेआ। आले माणि-माणितेले आद चाबा उतार ताना आ'र जेएले सारे:आ काना इनकु निदा आ'र सिंगि बोरो रेगेले ताइन ताना।" कुला कोआ: राजा कुलाए नेआ कोगे: जागारेआ मेनेआ: सिदा रेगे: ठोओरा कादे: ताइकेना। आए: नेआओए: उडुगा काद ताइकेना चि कुलाए चिलका जाबाब ओम लागातिङा- "हे आपे आलेआ: राज रे हुड़िङ लेका दोपे बालाए तान गेआ, मेनदो नेआओ मेना: चि आपे राज चालाओ कामि रे जेता इमताङ कापे टोगाकान लेकाते बिनगाते बिर ओमापेरेओ राज दो कापे चालाओ दाड़ि लेकाञ आटाकारेआ। एना मेन्ते बिनगाए सिदा आपे दिसुम चिलका चालाओ लागातिङा मेनेआ: इतुन रेआ: दारकार मेना:। ना: दो, आम काजि केद लेकाते, आपे तालाआते इसु पुरा: कुलाए को राज-पाट चालाओ कामि रेबु आचु कोआ, कुला कोआ, राजा ओड़ो:गे होनाङे: जागार इदि गेआ मेनदो एन ताला रेगे कुलाए काजि कोटोङ केदा- "हों, मोद टुङेञ जागार लेआ........। मापाराङ दिसुम चालाओ रेआ: कामि दो जेता इमताङ काले कामिआ कादा, मेनदो ओड़ा: दुआर आ'र हातु-टोला चिलकाते बुगिनो:आ मेनेआ: दोले इतुआनगेआ। दिसुम जिमा जान रेदो

इसी बीच सिंहों को पता चला कि हाल ही में उनके पास जो सिहं आया था वह और कोई नहीं वही खरगोश था भावी विरोधी दल का नेता। खरगोश चूंकि उनका सारा भेद जानता था इसलिए उन्होंने क्रोध से काम नहीं लिया। क्योंकि उन्हें जंगल के दूसरे जानवरों के बीच बदनाम होने का भय था। इसलिए उन्होंने बुद्धि से काम लेने का निश्चय किया। एक दिन उन्होंने उस खरगोश को आमन्त्रित किया। नियत समय पर जब खरगोश उनके पास आया तो सिंहों के राजा स्वयं उसका स्वागत करने को बाहर आया। सिंहों की सभा में उसने उसे अपने ही पास में बैठाया। खरगोश को सिंहों के राजा की ही तरह खान–पान की सारी चीजें मिली। इस बार उसे पहले से भी अधिक मान–सम्मान मिला। खरगोश को सिंहों के राजा के साथ रहते–रहते उसी की तरह सुख में रहने की आदत पड़ गई। धीरे–धीरे वह मन में चाहने लगा कि काश! मैं हमेशा ऐसा ही सुख में रहता। कभी–कभी वह सोचता कि कैसे वह अपने देश में गरीबी में ही रहता है और कैसे उसके सारे भाई–बन्धु विपत्ति में हैं। लेकिन उसे सुख और आराम में रहने की ऐसी आदत हो गई कि वह यह भूल गया कि वह किस लिए सिंहों के राजा के यहां आया था। जब सिंहों के राजा को इन बातों का भान हो गाय तो उसने खरगोश से पूछा— ''कहिए कैसे इतनी दूर से आना हुआ?'' संकोच के साथ खरगोश ने अपनी बात कही– ''हां, ...एक तो यह कि मैं पिछली बार आप ही की तरह बनकर आपका भेद लेने के लिए आया था। एक प्रकार से तो मैंने यह ठीक नहीं किया। मैं उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। एक प्रकार से तो मुझे इसमें कुछ भी दोष नहीं लगना चाहिए क्योंकि हम खरगोश सचमुच ही आपके राज्य में बड़ी विपत्ति में हैं। हम जिधर रहते हैं उधर धीरे–धीरे अनेक प्रकार के जंगली जानवर घुसते जा रहे हैं और उनमें से अधिकांस तो हमें खा ही जाना चाहते हैं। हम धीरे–धीरे बिल्कुल ही समाप्त होते जा रहे हैं और जो भी बचे हैं वे दिन–रात भय में ही रहते हैं।'' सिंहों का राजा पहले ही से जानता था कि खरगोश यही सब बातें करेगा। उसने यह भी सोच रखा था कि उसे किस तरह का जवाब देना चाहिए— ''हां, आप लोग हमारे राज्य में कुछ कठिनाई में तो हैं, किन्तु यह भी है कि आप लोग राज्य चलाने के काम में कभी पड़े नहीं हैं इसलिए आपको अलग से जंगल देने पर भी मुझे लगता है कि आप राज्य नहीं चला सकेंगे। इसलिए अलग जंगल पाने के पहले, आपको राज्य कैसे चलाना चाहिए, इन सब बातों को सीखने की जरूरत है। अब से जैसा कि आपने कहा, हम आपके बीच से बहुत से खरगोशों से राज चलाने के काम में लागाएंगे।'' सिंहों का राजा आगे और भी कहता जाता लेकिन खरगोश ने बीच में ही बात काटी— ''जरा रुकिए, एक बात....यह ठीक है कि हमने कोई बड़ा राज चलाने का काम नहीं किया है लेकिन इतना तो हम जानते ही

एनाओ गे एन लेका नोः गेले चालाओएआ। एना मेनते दिसुम काले चालाओ दाड़िआः मेनेआः जागार तेदो काम ठीकि जाद लेआ।'' कुला कोआः राजा कुलाए आओंते काएः मुलिओःआ मेनेआःए मुंडि केदा। इनिः मोदचोकोएः धामकाओ जाइः लेकाएः मेताइ ताना— ''आञ दो आपे लेकान को चिलकातेपे राबालोःआ मेनेआः गेञ उडुःताना। आपान हागा जाति को चिलकाते सुकु तेको ताइनोःआ मेनेआः उडुः दो इसु बुगिना, मेनदो आम सेकेकारगे चिमिनाङेम दाउड़ि बाड़ाएआ। सोमाएओ ताम सेनोः ताना आ'र होन गाणा कोओको सांगि गेआ। इनकुआः आयार तेआः जिनगानिओ आम उडुः लागातिङा। आम आञाः काजि लेकाम सेसेन रेदो आपे बिनगाते राज आउ रेआः दारकारो का होबाओःआ आ'र आमो सुकुतेम ताइना। आञ तिसिङ गे आलेआः होड़ोकोञ हुकुमाकोआ चि आमाः होन–गाड़ांको जूगु–जूगु नांगेन जेता किसिम रेआः दुकु आलो काको नामे आ'र जिनिद बाआरि आञ लेकागे सुकु आ'र माइन लोःते ताइन में।''

कुलाए कोआः नेता सिदा रेगे कुला कोलेका ताइनेः हेओआ चोटेःआ कान ताइकेना। जिनगानि बा'रि बेगार कामि ते राजा को लेका सुकु नामोः रेआः होरा लेल केआते आएआः हागा को सोबेनेः रिड़िङ केद कोआ आ'र कुलाएः हेआःइआ। हुड़िङ लेका दो बोरो तेओःए हे केदा चिआः चि कुला लोः जागार तान इमताङ तायोम साःए हेता लाः, आना दो दुआर ताःरे बारिआ बोरोआन गे लेलोः कुला किन दुआर किन कोटोङाकादा।

कुला कोआः राजा लोः जापागार होबा जान तायोम ते कुलाए राजा सागाते ओमाकान इसु पुराः भेंएटे को कुटुङा कालोः आकोआः बिर तेः रुआड़ा लेना। ''आबुआः गोमके हिजुः रुआड़ा काना'' मेनते आएआः हागा को इसु पुराः को रासिका जाना आ'र को जुरु बिउर ताआब किःआ। आबु नांगेन नावा दिसुमेः नाम आउ तादा मेनते सोबेन को रासिका ताना। आएआः सोबेन हागा होनको हजुिः चाबा जानचि कुलाए कोआः गोमके मिआद टुकु रेः तिंगुन जाना आ'र सोबेन को जोआर केकोआतेः मेन केदा— ''हागा को तिसिङ आञ आपेआः सानामाङ रे मिआद नावा काजिञ काजि जादा। जागार दो नेआगे चि नाआः जाकेद आबु कुला कोआते बिनगा रे ताइकोःआतेगे आबु नांगेन राजबु नाम केना। ने लेकातेदो आबु आको लोः लाड़ाई तान लेकाबु बाइआ काना। आको इसु पुराः पेड़ेःआकान लेकाते ने लेका तेदो आबु आपान राज काबु नाम दाड़िआः। एना मेनते आञाः बिचार मेनाः चि नाः दो आको लोः ताइकोःआतेगे आपान नांगेन राज नानाम रेआःबु कोसिस कोःआ। नेआको बिचार केआते गे आञ कुला कोआः राजा निसुकानिञ काजिआ काःइआ चि आले आपे लोःगे मेनाः लेआ।'' कुलाए को आएआः इसु पुराः जागार को काको बुजाओ दाड़ि जाना चिअःचि कुला कोलोः ताइ ताइते आएआः जागार बादाला गिड़िआकान ताइकेना। आएआः मोचाआते कुलाए जागार राटि एटाःगेः आयुमोः तान ताइकेना। कुलाए को नेआ लेल केआतेको दानदा गिड़ि–जाना चि आकोलोः जी कुड़ाम

हैं कि कैसे हमारे घर-द्वार और गांव-ग्राम का कल्याण होगा। राज्य मिलने पर तो उसे भी हम उसी तरह चलाएंगे। इसलिए 'तुम राज्य नहीं चला सकोगे?' यह कहकर आप ठीक नहीं कर रहे हैं।'' सिंह के राजा को यह मालूम हुआ कि खरगोश यों सीधे रास्ते पर नहीं आएगा। उसने उसे कुछ धमकी देने की तरह कहा— ''मैं तो यही सोच रहा हूँ कि आप जैसों का काम कैसे आसान हो। आपका ये सोचना ठीक ही है कि आपके जात-भाई कैसे सुखी हों। लेकिन आप अकेले कब तक दौड़ते फिरिएगा? आपकी उम्र भी बीत चली और आपके बाल-बच्चे भी बहुत हैं। उनकी भावी जीवन के बारे में भी आपको सोचना चाहिये। अगर आप मेरे कथनानुसार चलें तो आपको अलग से राज्य लेने की भी आवश्यकता नहीं होगी और आप स्वयं भी सुख से रहेंगे। मैं आज ही अपने लोगों को हुक्म दूंगा कि आपकी संतान को युगों तक किसी प्रकार की तकलीफ न हो। आप भी जब तक जीवित हैं मेरी ही तरह सुख और सम्मान से रहें।''

खरगोशों के नेता को पहले ही सिहों की तरह रहने की आदत कुछ-कुछ लग चुकी थी। जिन्दगी भर बिना काम किये राजाओं की तरह सुख पाने का रास्ता देखकर वह अपने भाई बन्धुओं को भूल गया और उसने सिंह को अपनी सहमति दे दी। कुछ तो उसने डर के मारे भी 'हां' कहा क्योंकि सिंहों के राजा के साथ बात करते हुए उसने एक बार पीछे देखा था तो पाया कि गेट पर दो डरावने सिंह दरवाजा रोके हुए हैं।

सिंहों के राजा के साथ बात खत्म होने के बाद खरगोश राजा की ओर से दिये गये बहुत सारी भेंट की वस्तुएं लिए हुए अपने जंगल में वापस आया। 'हमारे नेताजी वापस आये हैं।' यह सोचकर उसके भाई बन्धु बहुत प्रसन्न हुए। तुरन्त उसे घेर लिया। सभी खुश हैं कि वे हमारे लिये एक नया देश खोज लाये हैं'। जब उसके सारे भाई बन्धु आ गये तो खरगोशों का नेता एक टीले पर खड़ा हो गया और सबको जोहार करके कहने लगा— ''भाइयों, आज मैं आप लोगों के सामने एक नई बात कहने जा रहा हूँ। बात तो यही है कि आज तक हम सिंहों से अलग रहकर ही अपने लिए एक राज्य की मांग करते रहे हैं। इससे लगता है कि हम उनके विरूद्ध लड़ाई लड़ रहे हैं। चूंकि वे हमसे बहुत अधिक शक्तिशाली हैं इसलिए इस रास्ते को अपना कर हम अपना राज्य नहीं पा सकेंगे। इसलिए मेरा विचार है कि अब हमें उनसे मिलकर ही अलग राज्य लेने की कोशिश करनी चाहिए। यही सब विचार करके मैंने इस बार सिंहों के राजा को कह दिया है कि हम आप ही के साथ हैं।'' खरगोशों का नेता ऐसा ही कहता गया। खरगोश जनता उनकी अधिकांश बाते समझ नहीं पाई क्योंकि सिंहों के साथ रहते-रहते उसकी भाषा बिल्कुल बदल गई थी। उसके मुंह में खरगोशों

तोल गिड़िआ कानि: चिलकाते आमिनाङे: बादालाकाना। इनि: मेन जाद ताइकेना चि कुलाए को लेका ताइन बागे केआते कुला को लेका ताइनबु हेओआना।

आपाना: गोमकेआ: ने जागार को आयुम केआते सोबेन कुलाए को माएणा-मुयुणु तान आपान-आपान ओड़ा: तेको रुआड़ा लेना।

की भाषा भी कुछ अजीब सी लगती थी। खरगोश जनता यह देखकर बड़े आश्चर्य में पड़ी कि उनके साथ मन–प्राण से बंधा हुआ उनका अपना आदमी कैसे इतना बदल गया। वह कह रहा था कि हम खरगोशों की तरह रहना छोड़कर सिहों की तरह रहने की आदत डालें।

अपने नेता की ये बातें सुनकर सारे खरगोश अपने अपने घरों को निराश वापस चले गए।

बोंगा हार

"चि बुदु होन दो ताबुइः चिलकाः निमताङ दो?"

"होन दोएः एनका गेआ दादा। होड़ोमो लोलो कागेः गाटाओः ताना।"

" हे नेआदो बोरोआन काजि गे। नेका तेगे होला-होला ने पाआणा कोआः होन बु आद किःआ। लातार टोला रेन बाड़ाए होन नेका गेः लोलो राकाब जाना आ'रेः राड़ेः जाना। एन तायोमते दो बांगाइःजाना।"

"हे दादा आलिङ दो कुलगिआ उडुःते बारसिङ लेका ताआःते दुडुमगे कालिङ दुडुम ताना।" नेका मुसिङ सेताः बुदु आ'र संदिर दुकु सुकु किन कुपुलि ताना। एना नापाणेः हातु कोरे होड़ोको नेः नेका नोः गेको जापागार ताना। जेटे सिंगि रेआः सोमाए। हातु पारतेद मुसिङ बारसिङ दानाङ मोद होड़ो का मोद होड़ो गोजोः रेआः काजि आयुमोः ताना। हातु आते बार गाउदि सांगिन रे मिआद डाक्टर मेनाइः। मेनदो सुई बोरोते इनिःताः होड़ो को काको सेना। नेआ चुटि-चुटि को आयुम ताद रेओ चि एन होड़ो इसुगे हासुतान कोएः बुगिआ काद कोआ।

*** *** ***

"बापारि होड़ो किन, राः जाद बेन रे हाइ राटि काबेन हाइ जादा।" सांदु आ'र बिनाय ताकिन सनि आ'र अचि ताकिन पीटि जापाः रे मिआद डाड़िताः रेकिन सेन तेबाः ताद किना।

"हे, आयुम दोलिङ आयुम लेद रेओ आनताः रे काजि रुआड़ा का बाइजाना।" अचि मेन केदा आ'र बारान किन मिसा तेकिन लानदा केदा।

"आमिन सांगिनाआते लिङ हिजुः ताना, उडुः राटि काबेन उडुः ताना।" सांदु ताकिन कुलितान गेआ।

भूत निकासन

"बच्चा अब कैसा है, बुदू?"

"बच्चा तो वैसा ही है, भैया? देह का तपना घट ही नहीं रहा।"

"हां, यह तो डरने की बात ही है। इसी तरह हाल ही में हम लोगों ने पाहन परिवार का बच्चा खो दिया। नीचे टोले में लोहार बच्चा इसी तरह गर्म हुआ फिर ठंडा हुआ और उसके बाद मर गया।"

"हां भैया, हम तो चिन्ता से दो दिनों से सो ही नहीं पाये हैं।" इसी तरह एक दिन सुबह बुदू और संदिर एक दूसरे का सुख-दुःख पूछ रहे हैं। नजदीक के गांवों में लोग करीब-करीब इसी तरह की बातें करते हैं। गर्मी का दिन। प्रत्येक गांव में एक दो दिन छोड़कर एक न एक आदमी के मरने की खबर मिलती है। गांव से दो मील दूर एक डाक्टर रहता है, लेकिन सूई के डर से लोग उनके पास नहीं जाते इसके बावजूद कि उन्होंने दूर से सुना है कि डाक्टर ने बहुत से लोगों को चंगा किया है।

*** *** ***

"तुम लोगों का भी क्या कहना, बुलाने पर जवाब तक नहीं देते।" सन्दु और बिनए, सनि और अचि को बाजार के नजदीक एक डाड़ी के पास जा मिले हैं।

"हां हमने तुम्हारी बात सुनी थी लेकिन वहां जवाब देते नहीं बना।" अचि ने कहा और दोनों एक साथ हंस उठी।

"हम इतनी दूर से आ रहे हैं और तुम्हें इसकी चिन्ता ही नहीं है।" सन्दू और उसका साथी पूछ ही रहे हैं।

''हे कालिङ होपोरेन जाना। आलिङ लो: हिजु: लेन हातु रेन सोंगे को ताइकेना। आञा: दादाओ जाआ: पीटि: हिजु:आ कान ताइकेना। एन बोरो–सोरो कोतेगे कालिङ होपोरेन जाना। आ'र लेल दो बेएसे गेबेन लेलो: ताना नेआ उडु: केआतेलिङ रासिका ताना।'' सनि मेन रूआड़ा केदा।

''हे सांगिनाते मोद होड़ो आमा: दादा लेका लिङ लेल लि:आ। तोनोए: साब ताद ताइकेना। मेनदो आलिङ दो जाआ: काए: लेल ले: लिङा। लेल ले: लिङ रेओ पीटिआते इदाङरेलिङ उडुङ जान लेकाते 'राँची तेकिन रूआड़ा जाना' मेनेआ: गे काचि: सारते जाना।'' विनाय मेन केदा।

ने जापागार को ताला रेगे डाड़ि जापा: हाताना: रे दुबाकान माएनो, का'उ: आ'र डिमचुआ को जेंओर एटे:केदा।

''तोबे दो चाण्डु: हासुरो: तान लो:गे सिंगि तुरो: डाड़ि ता: रे हेइ।''

''हे मार।''

एन लेकाते, विनय, सांदु, आचि आ'र सनि एन निदा गे लेपेल रुआड़ा रेआ: को नेण्डा केदा। विनय आ'र सांदु रांचि रेकिन पाड़:ओ ताना। आचि आ'र सनि लो: आकिना: इसु दिन रेआ: लेपेल चिपिना। तिसिङ लेकागे बार आपि पीटि दानाङ रांचिआते किन हिजुगा, आचि आ'र सानि लो: ओको दारु सुबा चा सेरेङ जापा: रे गोटा निदा लानदा जागार को: चि किन रुआड़ा:।

*** *** ***

आयुब रेआ: माण्डि जोम नू होबा जान चि हातु सिङ– सोड़ोंए: जाना। आचिआ: एंगाते हुड़िङखो'न गुड़ाइए: सीब केना आ'र आपाना: कोचा रे: बिंडुन जाना आपुते आएआ: केचा:–केचा: पारकोम रे मिसा बारसाए: उलटा केना आरे: हु:टिर एटे: केदा। आचि माणीते माद सिलपिङे: नि: केदा आ'र पुसि लेकाए: उडुङ हापेन जाना। हानसा:ते सनिओए: हिजु: लेना। सनि ताकोआ: राचा किन पारोम जाद लो: गे चाना: फिङ केन साड़ि जाना। सेनो: ताना किन डाड़ि मुलि। होरा रेआ: बारान सा: लेल इदितान लो:। आचाका गे सानि मिआद दिरि रे: तो'द जाना। दिरि जाड़ाजुड़ु तान होरा जानार मुलि गुलि जाना। बारान किञा: जी लिटिब केन रिका जाना। एन सोमाए गे आकिन, हुआङ पारोम मादुकाम बुटाआते ओकोए: कोएओ: तान लेका किन लेल कि:आ। साम बोरो–सोरो बारान किन सेकेड़ागे हातु तेकिन रुआड़ा जाना। हातु तेबाए: लो:गे हातु रेन सेता को हुड़िङ खो'न को बु: ला: आ'र को हापेन जाना।

"हां, हम पास नहीं आये। हमारे साथ गांव के साथी थे। मेरा भाई भी शायद बाजार आया हुआ था। इन्हीं सब डर के कारण हम तुम्हारे पास नहीं आये और दिखने को तो तुम अच्छे लग रहे हो, यह देखकर हमें खुशी हो रही है।" सनि ने जवाब दिया।

"हां दूर से हमें एक आदमी तुम्हारे भाई की तरह दिखाई दिया था। वह एक बलुआ पकड़े हुए था लेकिन उसने तो शायद हमें देखा नहीं था। अगर देखा भी हो तो चूंकि हम बाजार से जल्दी ही निकल गये इसलिये उसने सोचा होगा कि हम रांची वापस चले गये।" बिनए ने कहा।

इसी बातचीत के बीच डाड़ी के पास के आसन पेड़ पर बैठे मैना, कौवे और ढेंचु पक्षियों ने शोर मचाना शुरू किया।

"तो चांद डूबते ही गांव के पूरब की डाड़ी के पास मिलेंगे हाँ।"

"अच्छा।"

इस तरह बिनए, सन्दू अचि और सनि ने उसी रात फिर से मिलने की बात पक्की की। बिनए और सन्दू रांची में पढ़ते हैं। अचि और सनि के साथ उनका बहुत दिनों का परिचय है। आज की ही तरह दो-तीन बाजार छोड़ कर वे रांची से आते हैं, अचि और सनि के साथ किसी पेड़ के नीचे या चट्टान के पास रात भर बात करते हैं और वापस जाते हैं।

*** *** ***

रात का खाना पीना होने के बाद गांव सुनसान हो गया। अचि की मां कुछ देर तक गुड़ाखू पीने के बाद अपने कोने में सो गई। उसका बाप अपनी फटी चारपाई पर एक दो बार उल्टा-पलटा और खर्राटे लेने लगा। अचि ने धीरे से बांस का दरवाजा खोला और वह बिल्ली की तरह चुपचाप निकल गई। उधर से सनि भी चली आई। जैसे ही वे सनि का आंगन पार कर रही थीं, किसी चीज से 'फिड्' की आवाज सुनाई दी। वे जा रही हैं डाड़ी की ओर, रास्ते की दोनों ओर देखते हुए। अचानक सनि को एक पत्थर से ठेंस लगी। पत्थर झड़झड़ा कर ढलान की ओर लुढ़क गया। उन दोनों का दिल धड़क उठा, तभी उन्होंने गड्ढे के पार महुवा पेड़ की आड़ से किसी को उनकी ओर झांकते हुए देखा। वे डर के मारे जल्दी ही गांव को वापस आ गई। उनके गांव पहुंचने के बाद गांव के कुत्ते भूंकने लगे और कुछ देर के बाद चुप हो गए।

नासा: सांदु आ'र विनाय ताकिन तांगि ताना। जाआन पाताड़ा एकेला जान लो:गे 'इतिकिन आकिन जाआ:' मेनते किन मेनेआ आ'र एन मुलि किन आरिद गाराङेआ। मेनदो चाण्डु: हासुर जान तायोम तेआ: नुबा: हेनदे इदि, हेनदे इदि जान गेआ मेनदो आकिना: होड़ो किन का गेकिन तेबा: केदा; तांगि-तांगि ते आसादि जान चि सांगिते लानदा तान जागार तान लो: जोमे नांगेन पीटि रे किरिङ लेद मेटाइ कालु: साआम मिआद बायार तेकिन तोल केदा आ'र ठीकि डाड़ि चेतान हामि: लांकाए:आ कान हेसा: दाड़ा रे किन हाका तुका जाना।

*** *** ***

"ने: नेआतेगे बाइ आबु हातु दो नेका काना।" गापा तेरे बारुडी बुड़िआ, चालाम बुड़िआए: मेताइ ताना। डाड़ि चेतान रे डिङ-डोङ तान हाकाकान कालु: पोटोम लेलकेआते चिपा थाड़ि राटि काकिन गाआसार जाना आ'र इपाए: चाटु ओड़ा:ते किन रुआड़ा जाना। गोटा हातु काजि उनाओ जाना चि हातु रेआ: दा: बागाड़ाओआ काना। मांडि-उतु राटि होका जाना आ'र हातु रेन होड़ोको जामा ताआबेन जाना, आ'र एन जागार पिचा नांगेन बुरु पारोम रेन रांदो गुरु ता:ते सेनो: को बिचार केदा। रेंगे: तेताङते बालाए तान लो: हामबाल जीआन गे बार आपि गांडा डाउडी होड़ो को रांदो गुरुआ: राचाते को तेबा: ला:।

रांदो गुरु सेणान गे ओड़ागाते: उडुङ लेना। मोलोङरे सिंदुरी टिका, होटो: रे पोएता माला, सुपु रे ताबिजि तोनोल आ'र ती रे बेंएते डाण्डा:। ओड़ा: कूंणु रे तामाकु पेदचे केने: बे: केदा आ'र होटो: कु: पारचि लेद चि एन होड़ो कोए: जोआर जागार केद कोआ।

"तोबे दो चिलका ताबु, बोरोआन गेपे तेबा: तादा।"

"बोरोदो बोरोगे। बार आठाउरि लेका ता:आते आलेआ: हातु बेएसे बानोगा। गोटा हातु ले हासु ताना। हुड़िङ लेका दो आदोले आद केद कोआ। चाना: ले ओणा केदा चि ओकोए: ओणाकाद लेआ, आ'र चिलका तेले बाइ रुआड़ाओगा मेनेआ: कुलि-खोजार गे आमता: तेले हिजुगा काना।"

"हे आयोम दोञ आयोम चोटे:आ कादा। मेनदो हातु होड़ोको आउरिपे काजि जाकेद दो चिलका ओड़ो: काजि कामि दाड़िओगा।....... दे तोबे सामपोड़ो को आगुइपे।"

रांदो गुरु काजी लो:गे डाउडी होड़ोको इनि मिआद सारजोम साकामरे आको आउ ताद चाउलि जाङ को ओमा:इआ। रांदो गुरु एना सिंगि तुरो: सा: मेदकेआते दुब तान लो: आएआ: सानामाङ रे दो केदा आ'र एन जापा: आएआ: जोम ती सा: रे बेंएते डाण्डा:। एन जालो:गे आएआ: बारिआ चेला किन आएआ: बारान सा: रेकिन दुब जाना। रांदो गुरु जोड़ा ती

इधर बिनए और सन्दू उनकी राह देख रहे हैं, देख रहे हैं। किसी पत्ते के हिलते ही 'शायद वही आ रहे हैं' यही सोचते और उधर ही आंखें गड़ा देते। लेकिन चांद डूबने के बाद की रात काली होती गई, काली होती गई लेकिन उनके लोग नहीं पहुँचे। राह देखते-देखते जब वे थक गये तो हंसते-बतियाते हुए एक साथ खाने की मिठाईयां उन्होंने पत्तल समेत एक रस्सी से बाध दी और डाड़ी के ऊपर तक पहुँचने वाली पीपल की एक डाल से लटका दी।

*** *** ***

''इसी से हमारा गांव बिगड़ा है, री।'' दूसरे दिन बरुडीह बुढ़िया चलाया को बता रही है। डाड़ी के ऊपर लटकी हुई पोटली देखकर उन्होंने बर्तन भी नहीं मांजे और खाली घड़ा घर वापस आ गई। सारे गांव में बात फैली कि गांव का पानी बिगड़ा हुआ है। खाना पकाना भी बन्द हुआ और गांव के लोग जमा हुए। उन्होंने उस बात का पीछा करने के लिए पहाड़ के उस पार रहने वाले रांदो गुरू के पास जाने का निश्चय किया। भूख और प्यास से थके मांदे दस बारह लोग रांदो गुरू के आंगन में पहुँचे।

रांदो गुरू एक गुणी आदमी की तरह घर से निकला। माथे पर सिंदूर का टीका, गले में जनेउ, बाजू में ताबिज का बंधन और हाथ में बेंत की छड़ी। घर के कोने पर उसने 'पेच्च' से थूका और उन लोगों को जोहर किया।

''तब कहिये क्या बात है, आप लोग डरावने से पहुँचे हुए हैं।''

''बात तो डरने की ही है। दो हफ्तों से हमारा गांव ठीक नहीं है, सारा गांव बिमार है, कुछ लोगों को हमने खो भी दिया है। हमने क्या बिगाड़ा या किसी ने हमें बिगाड़ा है और हम कैसे ठीक होंगे यही पूछने के लिये हम आपके पास आये हैं।''

''हां मैंने कुछ सुना तो है लेकिन आप ग्रामवासी जब तक नहीं कहते हैं तब तक काम कैसे होना? ....तो लाइये आपकी चीजें।''

रांदो गुरू के कहते ही डउडी ग्रामवासियों ने उसे एक दोने में अपने लाये हुए चावल के दाने दिये। रांदो गुरू ने उन्हें पूरब की ओर मुंह करके बैठते हुए अपने सामने रखा और पास ही दाहिनी ओर अपनी बेंत की छड़ी रखी। साथ ही उसके दो चेले उसकी दोनों ओर बैठ गए। रांदो गुरू हाथ जोड़कर बुदबुदी

केआते आएआ: बोंगा कोए: रा: जाद कोआ आ'र चिना:– चिना: कोए: बुड़ुङ–बुड़ुङ इदि जादा। हुड़िङ खो'न रेदो आएआ: ती एकेला एटे: जाना, एनाआते होड़ोमो, एनाआते बोओ:। रांदो गुरु रुम ताना। आएआ: बुड़ुङ–बुड़ुङ को हारा इदिओ:तान गेआ, हारा इदिओ: तान गेआ। खूब रुम तान–रुम तान गे रांदो गुरुइ: काकाला केदा।

"इतुआन रेदो उदुबेमे, उदुबेमे, उदुबेमे।"

"उदुबेआञ, उदुबेआञ, उदुबेआञ।"

"दा: रेचि हासा रे, दा: रेचि हासारे, दा: रेचि हासा रे?"

"दा: रेगे, दा: रेगे, दा: रेगे!"

" सिंगि तुरो: चि सिंगि हासुर, सिंगि तुरो: चि सिंगि हासुर, सिंगि तुरो: चि सिंगि हासुर?"

"सिंगि हासुर, सिंगि हासुर, सिंगि हासुर!"

"डाड़ि रेचि बानदा रे, डाड़ि रेचि बानदा रे, डाड़ि रेचि बान्दा रे?"

"डाड़ि रेगे, डाड़ि रेगे, डाड़ि रेगे।"

"इमिनाङ काजि जाद लो: देओड़ां रुमेने: होका जाना आ'र डाउडी होड़ोको मुलि लेल केआते: मेन केदा– हागा कोपे आयुम केद गेआ। हातु दो दा: ओणा कान रेआ:ते ओणाकाना।"

"हे ले आयुम केदा। ना: दो आयार तेगे दाणाए मे। चिलका तेले बाइ रुआड़ाओ:आ एना कुली मे।"

"हे, मारेञ कुलीआ।"

'रांदो गुरु ओड़ो: मिसाए: रूम एटे:जाना। आएआ: बोंगाए: कुलि कि:आ चि चिकान दाड़ें ओम लेरे हातुबाइ रुआड़ाओ:आ। हातु होड़ो को एना कोए: उदुबाद कोआ आ'र एना आयुम केआते डाउडी होड़ोको राबाल जीआन गे आको हातु तेको रुआड़ा ताना। देओड़ां: हातुआते उडुङो तान चिको जापागार ताना।

"हे, ने: नेआते चा बु ओड़ांकाना। सिदा रे होनाङ बु इतुकेद रेदो निमिनाङ होड़ो काबु आदकेद कोआ।" मेन जालो: सांदिर होरा रे जागारेए: एटे: केदा।

"हे होनाङ, मेनदो दा: दो सिंगि हासुर डाड़ि रे ओड़ांआकाना मेनते: मेताद बुआ आ'र आबु दो सिंगि तुरो: डाड़ि ओड़ांकाना:बु हिसाब तादा। एनता: रेगे बोंगा–

भाषा में क्या–क्या कहते हुए अपने देवताओं को बुला रहा है। थोड़ी देर के बाद उसका हाथ काँपने लगे, उसके बाद उसका शरीर, उसके बाद उसका सिर। उसका बुदबुदाना बढ़ते ही जा रहा है, खूब जोर से झूमते हुए रांदो गुरू ने जोर से कहना शुरू किया।

"पता हो तो बताओ, बताओ, बताओ।"
"बताऊंगा, बताऊंगा, बताऊंगा!"
"पानी में या मिट्टी में, पानी मे या मिट्टी में, पानी मे या मिट्टी में?"
"पानी में, पानी में, पानी मे!"
"पूरब में या पश्चिम में, पूरब में या पश्चिम में, पूरब में या पश्चिम में?"

"पश्चिम में, पश्चिम में, पश्चिम में!"
"डाड़ी में या बांध में, डाड़ी में या बांध में, डाड़ी में या बांध में?"
"डाड़ी में ही, डाड़ी में ही, डाड़ी मे ही!"

इतना कहते ही ओझे का झूमना बन्द हुआ और उसने डउडीह गांव वालों की ओर देखकर कहा— "भाइयों तुमने सुन ही लिया। तुम्हारा गांव उसका पानी बिगड़ने के कारण बिगड़ा हुआ है।"

"हाँ हमने सुन लिया। अब तो आप और ही आगे खोजिये। हम कैसे फिर से स्वस्थ होंगे इसका पता लगाइये।"

"अच्छा मैं पूछता हूँ।"

रांदो गुरू ने फिर एक बार झूमना शुरू किया उसने अपने भूत से पूछा कि कौन से बलिदान देने पर गांव फिर से स्वस्थ होगा। गांव के लोगों को उसने यह सब बताया। यह सुनकर डउडीह ग्रामवासी बड़े हल्के मन से अपने गांव वापस जा रहे हैं। ओझे के गांव से निकलते हुए वे बातचीत कर रहे हैं।

"हाँ, इसी से हमारा गांव बिगड़ा हुआ है। पहले ही अगर हमें पता चलता तो हम इतने लोगों को नहीं खोते।" कहते हुए संदिर ने बातचीत शुरू की।

"सो तो है, लेकिन इसने बताया कि पश्चिम की डाड़ी का पानी बिगड़ा हुआ है जबकि हमारे अनुसार पूरब की डाड़ी बिगड़ी हुई है। वहीं

कान साना पाना को नामा काना। सिंगि हासुर डाड़ि दो दाः काबु नू ताना।'' बुदु रांदो गुरुआः काजि का पातिआ तान लेकाएः काजि केदा।

''हे, एन लेका तेदो आञाः जीओ का बाराबारिः जाना। मेनदो होबा दाड़िओ:आ चि सिंगि तुरोः डाड़ि ओड़ां कान तेगे सिंगि हासुर डाड़िओ ओड़ां काना। जाँ गे चिकाओः देओड़ां काजिआ कादाः दो रिकाले एनाङ।'' मेनते सांदिर काजि रूआड़ा केदा। सारेः बाडुइः होड़ो को सांदिरः काजि गेको हे के केदा आ'र एन लेकाते दाणे को दाड़ां रेआः जिमा होड़ो कोरे हाटिङ जाना।

*** *** ***

''चि ताबु साना पाना कोबेन तोल केदा चि?'' रांदो गुरु आएआः चेला किनेः कुलि जाद किङा।

''हे सोबेनाः तेआराकाना। नाःदो सेनोः बाआरि गे सारेःआ काना।'' चेला किन काजि रुआड़ा केदा।

''तोबे दो सेन केबेन। नाएःके हेड़ाओःआ।'' सिंगि हासुर डाड़ि रेगे हेइ। ......लोसोद रे उगुर लेआद जाआन दिरि ते बेएसे लेका तेन ताबेन। आलोका डोमबोल एमानोः। मोद होड़ो दो डाड़ि चेतान रेआः टुकुआते होड़ोको आगाम कोबेन। जेताए आलोकाको लेल बेनका। मेनते रांदो गुरु आएआः चेला किनेः बुजाओकेद किना। चेला किन मिआद कालुः रे मेरोम बोओः जाङको, मिआद पुडुः रे आदोआ चाउलि आ'र सिंदुरि, मिआद पुडुःरे नाकिः सारेः ऊबको किन पोटोम केदा आ'र जेताए काको मुण्डि किन लेका माआणि तेकिन उडुङ जाना। आकिन डाउडि मुलि किन मुलिन जाना।

मोद आटाउरि रे दणे रेआः सोबेन सामपोड़ो को तेआर जाना। बारिआ मेरोम किङ, मोयोद मिण्डि आ'र मोणेआ सिमको। देओणाताः होड़ोको कुल जाना। गापा तेरेगे सिंगि हासुर नुदुम–नुदुम रांदो गुरु बेंएते पेरोआणा जालोः आएआः चेला किन लोः डाउडि हातुइः तेबाः लाः। हिजुः लेन लोः गे कुलि बेड़ा ताना। दाः जोमे डाड़ि होरा गेः कुलि ताना। होड़ो को होरा आड़ागाइ तान लोः होरा को उदुबाइ ताना। रांदो गुरु चानाः बुडुङ–बुडुङ जालोः बेंएतेः टुकुब इदिजादा। दाः नूइ डाड़ि दो सिंगि तुरोः साः रेगेआ एना मेनते सिंगि तुरोः साः गेको आयार जाःइआ। सिंगि तुरोः रेओ डाड़ि मेनाः मेनेआः देओणा काएः मुण्डि लाः। बोरोजादाएः चि हातु होड़ोको जाआः सोंजोको साब किञ रेदो पुराःगे एदकाओःआ। मेनदो रानदो गुरु चिमिनाङ एनकान सोंकोटो कोएः लेल पारोमाकाद ताइकेना। जाआंगे होबाओः, ने होड़ोको दो ओतोङ लेको एनाङ। रानदो

पूजा की हुई सामग्री मिली है। पश्चिम की डाड़ी का पानी तो हम पीते भी नहीं हैं। बुदु ने कहा जैसे कि वह रांदो गुरू की बात नहीं मान रहा हो।

"हाँ इस तरह से देखते पर तो मेरा भी मन सन्तुष्ट नहीं हुआ। लेकिन हो सकता है कि पूरब की डाड़ी बिगड़ी हुई होने के कारण ही पश्चिम की डाड़ी भी बिगड़ी हुई है।..... जो भी ही ओझे ने जो कहा वह तो करना ही होगा।" संदिर ने जवाब दिया। बाकी लोगों ने संदिर की बात पर सहमति प्रकट की और उसी के अनुसार बलि की सामग्री खोजने की जिम्मेदारी लोगों मे बांट दी गई।

*** *** ***

"तो तुमने सब सामान बांध लिया है न?" रांदो गुरू अपने दो चेलों से पूछ रहा है।

"हां सब कुछ तैयार है। अब तो सिर्फ जाना ही बाकी है।" चेलों ने जवाब दिया।

"तो तुम चल दो। बाद में देर होगी।..... पश्चिम वाली डाड़ी में ही, याद रखना।..... कीचड़ में डुबाकर किसी पत्थर से अच्छी तरह दबा देना। उसे ऊपर नहीं आना चाहिए। तुम में से एक डाड़ी के ऊपर की ओर टीले पर बैठकर लोगों पर ध्यान रखे कि तुम्हें कोई देखने न पाए।" कहकर रांदो गुरू ने अपने चेलों को समझया। दोनों चेलों ने एक पत्तल में बकरी के सिर की हड्डियां एक दोने में अरवा चावल और सिंदूर और एक दोने में कंधी से निकाले हुए बाल बांधे और चुपचाप निकल गए ताकि किसी को पता न चले। चेले डउडीह गांव की ओर चले।

एक हफ्ते में बलि का सब सामान तैयार हो गया। दो बकरे, एक भेड़ और पांच मुर्गे। ओझे के यहां लोगों को भेजा गया। दूसरे दिन शाम के धुंधलके में रांदो गुरू बेंत फटकारते हुए अपने चेलों के साथ डउडीह पहुँचा। आते ही उन लोगों से पूछ रहा है, जिस डाड़ी के पानी को खाने पीने के काम में लाते हैं, रांदो गुरू उसी का पता पूछ रहा है। लोग उसके चलने का रास्ता छोड़ते हुए डाड़ी का पता बताते हैं। रांदो गुरू न जाने क्या-क्या बुदबुदाते हुए, बेंत टेकते हुए चला जा रहा है। पानी लेने वाली डाड़ी पूरब में है इसलिए लोग उसे पूरब की ओर ही ले चले जा रहे हैं। गांव के पूरब में भी डाड़ी है इसका पता ओझे को नहीं था। गांव वालों को अगर इसका आभास हुआ तो यह बहुत बुरा होगा। लेकिन रांदो गुरू कितनी-कितनी कठिन परिस्थितियों का सामना कर चुका है। जो भी है।

गुरु बुड्डुङ-बुड्डुङ जादलो: सिंगि तुरो: डाड़िता: कोए: तेबा: ला:। डाड़ि: कोयो: ला:, आना दो दा: गुंजाल लेका तेता गेआ आ'र तेमबे: गे लेकाते चेतानाआते लातार हामि: लेलो: ताना। रानदो गुरु इसु सोंकोटो रे: टो: जाना। एन डाड़ि दो आएआ: कामि बाइउ: डाड़ि दो का ताना:। इमिन रेओ पारोमेन तेआ: होरा दो नाम ले एनाङ। सेड़ांए: खारचा केदा-आपिसा बेंएते डाण्डा: डाड़ि चेतान रे: बिउर केद चि ताला रे टुण्डा केद चि आचाका गे: राचा: उड्डुङ केदा।

"उहुं: नेआ डाड़ि दो का ताना:। नेरे जेतान ओड़ां बानो:। नेरेन होरो तानको सोबेन को ठीकि गेआ। दोला-दोला एटा:ते-बुआ।.... ओड़ो: ओकोता: रेआ: दा:पे नू ताना?"

"दा: दो नेरेआ: गेले नू ताना। नूइ दा: दो ओड़ो: जेता सा: रे बानो:।"

जेतासा:रे बानो:? मार बेएसे लेका उडु: लेपे।"

"का, जेतासा: रे बानो:"

"आञ आलोपे होसोड़ोञा। मार काजि लेपे सिंगि हासुर सा: रे डाड़ि मेना: चि बानो:?"

"हे, मेना: दो मेना: मेनदो दा: दो एनारा: दो काले नू ताना।"

जेतान कामि रे कापे आउ जादा? उरि: मेरोम को राटि काको नू ताना एना दा:?"

"हे इनकु दोको नू ताना।"

"एने: दाङ!....... इनकु दो हातु रेन को लेका कापे हिसाब ताद कोआ?"

"हे इनकुओ हातु रेन कोगे। एन लेका तेदो एनारेआ: दा:ओ ले नू ताना।"

"हे, आञ एनागेञ नाम ताना।"

ओड़ो: चाना:, सेकेड़ा गे हातु होड़ो कोलो: देओड़ां सिंगि हासुर सा: रेआ: डाड़ि ताए: तेबा: ला:। डाड़ि दो सिदा रेगे: लेला काद ताइकेना। इमिन रेओ एना चि का मेनते आएआ: चेला किन साएते: लेल केद किना। चेला किन रापिदा:इआ आ'र रानदो गुरूइ: बुजाओ जाना। डाड़ि ता:तेबा: केद चि रानदो गुरू डाड़ि आतोम-आतोम ते: सेन बिउर केदा आ'र ओड़ो: मिसा डाड़ि चेतान रे बेंएते डाण्डा: बिउर केद चि ताला रे: टुण्डा

लोग जहां ले चल रहे हैं वहां उसे जाना ही है। बुदबुदाते हुए रांदो गुरु पुरब की डाड़ी के पास पहुँचा। वह डाड़ी देखने के लिए झुका। उसने देखा कि पानी बिल्कुल स्वच्छ है और अधिक गहरी न होने के कारण ऊपर से नीचे तक साफ दिखाई दे रहा है। कोई कूड़ा कीचड़ नहीं हैं। झरने का पानी डाड़ी के ऊपर से बह रहा है। रांदो गुरू बड़े संकट में पड़ गया। उस डाड़ी से उसका काम बनने वाला नहीं है। तब भी पार होने का रास्ता तो उसे घुमायी। घुमाने के बात उसने छड़ी डाड़ी के बीच में टेकी और अचानक खींचकर निकाली।

''उहुं, यह डाड़ी नहीं है। यहां कोई गड़बड़ी नहीं है। यहां के रक्षक सब ठीक हैं। चलिए, चलिए, दूसरी जगह चलें।...... आप और कहाँ का पानी पीते हैं?''

''पानी तो यहीं का पीते हैं। पीने का पानी और कहीं नहीं है।''

''कहीं नहीं है? ठीक से याद कीजिये।''

''नहीं, और कहीं नहीं है।''

''मुझे ठगने की कोशिश मत कीजिए। कहिए, पश्चिम की ओर डाड़ी है कि नहीं है?''

''हाँ, जरूर है, लेकिन वहाँ का पानी नहीं पीते हैं।''

''किसी काम में नहीं आता? बैल-बकरी वह पानी नहीं पीते हैं?''

''हाँ, वे तो पीते हैं।''

''तब?...... उन्हें आप गाँव में रहने वालों में गिनते नहीं?''

''हाँ वे भी हमारे गाँव में ही रहते हैं। इस तरह से तो हम उसका भी पानी पीते हैं।''

''हाँ मैं वही पूछ रहा था।''

और क्या था, ओझा गांव वालों के साथ तुरन्त पश्चिम डाड़ी के पास आया। डाड़ी तो उसने पहले ही देख रखी थी। तब भी वही है या नहीं इसका पता लगाने के लिए उसने चेलों की ओर तिरछी नजर से देखा। चेलों ने आँख मिटकाई और रांदो गुरू समझ गया। डाड़ी पर पहुँचने के बाद रांदो गुरू उसकी चारों ओर घूमा और फिर बेंत घुमाकर उसे डाड़ी के बीच टेकी। इस बार

ला:। निसुकान दो बेंएते डाण्डा: तालि जाना आ'र लातारते दा: बुड्डु-बुड्डु राकाब जाना। रानदो गुरू मेन जादा "नेआ डाड़ि गेबु नाम ताना।"

होड़ोको सिगिल बिगिल एटेगेन जाना, ओकोए दो बोरोते, ओकोए दो दानदाते। डाड़ि दो सोबेन सा:ते होड़ो तेगे बाकिड़ि कोटोङ जाना। रानदो गुरु डाड़ि रेआ: दा: चापु केद चि आएआ: चेला किन मुलि: मेद केदा...... मार तोबे हाड़ागुन बेन।

"चेला किन बोरोते पेरे:आ कान गे किन बाइन जाना आ'र माणिते डाड़ि दा: रेकिन हाड़ागुन जाना। दाड़ां ताना किन, दाड़ां ताना किन। एटे:रेदो दिरि दो पाताड़ा दो किन उडुङ जादा। होड़ोकोआ: जी रे ने: गेजाआ: ने: गेजाआ: मेनते रिकाओ:ताना। तारा दोको मेनजादा....... नेरेओ जाआ: इपाए: गे।" रानदो गुरू ने: नेआ कोगे आयुम साना जा:इआ गारजाओ केदाए:- "तेर हेइ, आलोम उकुइआ। ओकोए तानि: मेनेआ: काम इतुआना?"

"चेला किन ओड़ो: मिसा दाड़ां किन आचुन जाना। दा: बितार रेकिन तुनुम ताना। निसुकान दो मिआद नि: मिआद दिरि लातार रे सारतेगे चाना: तोपाकान नाम केद लेकाए: बाइन जाना। कुरूमुटु तान दिरि पालटि: आचुन जाना। एसेकारते का दाड़िओगा मेनेगे: बाइन जाना आ'र ना: दो दिरि पालटि जाना। डोबा पोण्डे गिड़ि जाना आ'र होड़ो किन लोसोद तेकिन पेरे: गिड़ि जाना तिरिङ लातार रे नामा:कादा: को माणि तेकिन सिपिङ राकाब केदा आ'र रानदो गुरूआ: काटा सुबा रेकिन दो केदा।"

"मार हागा कोबु लेल जाद गेआ दाङ?" रानदो गुरु पेड़े:आनगे: मेन केदा।

"हे ले लेल जादा।" हातु होड़ो को काजि रुआड़ा केदा।

"मार ताबु राड़ाए बेन।" रानदो गुरू चेला किने: हुकुमा किन ताना। राड़ा केदा किन। हातु होड़ो को लेल केदा आ'र को पतिआ जाना। मेरोम बोओ: लो: चाना:- चाना: को तोला काना। माणि-माणिते एदका सोआन एटे: जाना, होड़ोकोआ: जी रे होबा जाना चि सारतेगे आकोआ: हातु ओड़ांआ काना। ना: दो चिलकाते गे होबा दाड़िओ:, नेआ बाइले एनाङ।

सेकेड़ा गे सोबेन होड़ोको हातुते को रुआड़ा जाना आ'र दाड़ें को सामपोड़ो को लागातिङ जाना। ताला निदाओ: तान लो: सोबेन दाड़ें कोको जामा केदा आ'र रानदो गुरू को मेता:इआ चि सोबेन तेआर जाना।

"तोबे दो ओकोआ को बाइउगा: को सेकेड़ा गेबु कामि केआ आ'र सारे: बाडुइ: कोदो आलेगे कामिआ।" रानदो गुरु मेन केदा।

छड़ी कीचड़ में अटक गई और नीचे से बुलबुले उठने लगे। रांदो गुरू कह रहा है— "हम यही डाड़ी खोज रहे थे।"

"लोग कुलबुलाने लगे। कोई डर से, कोई आश्चर्य से। डाड़ी चारों ओर से देखने वालों से घिर गई। रांदो गुरू ने डाड़ी का पानी छूकर अपने चेलों की ओर देखा। अब तुम्हें उतरना चाहिए।"

चेले धीरे-धीरे पानी में उतर रहें हैं मानों वे भयभीत हों। खोज रहे हैं, खोज रहे हैं। शुरू में वे कभी पत्थर तो कभी सड़े हुए पत्ते निकाल रहे हैं। लोगों के मन में 'अब मिला, अब मिला' के विचार उठ रहे हैं। कुछ कह रहे हैं- 'शायद यहां भी कुछ नहीं मिलेगा।' रांदो गुरू यही सब सुनना चाहता है। उसने गरजकर कहा— 'सावधान छिपाना नहीं। तू जानता नहीं मैं कौन हूँ?'

चेलों ने फिर एक बार खोजना शुरू किया। पानी के अन्दर वे टटोल रहे हैं, टटोल रहे हैं। इस बार एक ने चेहरे से ऐसा भाव दिखाया मानो उसे सचमुच ही कोई चीज किसी पत्थर के नीचे दबी मिली है। उसने अपना पुरा बल पत्थर उलटने में लगाया। फिर भी पत्थर मानो एक आदमी से उलट नहीं रहा था। अब उसमें दोनों लग गए हैं। पत्थर बड़ी कठिनाई से पलटता है। डाड़ी गंदला गई और दोनों चेलों का शरीर कीचड़ से भर गया। पत्थर के नीचे दबी चीजें चेलों ने धीरे से उठाई और रांदो गुरू के चरणों पर रख दी।

"तो, भाईयों आप देख रहे हैं?" रांदों गुरू ने अधिकार पूर्वक कहा।

"हाँ, हम देख रहे हैं।" ग्रामवासियों ने जवाब दिया।

"अब इन्हें खोलो।" रांदो गुरू ने अपने चेलों को हुक्म दिया उन्होंने पोटली खोली। लोगों ने उसे देखा और उन्हें विश्वास हो गया। बकरे की खोपड़ी में न जाने क्या-क्या चीजें बंधी हुई हैं। धीरे-धीरे दुर्गन्ध फैलने लगी। लोगों के मन में हुआ कि सचमुच ही उनका गांव बिगड़ा हुआ है। अब तो जैसे भी इसे बनाना ही होगा।

जल्दी ही सारे लोग गांव वापस आए और बलि का सामान जुटाने में लग गए। आधी रात होते-होते उन्होंने सारा सामान जमा किया और रांदो गुरू को बताया कि अब सब कुछ तैयार है।

"तब तो जो जहां बन सकता है वह हम जल्दी ही खत्म करें और बाकी हम खुद करेंगे।" रांदो गुरू ने कहा।

“ओकोआ को ना: दो नेरे बु रिका आयारेआ?” सांदिर रानदो गुरुए: कुलि जा:इआ।

“बारिआ हेनदे सिम किन आ’र मिआद पुरतानि: नेरे को बोंगाओ:का आ’र सारे: बाड़ुङ सिमको मेरोम किन आ’र मिण्डि दो आलेगे आपेआ: हातु सिमान रेले बोंगा कोआ। इनकु दो आपे दो का बाइउगा।” रानदो गुरुए: काजि रुआड़ा केदा।

ओड़ो: चाना:, रानदो गुरु काजि केद लेकागे सिमको बोंगा जाना आ’र जोम नू होबा जाना। एन तायोम ते रानदो गुरु आ’र आएआ: चेला किन सारे: बाड़ुइ: सिमको कुटुङ केकोआद आ’र मेरोम आ’र मिण्डि ओर जाद कोलो: डाउडी हातुआते बेंएते डाण्डा: फेरओआड़ां जाद लो: उड़ुङ जाना आ’र लाता लेकान नुबा: रेको आद जाना। आकोआ: बोंगा को हारतेआ: बुड़ुङ–बुड़ुङ काजि को हुड़िङ खो’न नुबा: बितारतेगे आयुम जाना। एना कोओगे चिलका को सेनो: इदि जाना एनकागे होका इदि जाना। हातु होड़ोको उड़ु: केदा चि आकोआ: दुकु एन निदा गे एन देओड़ां कोलो:गे सेनो: जाना।

*** *** ***

गापा तेरे माराङहादा पीटि ताइकेना। डाउडी बुदुओ सुनुम बुलुङ को किरिङ पीटि: सेना काना। मिण्डि मेरोम को आकिरिङ कोसा: होनोर बेड़ा लेकाए: सेन केना आनादोए: लेल केदा चि देओड़ां: चेला किन गे आको दाणे ओम लेद मिण्डि आ’र मेरोम को किन आकिरिङ जाद कोआ। जापा: रेगे रानदो गुरु पाने: तागोए: तान ताइकेना।

*** *** ***

तायोमते नेआओ आयुम जाना चि डाउडी होड़ोको आचि आ’र सानि ताकिन नाजोम को साब केद किना। आको इनकिन को विचार केद किना आ’र आकोआ ओड़ा: रे जोम–नू आ’र दुब जाआरु को होका जाना।

“तो कौन सी चीजें हम यहां के लिए रखें?” संदिर रांदो गुरू से पूछ रहा है।

“दो काले मुर्गे और एक चितकबरा मुर्गा, इन सब की बलि यहीं दी जानी चाहिये और बाकी मुर्गे, बकरे और भेड़ की बलि हम आपके गांव की सीमा में खुद करेंगे। वह सब आपके लिए निषिद्ध है।” रांदो गुरू ने जवाब दिया।

और क्या था, रांदो गुरू के कहने के अनुसार मुर्गों की बलि दी गई और सारा खान-पान हुआ। इसके बाद रांदो गुरू और उसके दो चेले बाकी मुर्गों को पीठ पर लादे हुए और बकरे तथा भेड़ को घसीटते हुए बेंत छड़ी की फटकारते हुए डउडीह गांव से निकले और रात की अंधियारी में खो गए। उनकी भूत भगाने वाली बुदबुदी आवाज कुछ देर तक अंधकार से ही सुनाई देती रही। वह सब भी जैसे जैसे वे लोग आगे बढ़ते गए, सारा बन्द हो गया। गांव के लोगों ने सोचा कि उनका दु:ख उन ओझाओं के साथ ही चला गया।

*** *** ***

दूसरे दिन मरंगहादा बाजार का दिन था। डउडीह का बुदु भी नमक तेल खरीदने के लिए बाजार गया हुआ है। भेड़ बकरियों की दुकान की ओर घूमते हुए गया तो उसने देखा कि ओझा के चेले डउडीह वालों द्वारा बलि के लिए दिए गए भेड़ बकरियों को बेच रहे हैं। नजदीक में ही रांदो गुरू पान चबा रहा था।

*** *** ***

बाद में यह भी सुना गया कि डउडीह वालों ने अचि और सनि को डायन पकड़ा। लोगों ने उन्हें पंचायत के सामने पेश किया और उनके घर में लोगो का खान-पान और उठना-बैठना बन्द हो गया।

बिरं होना: नावा इनुङ

सेकेरे: रेन नन्दु हाड़ाम होला-होलागे खुंटि रेआ: कुड़ि होनकोआ: इसुकुल रे भारतिआ कान आएआ: होन कुड़ि बिरं लेल रुआड़ा लेकाए: सेनो: ताना। तारान रे तारा सा: रे मिआद हुड़िङ-हुड़िङ पारकोम गो:आ कादा, ओड़ो: तारा सा: रे हुड़िङ लेका चाउलि-दाआलि। एनरे गे बिनगाते हुड़िङ लेका आता-ताबेन को:ए पोटोमाकादा। होरा-होराते: उडु: इदि ताना, चिलकाते ने होन जे पाड़ाओआए: पाड़ाओ को: रे होनाङ मेनेआ: को। ना: दो नन्दुआ: आसाराए: को एन होन रेगे तोल गिड़िआकाना। नन्दुआ:जी रे नेआ उडु: केआते रासिका पेरेगो: ताना चि एन होन भारति रे जेतान बालाए का होबा लेना। पाड़ाओ दो नन्दु हाड़ाम बिरांआते मापाराङ कोड़ाहोन किङो खूब गे मोने लि:आ मेनदो एसेकारते कामिको का टोगो: तान चि उरि: गुपि आ'र सिउ: कामि कोरे देंगाइतान लो:गे आकिना: सोमाए पारोम जाना। इमिन रेओ मिआद नि: दो मोटाइते हुड़िङ दिन लेका दोए: कुललि: गेआ। मेनदो इनि: हुपुड़िङ-हुपुड़िङ होनको ताला रे आए:गे मोद होड़ो माराङ लेकानि:, ने: गे गुचु ओमोन एटेगो: तानि:, गाड़ि को ताला रे सारा: लेका दुबाकानो: आसादि कि:आ। साम गिउ: कोते हुड़िङ दिन रेगे इनि: पाड़ाओए: होका जाना, एनलेका ते बारान कोड़ा होन किन का पाड़ाओ जान रेआ:ते रुसा:कानजी बाइ रुआड़ाओ:का मेनते ने होनदो इदाङ रेगे: भारतिआका:इआ।

बिरं दो मोद होनाआतेगे नन्दु हाड़ाम लो: जार बाड़ने: हेओआ काना। मोद सेन बेड़ा इतु केआते पीटि कोते, कुपुलो: कोते, ओकोतेगे नन्दु हाड़ाम सेनो:आ बिराङो एनते: जारेना। एनकागे मिसा सुकान बुरु तेनेबा: किचिरि को किरिङ लेकाते नन्दु हाड़ाम खुंटि सेनो:ए: जारुडु जाना। सांगिनगेआ मेताइ रेओ होन काए: पातिआ जाना आ'र हाड़ाम लो: ते: जारेन जाना। मिसा हेबेइ, सिमा सुतुगिलो: बिराङा: रोकोम-रोकोम रेआ: कुनुलि को हे के इदिआइ तानलो: इसु हेड़ाते खुंटि किन तेबा: ला:। रेंङगे: तेताङ ते लायाकोएआ तान लो: मिआद चा दोकान रेकिन बोलो ताना। होन दो आपुतेआ: सोनो: रे जुमाङ गिड़िआ काना।

"दे आलोम एनका ना।........... बोरो जादाम चि?"

बिरं का नया खेल

सेकेरे: गांव का नन्दु, जिसने हाल ही में खूँटी कन्या विद्यालय में अपनी बेटी बिरं का प्रवेश कराया है, उसे देखने के लिए जा रहा है। कंधे पर एक तरफ एक छोटी सी खटिया और दूसरी तरफ चावल-दाल, और उसी में थोड़ा सा मूढ़ी-चिउड़ा बंधा हुआ है। रास्ते-रास्ते वह सोचते जा रहा है कि कैसे यह लड़की अधिक से अधिक पढ़े। अब तक तो नन्दु की आशाएँ इसी लड़की में बंधी हुई हैं। नन्दु के मन में यह सोचकर बड़ी खुशी होती है कि उस बच्ची को स्कूल में भर्ती कराने में उसे कोई परेशानी नहीं हुई। पढ़ाने का मन तो उसे बिरं से बड़े दो लड़कों को लेकर भी खूब ही था लेकिन अकेले गृहस्थी के काम में मदद करते-करते ही उन दोनों का समय पार हो गया। इस पर भी उसने एक को तो कुछ दिन तक तो जबरदस्ती स्कूल भेजा ही था लेकिन छोटे-छोटे बच्चों के बीच में वही एक बड़ा लड़का होने के कारण यह लड़का मुँछे अब निकलने लगी थी, बन्दरों के बीच मे हनुमान की तरह बैठे रहने से ऊब गया। शर्म के मारे थोड़े दिनों में ही उसने पढ़ना छोड़ दिया। इस तरह दोनों लड़कों के नहीं पढ़ने के कारण निरास मन को स्वस्थ करने के लिये उसने अपनी बेटी का प्रवेश बहुत ही जल्दी करा दिया है।

बिरं बचपन से ही अपने पिता नन्दु के पीछे लगने की आदी हो गई थी। जबसे उसने चलना सीखा है, बाजार, मेहमानी या जहां कहीं भी नन्दु जाता था बिरं भी उसके साथ पीछे लगती थी। इसी तरह एक बार सुकन-मेला के पहुँचने के पहले कपड़ा वगैरह खरीदने के लिये खूंटी जाने की जरूरत पड़ी। यह कहने पर भी कि रास्ता बहुत लम्बा है, बिरं ने उसका कहना नहीं माना और वह उसके साथ लग गई। कभी गोद में लेते हुए कभी हाथ से चलाते हुए और बिरं की अनेक प्रकार की बातों का जवाब देते हुए बहुत देर से खूंटी पहुँचे। भूख-प्यास के थके मांदे वे दोनों चाय की दुकान पर जा रहे हैं। बच्ची अपनी पिता के कुर्ते से लटक गई है।

"ऐसा न करो।...... क्या तू डर रही है?"

''हे गा! ने होड़ोको आञ गे को लेल ताना।''

''जेताओ: काको चिकामेआ। मार हेनता: दुबमे।''

''आमलो: गे गा......।'' मेनजालो: होन ओड़ो:गे: साब जापागेन ताना।

''हे मार आञ लो:गे।'' मेनजालो: नन्दु हाड़ाम होन आए: जापा: रेआ: कुरसी रे: दुब कि:आ। आकिन दुबाकान तागातेगे आलमारि रे दोआकान किसिम-किसिम रेआ: मेटाइको लेलो: ताना। बिराङ: काटा किङ कुरसीआते ओते रे का तेबागो:ताना:ते हूँचु इनुङ तानलो: एनाकोगे: लेल बेड़ा ताना। हुड़िङ खोओन रेदो दा: कोको होपोरा किङ ताना।

''चाना:कोञ आउआबेना?'' चा दोकान आओलाए: कुलि ताना।

''ओकोआ माइम सुकु ताना?'' नन्दु होने: कुलिजा:इआ।

''हेनेद लुतुर मेटाइ गा।'' होन मेटाइ चुनडुल जालो: आपुते ता: कुसुन तानलो:ए मेन जादा।

''हे मार।......... हेनेद गुलि लेकाना: दोम सुकुआ ताना चि का?....... नन्दु हाड़ाम रसगुल्ला को चुकुआ-कान मुलि चुण्डुल जालो: बिराङे: कुलिजा:इआ।''

''एना दोगा मेटाइ?'' होन का पातिआतान लेका आपुते: लेल राकाब जा:इआ।

''हे मेटाइ गे। रोओसोगोला को मेता:। मिआद चाकालेकामे।''

''हे मार।'' होन इमिनाङ तेगे आसादिओ: लेकाए: आटाकार केदा। नन्दु हाड़ाम आपान नांगेन दो पाकउड़ि आ'र चा रेआ: हुकुम दोकान आओलाए: ओमा:इआ। नू ताना किङ जोम ताना किङ। बिरं दोकान सानामाङ हिजु: सेनो: तान होड़ोकोए: लेल ताना।

''सोनो: कोरेम जोरो जादा। कोता: कोम लेल बाड़ा ताना?'' नन्दु हाड़ाम पुडु: बिरं मुलि: उसुकुर जादा।

''हेन होन दाङ गाञ लेल ताना।'' बिरं सांडाकारे आपिआ चाकाकान साइकाल होन चालाओ तान मिआद होन मुलि चुण्डुल जालो: आपुतेए: मेताइताना।

''हे आम इमिन माराङ गेआए:।'' नन्दु हाड़ाम एन होन बोओ:ए चापुजा:इआ।

"हां बाबूजी, ये लोग मुझे ही देख रहे हैं।"

"ये लोग कुछ नहीं करेंगे। चलो, वहां बैठो।"

"तुम्हारे साथ ही....!" कहते हुए बच्ची और अधिक चिपक रही है।

"अच्छा, ठीक है मेरे ही साथ।" कहते हुए नन्दु ने बच्ची को अपने पास कुर्सी में बैठाया। जहां वे बैठे हैं वहां से अलमारी में रखी हुई अनेक प्रकार की मिठाई दिखाई दे रही है। बिरं, उसके पैर जमीन पर नहीं पहुँचने के कारण पैर झुलाती हुई उसके आस-पास की चीजें देख रही है। थोड़ी देर में उन्हें पाना इत्यादि दिया जा रहा है।

"तुम्हारे लिए क्या लाऊं?" चाय-दुकान वाला पूछ रहा है।

"तुम्हे कौन-सी चीज पसन्द है?" नन्दु बच्ची को पूछ रहा है।

"मुझे वह कान की तरह दिखाई देने वाली मिठाई पसन्द है।" बच्ची जलेबियां की ओर अंगुली उठाते हुए कह रही है।

"अच्छा ठीक है..... वह गोली की तरह दिखाई देने वाली मिठाई तुम्हें पसन्द है कि नहीं?" नन्दु रसगुल्लों की ढेर की ओर अंगुलियों में बिरं को पूछ रहा है।

"क्या वह मिठाई है?" बच्ची पिता को नीचे से ऊपर देख रही है जैसे की उसे विश्वास नहीं हो रहा है।

"हाँ मिठाई ही हैं, उसे रसगुल्ला कहते हैं। तो एक चख कर देखो।"

"अच्छा ठीक है।" बच्ची ने सोचा कि उसके लिये इतना ही काफी है। नन्दु ने अपने लिये पकौड़ी और चाय का आर्डर दुकान वाले को दिया। दोनों खा पी रहे हैं। बिरं दुकान के सामने से आते-जाते लोगों को देख रही है।

"कपड़े गन्दे कर रही हो! कहां इधर उधर देख रही हो।" नन्दु दोने को बिरं की ओर सरकाता है।

"उस बच्ची को देख रही हूँ।" बिरं तीन चक्के की छोटी साइकिल चलाती हुई बच्ची की ओर इशारा करते हुए अपने बाप से कहती है।

"हाँ, वह तुम्हारी ही उतनी बड़ी है।" नन्दु बच्ची का सिर सहला रहा है।

''आञोगा काआरे मिआद बु किरिङाञा।''

''हे मार.....। पाड़ाओ को:रे दाङ नेकाना: कोदो नामोगा। पाड़ाओम मोनेआ दाङ?''

''मोनेआञ! होन काजि रूआड़ा केदा। एन होन धेआनते लेल जा:इलो:ते नन्दु हाड़ाम मेनजादा.......''

''आए: लेका सोनो: को, जुता को ओड़ो: नामोगा।''

''ने होन दोगा ओकोरे: पाड़ाओ ताना?''

''नेरेगे, खुंटि रे। नेरे मोद्पुरा: इसुकुल को दाङ मेना:।''

''आञो चि नेरेगेञ पाड़ाओआ?''

''हे आमो नेरेगेञ भारति तामेआ हिजु: सिरमा।''

''एदका दाङ गा सांगिना, काचिञ लागाओ:आ।''

''इसुकुल जापा:रेगे आम लेकान को ताइन तेआ: ओड़ा: मेना:। एन रे आमलेकान को मोद्पुरा: को ताइन ताना। मोदरेको इनुङा आ'र को पाड़ाओआ। आमो इनकु लो:गे ताइन मे।'' ने: नेकागे हारा राकाब तान बिरं होना: हुपुड़ि-हुपुड़ि जागार को नन्दु हाड़ामे: उडु: इदिताना।

''माआर गा हेड़े काड़े को।'' पीटि एनेटे: रे थाइला: जाताराकाद बाड़िंआ नन्दु हाड़ाम मुलि: सेनाउ जादा। नन्दु हाड़ाम आचाकागे कुमुआते: बिरिद जाना।

''बानो:आ हेड़े काड़े आञता: दो।'' नन्दु हाड़ाम आयार सा: रेआ: पोटोमे: साब कोटोङ जादा।

''नेरे चिकान मेना?'' बाड़िंआ पोटोमे: चापु-चापु जादा।

''ओचा नेआदो हेड़े काड़े दो का।'' नन्दु हाड़ाम बाड़िंआं: ती: कोपा पारका जादा। बाड़िंआं पोटोमरे हेड़े काड़े बानो: मेनेआए: मुण्डि केदा आ'र आएआ: मेद पोटोमाआते पारका जाना।

''ने पारकोम दो चिमिन गोनोङ?'' बाड़िंआं ना: दो पारकोम रे: हाका-हाकान ताना।

''ओचा नेआ दो काञ आकिरिङेआ।'' नन्दु हाड़ाम आयार सा: पोटोमको डिङडोङ ताना: कोए: साब रुआड़ा जादा।

''दे गा दो लेम।'' बाड़िंआं जोओर जाद गेआ।

''मुझे भी ऐसी ही खरीद दो न।''

''अच्छा ठीक है.....। पढ़ने से ही ऐसी चीजें मिलती हैं। पढ़ने जायेगी न?''

''जाऊंगी।'' बच्ची ने जवाब दिया। बच्ची को ध्यान से देखते हुए नन्दु बच्ची से कह रहा है—

''उसी की तरह जूते और कपड़े पहनने को मिलेंगे।''

''पिताजी, यह बच्ची कहां पढ़ रही है?''

''यही, खूंटी में। यहां बहुत सारे स्कूल हैं।''

''क्या मैं भी यहीं पढ़ूँगी?''

''हाँ, तुम्हें भी हम यहीं भर्ती कर देंगे अगले वर्ष।''

''बहुत दूर है न, क्या मैं थक नहीं जाऊँगी?''

''स्कूल के पास ही तुम्हारी जैसी लड़कियों के रहने का घर है। वहां तुम्हारी जैसी बहुत सी लड़कियां रहती हैं। एक साथ खेलती और पढ़ती हैं। तुम भी उनके साथ रहना।'' नन्दु चढ़ती हुई उम्र की बिरं के बारे में ऐसी ही छोटी-छोटी बातें सोचते हुए जा रहा है।

''खल्ली-भूसी, खल्ली-भूसी!'' बाजार के शुरूआत में कंधे से थैला लटकाए एक बनिया बन्दु की ओर आ रहा है। नन्दु अचानक ही सपने से जाग उठा।

''मेरे पास खल्ली-भूसी नहीं है।'' नन्दु बनिया को सामने की अपनी पोटली को छूने से रोक रहा है।

''यहां क्या है?'' बनिया पोटली को टटोल रहा है।

''छोड़ो, यह खल्ली-भूसी नहीं है।'' नन्दु बनिया का हाथ हटा रहा है। बनिया को यह पता चल गया कि पोटली में खल्ली-भूसी नहीं है और उसकी आँखे पोटली से हट गयी।

''इस खटिया का कितना दाम है?'' बनिया अब खटिया खींच रहा है।

''छोड़ो, यह मैं नहीं बेचूँगा।!'' नन्दु इधर उधर झुलती हुई सामने की पोटली संभाल रहा है।

''इसे उतारो जरा।'' बनिया जोर लगा रहा है।

"ओचा! का मेताम तान रेओ काम पातिआ ताना।" नन्दु हाड़ाम खींस एटेगो: ताना...

"नेआ दा काञ आकिरिङेआ, आड़ाः ताम दे।" जोमतीते हुड़िङ लेकान कोण्डेः ते बाआरोम बाराबारिः जालोः बाड़िंआंएः आरिद जाःइआ। ने होड़ो बागाड़ाओः ताना मेनेआः बाड़िंआं मुण्डि केदा। इमिनरेओ आड़ाः जाइःलोः आएआः लोओबो कागे चाबाओःतान।

"बार टाका ते ओमेआ?"

"काञ आकिरिङेआ मेताम तान रेओ......।" नन्दु हाड़ाम सेन पारोम केदा। बाड़िंआः आसाराएः टुण्डु जान रेओ इनि........

"माआर गा हेड़े कोड़े को" मेनजालोः एटाः को मुलिः मुलिन जाना। पीटि रे होड़ो को खूब को जामाकाना। बारान साः दोकान ताला होरा, किरिङ–आकिरिङ कोतेगे पेरेगा काना। होन कोआः इसुकुल दो पीटि तालाते सेन पारोम ले एनाङ तेबा गोःआ। नन्दु हाड़ाम मोदपुराः होरा एसेर जालोः पीटि ताला तेः सेनाकादा।

"ना कोड़ाओ ना, काएः लेल जाद लेका......।" मिआद टुङकि हेरमेदा काद पाण्डु बुड़िआ नन्दु हाड़ामेः आरिदाइ ताना।

"हे गाड़ोः नाएआओ......।" नन्दु हाड़ामइसु सोंकोटो तेः पारोम ताना।

ने लेकाते बाबा–चाउलि आ'र सिम दोकान मुलि सेन जालोः काराडोमबा तान पीटिः सेन पारोम केदा। एनाआते दो बिरं ताकोआः इसकुल लेल जाना। नानदु हाड़ाम टुण्डु रेआः पुटुकाल बुटा रे आएआः बाआरोमेः टेण्डेर केदा। तारान रेआः गामचाते बाल–बाल कोएः गोसोः हायादेन ताना। मोदचोकोएः खोओन तिगुं–तिंगु तेगे साताओन जान चि बितार सोनोः थाइलागाते कागोजो कोलोः गुड़ि पुटुड़िआ कान बारिआ लेका टाका कोएः लेका केदा। मोद टाकाएः बिनगा केद चि एनाको ओड़ोएः जोगाओ रुआड़ा केदा। एन जापाः रेगे मिआद मेटाइ दोकान ताइकेना। जूला रेआः सुकुल को नन्दु हाड़ाम मुलिते हिजुः ताना। नन्दु हाड़ाम एन सोआन तेगे एन दोकान मुलिः राचाः इदि जाना। मिसा–मिसा पोटोम–जोटोम कोसाः हेता रुआड़ा तानलोः दोकानेः तेबाः केदा। पोटोम को जाआंए जाआः को इदि तागेआ मेनते इनिः दोकान रेआः बेंचे रे गानडे नोःतेः दुबजाना। बीस पाएसा रेआः पाकाउड़ि, मिआद चाएः आसिकेद कोआ। सेकेड़ा–सेकेड़ाएः जोम–नू केद चि सारेः बाडुइः कुचुरा पाएसा कोते होन नांगेन जाटा मेटाइएः किरिङ केद चि दोकानाआतेः उडुङ जाना। नन्दु हाड़ाम ओड़ोः मिसा आएआः बाआरोम तारान रेः बाराबारिः केदा आ'र बिरं ताकोआः इसुकुल मुलिः सेनोः ताना।

"छोड़ो! 'नहीं' कहने पर भी नहीं मानते।" नन्दु को गुस्सा आ रहा है—

"इसे मैं नहीं बेचूंगा, छोड़ो, जाओ।" दाहिने हाथ से पकड़े छोटी सी टंगिया से अपना भार संतुलित करते हुए वह बनिया को घूर रहा है। बनिया को लगा कि यह आदमी गुस्से में आ रहा है। फिर भी उसे छोड़ते हुए उसका लोभ संभल नहीं रहा है।

"दो रूपये में देगा?"

"कह रहा हूँ नहीं बेचूंगा तब भी.......।" नन्दु चलकर पार हो गया और बनिया की आशाओं में पानी फिर गया और वह-

"खल्ली-भूसी, खल्ली-भूसी" कहते हुए दूसरों की ओर चला गया। बाजार में लोगों की भीड़ लगी है। दुकानों के बीच का रास्ता खरीदने बेचने वालों से ही भर गया है। बच्चियों के स्कूल तक पहुँचने के लिये बाजार के बीच से चलना पड़ता है। नन्दु बहुत सी जगह घेरते हुए बाजार के बीच से जा रहा है।

"देखो री, इस मर्द को, जैसे कि इसे कुछ सूझता ही नहीं है।" काँख में टोकरी दबाई हुई एक सफेद बालों वाली बुढ़िया नन्दु को उलाहना भरी आँखों से देख रही है।

"हाँ, क्या करूँ यह भी......।" नन्दु बड़े कष्ट से उधर से पार हो रहा है।

इस तरह उसने धान, चावल और मुर्गियों की दुकानों के बीच से होते हुए बाजार चलकर पार किया। इसके बाद तो बिरं का स्कूल दिखाई देने लगा। नन्दु ने अपना भार बाजार की छोर पर के एक पुटकल पेड़ की छाया में टिका दिया। वह अपने कन्धे के गमछे से पसीना पोंछ रहा है। बड़ी देर खड़े खड़े ही विश्राम करने के बाद नन्दु ने अपने बनियान की जेब से कागजों के साथ लपेटे हुए कुछ नोटों को गिना। एक रूपया अलग करने के बाद बाकी उसने फिर से रख लिये। वहीं नजदीक में एक मिठाई की दुकान थी। चूल्हे का धुआँ नन्दु की ओर आ रही है। नन्दु उस गंध से उस दुकान की ओर खिंचता चला गया। रह-रह कर अपनी पोटलियों की ओर देखते हुए वह दुकान पर पहुँचा। उसकी पोटली कोई ले न जाय यह सोचकर वह दुकान की बेंच पर तिरछा होकर बैठ गया। उसने दुकान वाले से बीस पैसे की पकौड़ी और एक चाय मांगी। जल्दी-जल्दी खा पी लेने के बाद बचे हुए खुदरे पैसों से उसने बच्ची के लिये मिठाई खरीदी और वह दुकान से निकल गया। नन्दु ने फिर एक बार कन्धे पर अपना भार संतुलित किया और अब वह बिरं के स्कूल की ओर जा रहा है।

''बिरं ताकोआ: इसुकुल–राचा रे होन को इनुङ रेको बुलाओ गिड़ि काना। इसुकुल रे भारति तायोमते बार आटाउरि बितार रेगे बिरं मोद्पुरा: होनकोलोए: सोंगेआ काना। इनुङ रे साआल–बाआलाकान ताला रेगे बिरं मिआद सोंगे होन बिरं आपुते: चिना जा:इ लेकागे: आटाकार केदा।

''हिनि: दोना आपुम लेकागे: लेलो: ताना।''

''कुरि: ना?'' बिरं लुतुर चुड्‌कुद जालो: मेदकिङे: दाउड़ि केदा।

''हिनि: दोना पारकोमे: गो:आउ जादा।'' बिरंङा: सोंगे होन बिरं गाति जा:इलो: नन्दु हाड़ाम मुलि: चुण्डुलाइ ताना।

''हे ना का?'' बिरं गाति राड़ान तान लो: आपुते मुलि: दाउड़ि केदा। नन्दु हाड़ाम हिजु: लेना।

''चि गा आबाम हिजु: लेना?''

''हेञ हिजु: ताना।...... बेएसे गेआपे? मेनजालो: होन बोओ: कोए: चापु बेड़ा जा:इआ।

''हे.....।'' बिरं गिउ: गे: हेआइ तानलो: हाड़ामा: ती:रे: हाकान ताना।

''ने: नेआ को साबेमे ने।'' नन्दु हाड़ाम मेटाइ पोटोमे: ओमाइताना।

''नेरे दागा चाना:?'' होन पोटोम को चेतान लातारे: चापु बाड़ा जादा।

''हानता रेलाङ राड़ाएआ दो। हाड़ाम होने: सुतु: जा:इआ। इसुकुल गेएटे ता: तेबा: केद चि नन्दु हाड़ाम बाआरोमे: हाड़ागु केदा आ'र होन दुलाड़ाते: चापु बाड़ा जा:इआ।

''नेरे माजापे ताइन ताना का?'' ......हिनकु दो आमा: सोंगे को का?'' नन्दु हाड़ाम होनको मुलि लेल तान लो:ते: कुलि ताना।

''हे गा।'' बिरं होन आएआ: सोंगे को सा: लेल तान लो: ते: लानदा ताना।

''जू तोबे आकोओ हाटिङनोगाकोम।'' नन्दु हाड़ाम बिरं आएआ: सोंगे को मुलि: उदुर जा:इआ।

''सोबेन दागा'ड़ो: का..... ने: नेआ कोदो पोटोम रुआड़ा ताम।''

बिरं के स्कूल के आँगन में बच्चियां खेल में सब कुछ भूल गयी हैं। स्कूल में प्रवेश कराने के दो-तीन हफ्तों के भीतर ही बिरं बहुत सी बच्चों के साथ हिलमिल गयी है। खेल में मशगूल रहने के बीच ही बिरं की साथी को लगा कि वह बिरं के पिताजी को पहचान रही है।

"वह आदमी तुम्हारे पिता जैसा लगता है।"

"कहाँ है?" बिरं ने कान खड़े किये हुए अपनी आँखें दौड़ाई।

"वह देखो, कंधे पर चारपाई लिये हुए हैं।" बिरं की साथी ने बिरं के कंधे पर हाथ डालते हुए उसके पिता की ओर इशारा किया।

"हाँ, वही हैं।" बिरं हाथ छुड़ाते हुए अपने बाप की ओर दौड़ी। नन्दु दूर से ही हँसते हुए आ रहा है।

"पिताजी आप आ गये।"

"हाँ आ रहा हूँ।..... अच्छे हो न?" कहते हुए वह बच्ची का सिर सहला रहा है।

"हाँ...!" बिरं कुछ लाज के साथ कहते हुए अपने पिता के हाथ से जा चिपकती है।

"लो, यह सब पकड़ो।" नन्दु बिरं को मिठाईयों की पोटली दे रहा है।

"इसमें क्या है?" बच्ची पोटलियों को ऊपर से नीचे टटोल रही है।

"चलो वहाँ पहुँचकर खोलेंगे।" नन्दु बच्ची को आगे किये हुए जा रहा है। स्कूल के गेट पास पहुँचने के बाद नन्दु ने भार कंधे से उतारा और बच्ची को प्यार से सहलाने लगा।

"यहां कितनी खुशी के साथ रहती हो।..... वे तुम्हारे साथी है न?" नन्दु बच्चियों की ओर देखकर पूछ रहा है।

"हाँ, पिताजी।" बिरं अपनी सहेलियों की ओर देखती हुई हंस रही है।

"तो जाओ यह उन्हें भी थोड़ा बांट आओ।" नन्दु बिरं को उसकी सहेलियों की ओर ढकेल रहा है।

"सारा न देना, पिताजी यह फिर से बांध देना।" बिरं

बिरं तारा लेका जाटा मेटाइ कोए: चु: केद चि आएआ: सोंगे को मुलि: दाउड़ि केदा आ'रे: हाटिंआद कोआ।

''जोमेआ: नाम केद चि बिरङा: सोंगे को हिगाड़ान ताना आ'र बिरं आपुते ता: ते: हिजु: रुआड़ा लेना। एन जालो:गे इसुकुल ओड़ागाते मिआद मिस्ट्रेसे: उडुङ लेना।''

''जोआर गा।'' नन्दु हाड़ाम बिरिदनो: तानाए:।

''जोआर!..... बेएसे गे चि?''..... मिस्ट्रेस ना: दो हाड़ामे कुलि जा:इआ।

''बेएसे गे।..... आपेदो?''

''आलेओ बेएसे गे।'' नन्दु हाड़ाम जागार रुआड़ा केदा।

''मार आपुम दा: को ओमइपे।'' मिस्ट्रेस बिरंए: मेताइताना। बिरं एनलो: गे बितार सा: ते: दाउड़ि इदिकेदा आ'र मिआद आलमुनिआम लोटाते दा:ए आउला: आ'र आपुते: ओमा:इआ। नन्दु हाड़ाम मेदकोए: आब बाड़ान जाना आ'र लोटाए: ओम रुआड़ा:इआ।

''ने: ने चाउलि-दाआलि को ताबु दोतापे।'' नन्दु हाड़ाम मिस्ट्रेसे: मेताइताना। मिस्ट्रेस माण्डि ओड़ा: रे कामि तानि:ए रा: कि:आ आ'र इनि: चाउलि-दाआलि पोटोम को माण्डि ओड़ा: मुलि: इदि केदा। गेएटे जापा: बाराण्डा रेगे मिआद चाउकि ताइकेना। एनरेगे बारान होन-होपोन किङ दुब जाना आ'र किङ जापागार ताना।

''एंगाञ दोगा काए: हिजु: जाना? बिरं आपुते: कुलि जा:इआ।''

''हे ओड़ा: पुरा: बागे गिड़िओ: लेकाते आञ बाआरिञ हिजु: लेना। ओड़ो: मिसा रे मार आए: हिजु: का।''

''दादा ताकिङ दो?''

''कामिताना किङ।'' हाड़ाम बिराङे: बुजाओ जा:इआ।

''आकिनो होनाङ किङ हिजु: को: रे।'' बिरङा: हागा दुलाड़ा पारिड़ितान गेआ।

''हे मार ओड़ो: मिसा रेदो आकिनगे चाउलि-दाआलि, साआन को किन गो: आउ तुकाका।''

''सोसोको होनाङ किन आउ जारे।'' होना: इसुकुल रे का नामो: जोमेआ: कोए: उडु: नामजादा।

''हे मार एनाओञ काजिआ किना।''

कुछ मिठाईयाँ हाथ में लेकर अपनी सहेलियों की ओर दौड़कर गई और उसने मिठाईयां बांट दी।

मिठाई पाने के बाद बिरं की सहेलियां हट गई और बिरं अपने पिता के पास वापस आ गई। उसी समय विद्यालय से एक अध्यापिका निकली।

''जोहार, बहन जी!'' नन्दु थोड़ा उठ रहा है।

''जोहार। अच्छे तो हैं?'' अध्यापिका नन्दु को पूछ रही है।

''अच्छे ही हैं।..... और आप लोग?''

''जाओ री, पिताजी को पानी वानी दो।'' अध्यापिका जी बिरं से कह रही है। बिरं तुरन्त ही अन्दर की ओर दौड़कर गई और उसने एक अल्मूनियम के लोटे में पानी लाकर अपने पिता को दिया। नन्दु ने आँख-कान धोए और लोटा वापस किया।

''यह चावल-दाल रख लीजिए।'' नन्दु अध्यापिका जी से कह रहा है। अध्यापिका जी ने रसोइया को बुलाया और वह आकर चावल-दाल की पोटली रसोई की ओर ले गई। गेट के पास ही एक चौकी बिछी थी। वहीं बाप-बेटी बैठ गए। वे आपस में बात कर रहे हैं।

''मेरी मां तो नहीं आई पिताजी?'' बिरं अपने पिता से पूछ रही है।

''हाँ, घर अकेला पड़ जाएगा, यह सोचकर सिर्फ मैं ही आया। वह अगली बार आएगी।''

''मेरे दोनो भाई?''

''वे काम कर रहे हैं। बूढ़ा बिरं को समझा रहा है।''

''वे भी अगर आ सकते तो बड़ा अच्छा होता। अपने भाईयों के प्रति बिरं का प्यार उमड़ रहा है।''

''ठीक है अगली बार वे ही चावल-दाल-लकड़ी बगैरह पहुँचाने आएंगे।''

''भेलवा वगैरह भी साथ लाते तो बड़ा च्छा होता। बच्ची की छात्रावास में खाने को नहीं मिलने वाली चीजें याद आ रही है।''

''हाँ, ठीक है, वह भी उन्हें कह दूंगा।''

''आरिसा लाद गा ओड़ो:।''

''हे मार एनाओ।'' मेन जालो: हाड़ाम बितार सोनो: थाइलागाते साम कागोजो कोलो: टाका कोए: उडुङ जादा आ'र कागोजो को बिनगा केद चि टाका को होने: ओमा:इआ।

''इसुकुल सेनो: तेआ: मिआद सोनो: गा होनाङ। नेआदो काको सुकुआ ताना।''

''चिलकाना: तोबे? नन्दु हाड़ामे: कुलि ताना।''

''नीला:।''

''इमताङ दो हिजु: पीटि रे आपेगे मिस्ट्रेस लो: किरिङेपे। नेआ कोते का होबाओ: रेदो मार आमा: दादा ताकिन ओड़ो: किन आउ तुकामेआ।''

''मिआद बाकासा ओड़ो:।'' होना: जारुडु काआगे चाबाओ: ताना।

''एनाओ माणि–माणितेबु किरिङेआ। नाआ: बाआरि मार सोंगे कोलो: मोद रे दो हानताड़ाए पे।...... सोंगेओ: तानाम दाङ?''

''हे मेना: कोआ।'' होन होटो: गोनजेआ काद चि पाचिरि हासा गोता:– गोता: जालो: ते: मेन जादा।

''ओको कोरेन को?'' हाड़ाम कुलिताना।

''तिलमारेन सुगि, डाण्डेआरेन मकि आ'र चोण्डोर रेन ग्रेस.......।'' होन आएआ: नावा सोंगे कोए: नुतुम इदि जाद कोआ।

''एते: दो आबुसा: कोरेन को मोदपुरा: मेना: पेआ।'' हाड़ाम होन काए: मायाणा–मुयुणु: ताना मेनेआ: टोओर केद चि: रासिका ताना।

''इमिन रेओगा आबुआ: सोमबारी ताकोओ होनाङ नेरे मेना: कोरे।'' होन हातु रे बागेआकान सोंगे कोए: उडु: जाद कोआ।

''हे होनाङ मेनदो सोबेन गे दोड़ो: काको पाड़ाओ दाड़िओ:आ।''

''आको बाङको रेआ: तेगा नेता: दो आबु हातु लेका का टोओरो:आ।'' होना:जी कागे बारा बारिगो:ताना।

''निकुलोओ: एनकागेपे सोंगेओ:आ।........ आ'र ने: गे दाङ पाआगु चुटि तेबागो: ताना। एनाआते दो सोमबारी ताको लो:पे लेपेला। इमताङ हाबि: माजालेका ताबु ताइन पे हेइ, आलोपे गोपोए:आ। मार तोबे ना: दोञ सेनो: रुआड़ा:। पीटिओञ हेड़ाओ: ताना।'' हाड़ाम बिरिद सिदा रे होन गुनगुद जापा: जाइ:लो:ते: मेन जादा।

''और मिठाईयां भी।''

''ठीक है वह भी।'' कहते हुए बूढ़ा अपनी बनियान के जेब से कागजों समेत कुछ रूपए निकाल रहा है और कागजों को अलग करने के बाद रूपये बिरं को दे रहा है।

''पिताजी, स्कूल जाने के लिए मुझे एक ड्रेस की जरूरत है। यह लोगों को पसन्द नहीं है।''

''तो कैसा चाहिए?'' नन्दु पूछ रहा है।

''नीले रंग का।''

''तो आगामी बाजार में तुम्हीं लोग अध्यापिका जी के साथ खरीदना। इन रूपयों से काम नहीं चले तो तुम्हारे भाई कुछ और पहुँचा आएंगे।''

''एक बक्सा भी।'' बच्ची की आवश्यकताएँ पूरी ही नहीं हो पा रही है।

''वह भी हम धीरे-धीरे खरीदेंगे। फिलहाल चीजें अपनी सहेलियों के साथ ही रखती रहना।..... दोस्ती हो रही है न?''

''हाँ, कुछ हैं।'' बच्ची सिर झुकाकर दीवाल की मिट्टी कुरेदते हुए कह रही है।

''कहां की हैं?'' बूढ़ा पूछ रहा है।

''तिलमा की सुगि, डण्डेअ की मकी और चोण्डोर की ग्रेस....।'' बच्ची अपनी सहेलियों को गिना रही है।

''अच्छा! हमारे उधर से तुम्हारे साथ बहुत सी लड़कियां हैं।'' बूढ़े को इस बात की खुशी है कि उसकी बेटी अकेली नहीं है।

''फिर भी, हमारा सोम्बारि इत्यादि भी यहां होती तो और अच्छा होता।'' बच्ची गांव में छूटी हुई अपनी सहेलियों को याद कर रही है।

''हाँ, तब तो अच्छा ही होता, लेकिन सबको पढ़ा सकना तो संभव नहीं है।''

''उनके यहां नहीं रहने के कारण यहाँ अपने गांव की तरह अच्छा नहीं लगता है।'' बच्ची का मन शान्त नहीं हो पा रहा है।

''इनके साथ भी उसी तरह दोस्ती हो जाएगी।...... और जल्दी ही होली की छुट्टी आ रही है। तब तक तुम अच्छी तरह रहना, आपस में झगड़ा न करना।..... अच्छा, अब मैं चलूं। बाजार का समय निकला जा रहा है।'' उठने के पहले बूढ़ा अपनी बच्ची को प्यार से अपने नजदीक खींच रहा है।

"आञोगा काआरेञ सेनाउ को:आ।" होन गेरो–मेरो ताने: रिकाओ:ताना।

"पाड़ाओ दाङ आकामो:आ ड़ो:। तायोम जानरे काको सुकुआ, हाड़ाम आएआ: डाण्डा: आ'र कोण्डे: साब जाद लो:ते: बिरिद ताना। होन हाड़ाम ता: रे: साब जापागेन ताना।"

"दे काको एनकाना।...... जू ना: दो आमा: सोंगे को दाणा कोम आ'र इनुङ पे।" हाड़ाम आएआ: लातार थाइलागाते हुड़िङ लेका कुचुरा पाएसा कोए: उडुङ जादा।

"नेआकोदो मेटाइ जोम तेआ:।" हाड़ाम बिरं एनाको ती रे: साबाइ तानलो:ते पारका हापेन ताना। गेएटे बागेए सिदा हाड़ाम ओड़ो: मिसा होने: हेता रुआड़ा जा:इआ। आपुते: लेल कुल जा:इ बिरं गेएटे दुआर रे: हेपादा काना आ'र आएआ: जोआ मुलि मेद दा: जोरो ताना।

‘‘पिताजी मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगी।’’ बच्ची की रुलाई आ रही है।

‘‘पढ़ाई न छूटेगी! पीछे पड़ जाने पर लोग पसन्द नहीं करते।’’ बूढ़ा अपनी लाठी और टंगिया लेकर उठ रहा है। बच्ची बूढ़े से लिपट रही है।

‘‘वैसा नहीं करते।...... जाओ, अपनी साथियों को खोजो और उनके साथ खेलो।’’ बूढ़ा अपनी निचली जेब से कुछ खुदरे पैसे निकाल रहा है।

‘‘यह मिठाई खाने के लिए है।’’ बच्ची को पैसे पकड़ाते हुए बूढ़ा धीरे से अलग हो रहा है। गेट छोड़ने के पहले बूढ़ा फिर एक बार अपनी बेटी को देख रहा है। अपने पिता को देख पठाती हुई बिरं गेट के दरवाजे से चिपक गई है और उसके गालों से होकर आंसू बह रहे हैं।

संदु आ'र बिंदि

दाः सोङ दाः दाङसि हाड़ागुताना हादा–हादातान। लाताराआते सुकुल गे राकाबताना। दाः दुलोः तान ताः, लेल राटि का तेबागोः ताना। जेटे आरताङते दाः सुकुलरे रोकोम रोकोम रेआः राङ बाइओःताना। एन हुआङ रे होयो हामटुगोः चि राङ को मेटाओःआ ओड़ोः बाइ रुआड़ाओःआ। लेलते सुगाड़ा, मेनदो बोरोआनगे।

''आते बाला, नेः नेकातानरेओ छाएला संदु दो एसेकारगे गाड़ा पारोम केआते सुसुनेः सेनोः तान ताइकेना को मेनेआ।'' दाः दुनुल जापाः रे तिंगुआकान–तिंगुआकान हिसिर सगरेः कुलि जाःइआ।

''हे एन सोमाए दो ने पारोमाते हेन पारोम मिआद बानदु नाड़िं–नाड़िं पारोमाकान ताइकेना को मेनेआ। छाएला संदु एनातेगे हाका पारोमेनतान ताइकेना।''

''डुलकि–दुमाङ–गुगुरा को गोः केआते हाका पारोमेन मेनलेरे दो....।''

''ओड़ोः तारान रे साण्डि सिम।''

''सिमको रानाः होबाजाना मेनेआः मुण्डि नांगेन का?''

''हे! एनाआते दोएः रुआड़ाः। हुड़िङ खोओन गितिः कोः चि सेताः दो ओड़ोः सिउः चालुः।''

''बापारि ना होड़ोआः रासिका। सुसुन दुराङ नांगेन गोजोगाः राटि काएः बोरोलाः।...... गाड़ागे दो का–कुला–बुड़िआ दो, बिङ बायार दो।''

''हे जी रेआः सानाङ दो ओतोङ ले एनाङ।...... छाएला संदु सुसुन दुराङ बाआरि गे दो काएः पारोम तान ताइकेना। गाड़ा पारोमरेन मिआद बिंदि नुतुम तेन दांगिड़ि लोः किन सोपोंगे लेना को मेनेआ। सुसुन आसादि कोः चि सिमको रागोः गे किन जापागारा, आ'र एनाआते किन बिपिनगाः, हेन गाड़ा आतोम रे।'' सागर हिसिरेः गाति पानति जाःइआ।

संदु और बिन्दि

द:सों का पानी हदहदाकर गिर रहा है। नीचे से कुहासा ऊपर उठ रहा है। पानी गिरने की जगह, दृष्टि तक नहीं पहुँच रही है। सूर्य की रोशनी से जलवाष्प में तरह तरह के रंग बन रहे हैं। उस गढ़े में जब हवा का झोंका जाता है। तो रंग बनते हैं, मिटते हैं और फिर बनते हैं। देखने में सुहावना लेकिन भयानक है।

''हाय! ऐसे में भी कहते हैं कि रसिक संदु अकेले ही नदी पार करके नाचने के लिए उस पार जाया करता था।'' जल प्रपात के नजदीक खड़ी हिसिर सगर को पूछ रही है।

''हाँ, उस समय कहते हैं नदी के इस पार से उस पार तक बन्दु की एक लता तनी हुई थी। रसिका संदु उसी लता से लटककर पार होता था।''

''ढ़ोलक-मांदर-घूंघरू, वह सारा ढोकर लटकते हुए पार होना विश्वास नहीं होता.......।''

''और कंधे पर मुर्गा!''

''भिनसार हो गया यह जानने के लिए न?''

''हाँ इसके बाद वह लौटता था। कुछ देर सोने के बाद सुबह फिर जोतना कोड़ना।''

''बाप रे! इस आदमी का रीझ। नाच-गान के पीछे वह मृत्यु से भी नहीं डरता था।..... नदी ही नहीं बाघ-भालू, साँप-बिच्छू।''

''हाँ, मन की चाह का तो पीछा करना ही पड़ता है। रसिक संदु सिर्फ नाचने के लिए ही पार नहीं जाया करता था। कहते हैं, नदी के उस पार बिन्दि नाम की एक युवती से उसकी मित्रता हो गयी थी। नाचते-नाचते मन भर जाने पर वे भिनसार तक बातें करते थे और उसके बाद अलग होते, नदी के उस किनारे।'' सगर हिसिर के कन्धे पर हाथ रख रहा है।

“इदो चिमिन दिन लेका नेकागेकिन आङ लेना, का?”

“हे, नेकाकान रेदो जेता इमिनाङ सोमाए होबाजानरेओ हुड़िङ खोओन लेकागे दाङ आटाकारो:आ।”

“हे ने जी आसादि गे काए: आसादिओ:आ।” जिलिंगे साएआद जालो: हिसिर सागरता: रे: गुङगुद जापागेन ताना।

“नेका रेआ: तेगे दाङ तायोमतेदो छाएला संदु ने दा: दाङसि तान ता: रेगे: उयु: गोएन जाना को मेनेआ।...... बिंदि ताको हातुरेगे, बिंदि सानांकेन मिआद कोड़ाए: ताइकेना। आको हातु सुसुन आकाड़ा रेन सारदार। मेनदो संदुआतेदो कोओम नो:गे। संदु आकाड़ाए: तेबागे लो:गे बिंदि ओड़ो: मिसाए: नाकि: सुपिद रुआड़ान तान ताइकेना आ'र आयारेगे: गातिन तान ताइकेना। सुसुन नेका जामकाओ:तान ताइकेना चि आकाड़ा आतोम रे दुडुम तान को राटि को एओन रुआड़ाओ: तान ताइकेना। नावाते सुसुन जोड़ाओ रुआड़केद लेका आकाड़ा पारिड़ि रुआड़ाओ: तान ताइकेना।...... संदु दो आए: गे दुराङ, आए:गे रु। आए: बोलोजान लो:गे आकाड़ा आयार सा: दो सिदाआतेगे पाएल हानताड़ाकान ताइना। ताआल रु राकाबके लो:गे दुड़ा रेदो दुड़ागे ओटाङतान ताइकेना लोसोद रेदो लोसोदगे लाटाओ: तान ताइकेना।

“चाते बाला हातुरेन कोड़ा काए: हिसिंगाओ:आ?”

“हे एनातेगे तायोमतेदो एनकोड़ाए: जाइगि हापेकेद किना। संदु कोता: जाओगे गाड़ाए: पारोमा, मेनेआ: कोए: मुण्डि केदा, आ'र मुसिङ दो आए: हाका पारोमेनतेआ: बानदु नाड़िं: हाद ओद केदा।

“बेचाराङ संदु! दाङसि हाड़ागु तानरे जेताए–जाआ: काको लेलकि:आ, का?”

“इदो, बिंदि जाआ: सेनजोको एनता: कोरे: ताइकेन रेदो। ..... काजिआ को, एन दा: दाङसि साड़ि रे नाओ: आतेन बाइ– लेरे संदुआ: दुमाङ रुमबुल आयुमो: गेआ।”

“हे, ने संदु–बिंदि ताकिङा: काजिको उडु:लेरे दो बोरोआनगे आटाकारो:आ।” सागरे: लेल राकाब जा:इआ।

“बापुड़ि: बिंदि! उडु:ते चिमिनकाए: रोओड़ो गिड़ि जाना जाआ:।” कुड़ाम दो रुडुङ जाद लेका साड़ितान लो:, लोलोगे सायादो: तानलो: मेदरे लेपेल तान लो: हुड़िङ खोओन नांगेन दो सागर आ'र हिसिर ताकिङ हापे गिड़ि केना। एनलो:गे होयो साआम दा: सुकुल आकिन मुलि: होयो राकाबला: आ'र आचाकागे दा: सोङ साड़ागिर ओड़ो:गे पुरा: साड़ि राकाब जाना।

''हाँ, न जाने कितने दिनों तक उन्हें इसी तरह भोर हुआ था!''

''हाँ, इस तरह तो कितना भी समय बीत जाने पर थोड़ा ही लगता है।''

''हाँ, यह मन भरता ही नहीं है।'' लम्बी सांस लेते हुए हिसिर सगर से कह रही है।

''हाँ इसी कारण कहते हैं, बाद में रसिक संदु इस जलप्रपात में ही गिरकर मर गया।...... गांव में ही बिन्दि को चाहने वाला एक युवक था। उनके गांव के नाच अखाड़े का सरदार। परन्तु संदु की तुलना में वह कम ही था। जैसे ही संदु अखाड़ा पहुँचता था, वैसे ही बिन्दि फिर से बाल संवारती थी, नाचने वालों की पंक्ति में आगे ही स्थान लेती थी। नाच इतना अधिक जमता था कि अखाड़े के किनारे पर सोये हुए लोग भी जाग जाते थे। अखाड़ा फिर से भर जाता था, मानो नाच नये सिरे से जोड़ा गया हो.... संदु तो आप ही गाता था, आप ही बजाता था। उसके अखाड़े में प्रवेश करते ही पहले से ही जगह बनी होती थी। उसके ताल उठाते ही धूल के समय धूल ही उड़ा करती थी और कादो के समय कादो लटकता था।

''ऐसे में भला क्यों गांव का छोकरा ईर्ष्या नहीं करेगा?''

''हाँ, इसी कारण बाद में उसने उन्हें जोह लिया। उसने पता लगा लिया कि संदु कहां से नदी पार करता है और एक दिन उसने वह बन्दु की लता काट दी जिससे लटककर संदु नदी के उस पार जाया करता था।''

''बेचार संदु! पत्थरों से टकराकर गिरते हुए उसे शायद किसी ने नहीं देखा!''

''पता नहीं। संयोग से अगर उसके आस-पास बिन्दि रही होगी तो.....। ....कहते हैं, प्रपात की आवाज में कान लगाकर सुनने पर, संदु के मांदर की आवाज अब भी सुनाई देती है।''

''सच, संदु और बिन्दि की बातों को सोचने पर मन में डर होता है।'' हिसिर सगर को नीचे से ऊपर ताक रही है।

''बेचारी बिन्दि! चिन्ता से वह सूख गयी होगी।'' छाती में धक-धक की आवाज लिये, गरम सांसों के बीच, एक दूसरे को आँखों में देखते हुए सगर और हिसिर कुछ देर के लिए बिल्कुल चुप हो गये थे। उसी समय वाष्प और कुहासा भरी हवा उनकी ओर बह उठी और अचानक द:सों प्रपात और ही अधिक आवाज कर उठा।

Dr. RAM DAYAL MUNDA : A BRIEF BIO DATA

BIRTH

Village : Diuri, P.O. Tamar, Ranchi, Jharkhand, 1939.

EDUCATION

Lutheran Mission School, Amlesa, Tamar, Ranchi, 1946-53.
S.S. High School, Khunti, Ranchi, 1953-57.
Ranchi University, Ranchi, 1957-63, M.A. (Anthropology).
University of Chicago, USA, 1963-70, M.A. PhD (Linguistics).

RESEARCH AND TRAINING

Research Assistant, South Asian Languages and Civilizations, University of Chicago, 1963-70.
Assistant Professor- Associate Professor, South Asian Studies, University of Minnesota, Minneapolis, 1970-81.
University Professor, Tribal and Regional Languages, Ranchi University 1981-99.
Visiting Professor, Australian National University, Canberra, 1983.
Visiting Professor, Syracuse University, New York, 1996.
Visiting Professor, Tokyo University of Foreign Studies, 2001.

FELLOWSHIPS

American Institute of Indian Studies, 1977-78.
United States Education Foundation in India, 1996.
Japan Foundation, Tokyo, 2001.

FIELD OF RESEARCH AND TEACHING

Indian Languages and Literatures.
Tribal Peoples of India.
World Indigenous Movement.
Jharkhand Movement.
Reconstructing Jharkhand.

ADMINISTRATIVE SERVICES

Pro Vice-Chancellor, Ranchi University, 1985-86.
Vice-Chancellor, Ranchi University, 1986-88.

MEMBERSHIP IN NATIONAL/INTERNATIONAL COMMITTEES/ORGANIZATIONS

1. Committee on Jharkhand Matters, Government of India, 1989-95.
2. Anthropological Survey of India, 1989-95.
3. National Education Policy Review Committee, 1990.
4. Steering Group, Planning Commission, 1996-2000.
5. Expert Committee, National Commission, Women, 1997-2000.
6. Indian Confederation of Indigenous and Tribal Peoples, 2000-08 (Chief President).
7. Indian Confederation of Indigenous and Tribal Peoples, 2000-08 (Chief Advisor).
8. National Advisory Board, International Labour Organization (ILO), 1997-2000.
9. Executive Committee, Jawaharlal Nehru University, 1990-1995.
10. Executive Committee, North Eastern Hill University, 1993-1996.
11. Jharkhand Peoples Party, 1991-98(Chief President).
12. Adim Jati Seva Mandal, 1990-Present. (President)
13. Jharkhand Sanskritik Morcha, 1998-Present (President).
14. Ranchi University PG Teachers' Association, 1998-2000 (President).
15. Bharatiya Sahitya Vikas Nyas, 1998-Present (Secretary).
16. Binrai Institute of Research and Action, 1997-Present (President).
17. Standing Committee, Human Rights Education University Grant Commission, 1998-2001.
18. National Committee for Promotion for Social & Economic Welfare, 1998-2001.
19. Expert Committee, Sahitya Academy, 1999-Present.
20. National Council for Teachers Education, 2000- 2003.
21. Working Group on Empowerment of Scheduled Tribe, Planning Commission, 2000-2005. (Chairman).
22. All India Literary Forum, (President, 2005—present)
23. Technical Support Group for Formulation of Rules to Operationalise the Schedule Tribe and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006, Ministry of Tribal Affairs, Government of India, 2007, (Member).
24. Committee to Setup Central Tribal University, 2007, (Member).

PARTICIPATION IN INTERNATIONAL MEETINGS/CONFERENCE

1. Festival of India in USSR, 1987 (Leader of the delegation).
2. International Music Workshop, Bali, Indonesia, 1988.
3. International Dance Alliance, Manila, Philippines, 1989
4. International Folk Dance Festival, Taipei, 1990.
5. Adivasi Campaign in Europe, 1993.
6. Dalit Campaign in Europe, 1994.
7. International Conference on Indigenous Economy, Copenhagen, Denmark 1997.
8. United Nations Working Group on Indigenous Populations, Geneva, 1987-Present (Leader of the delegation).
9. International Alliance for Indigenous Peoples of the Tropical Forests, Nagpur, 1998.
10. Asian Indigenous Peoples' Conference on UN Permanent Forum on Indigenous. Peoples, Indore, 1999.
11. International Conference on Hunting and Games, Berlin, 2000.
12. International Conference on Indigenous Peoples, Upsala, Sweden, 2002.
13. Asian Indigenous Peoples Conference on UN Permanent Forum on Indigenous Issue, Bangkok, 2002.
14. The UN Permanent Forum on Indigenous Issues, New York, 2002-Present.

PUBLICATIONS

1. Four Mundari Jadur Songs in THE EAST WEST REVIEW 2(3), 1966(with Norman Zide).
2. HISIR (Necklace, Modern Mundari Songs), Sahkari Prakashan, Ranchi, 1967
3. SELED (Miscellaneous Poems in Mundari, Nagpuri and Hindi), Sahkari Prakashan, Ranchi, 1967
4. PROTO-KHERWARIAN SOUND SYSTEM, Department of South Asian Languages and Civilization, University of Chicago, 1967
5. Songs on Birsa and his Movement in Journal of Social Research 12, Department of Anthropology, Ranchi University, 1969 (with Norman Zide)
6. Descriptive Dialogue Songs in Mundari in M.C. Pradhan, P.K. Mishra and D.J. Shastri(Eds.) ANTHROPOLOGY AND ARCHEOLOGY, Oxford University Press, Bombay, 1969 (with Norman Zide).
7. Aspects of the Mundari Verb in Indian Linguistics 30, 1969.
8. Structural influence of Bengali Vaishnav songs on Traditional Mundari songs in JOURNAL OF SOCIAL RESEARCH 13, Department of Anthropology, Ranchi University, 1970.
9. MUNDARI GĪTKĀR, SHRI BUDU BABU AUR UNKI RACHNAE, Adivasi Sahitya Parishad, Ranchi, 1974.
10. OCEAN OF LAUGHTER, English Translation of Hāsyārnava (The Sanskrit Play by Jagadishwara Bhattacharya), Writers Workshop, Calcutta, 1975 (with David Nelson).
11. STRUCTURAL FEATURES OF THE VAISHNAV SONGS OF PARGANA BANGALI, PhD Thesis, Department of Linguistics, University of Chicago, 1975.
12. KALYANI, English translation of the KALYĀNĪ (Hindi Novel by Jainendra Kumar), Department of South Asian Studies, University of Minnesota, Minneapolis, 1976(with Paul Staneslow and Mark Johnson).
13. Some Formal Features of Mundari Traditional Poetry in Philip Jenner, Lawrence Thompson and Stanly Starosta (Eds) AUSTRO ASIATIC STUDIES, University of Hawaii Press, 1976
14. HOLY MAN FROM JAMANIA, English Translation of the Hindi novel JAMANIA KĀ BĀBĀ by Nagarjuna, Writers Workshop, Calcutta, 1977 (with Paul Staneslow).
15. Word Deformation in Mundari Song Texts in Peter Ponette (Ed) MUNDA WORLD, Catholic Press, Ranchi 1978(with Norman Zide).
16. KUCHH NAE NĀGPURĪ GĪT (Songs in Nagpuri), Nagpuri Sahitya Parishad, Ranchi, 1978.
17. MUNDĀRĪ VYĀKARAN (Mundari Grammar), Mundari Sahitya Parishad, Ranchi, 1979.
18. DHRUWA SWAMINI, English Translation of Hindi Play by Jaishankar Prasad, Department of South Asia Studies, University of Minnesota, Minneapolis. Also in JOURNAL OF SOUTH ASIAN LITERATURE 14, Michigan State University Press, 1979 (with Paul Staneslow).
19. Tribal development in JHARKHAND in P. Das Sharma(Eds)PASSING SCENES IN CHOTANAGPUR, Maitree Publications, Ranchi, 1980.
20. EEA NAWA KAANIKO (Seven New Stories), Mundari Sahitya Parishad, Ranchi, 1980.
21. TITLI, English Translation of the Hindi Novel by Jaishankar Prasad, Department of South Asia Studies, University of Minnesota, Minneapolis, 1980(with Paul Staneslow).
22. NADĪ AUR USKE SAMBANDHĪ TATHĀ ANYA NAGĪT, Jharkhand Sahitya Parishad, Ranchi, 1980.
23. THE SUN CHARIOTEER, English Translation of Hindi long poem RASHMIRATHI by Ramdhari Singh Dinkar, Department of South Asia Studies, University on Minnesota, 1981 (with Paul Staneslow and David Nelson)

24. LANGUAGE OF POETRY, Classical Publication, Delhi, 1981.
25. BIRSA MUNDA, Hindi Translation of the BENGALI BIRSA MUNDA by Mahasweta Devi, Ekta Prakashan,Chaibasa,1981.Second edition, Sail Rakab Puthi Centre, Calcutta, 2000.
26. WAPASI, PUNARMILAN AUR ANYA NAGĪT, Jharkhand Sahitya Parishad, 1985.
27. ALL JHARKHAND STUDENTS UNION KA SAMVIDHĀN, Ranchi, AJSU, Ranchi, 1986(with S. Basu Malik, Suraj Singh Besra and Deosharan Bhagat).
28. MEMORANDUM OF JHARKHAND COORDINATION COMMITTEE, JCC, Ranchi, 1987 (with B.P.Keshari, Santosh Rana, S. Basu Malik, and Suraj Singh Besra).
29. JHARKHAND VĀRTĀ, Position Paper for talks between the JCC and the Central Government, JCC, Ranchi, 1989 (with B.P.Keshri).
30. Tribal Identity: The Crisis and the Way Out in Karuna.M.Braganza and S.Peeradina(Eds) CULTURAL FORCES SHAPIG INDIA, (Macmillan) Bangalore, 1989. Also in RELIGION AND SOCIETY 36, Bangalore, 1989.
31. Jharkhand Movement, Retrospect and Prospect in JOURNAL OF SOCIAL CHANGE, Council for Social Development, Delhi, 1990.
32. JHARKHAND PEOPLES PARTY KA SAMVIDHĀN, JPP Office, Ranchi, 1990 (with Suraj Singh Besra and Devsharan Bhagat).
33. Dispossession and Exploitation of Tribal Peoples Through Communication Manipulation, with Special reference to Jharkhand in RELIGION AND SOCIETY 38,1991
34. Recent Development in Jharkhand Movement in INDIA INTERNATIONAL QUTERLY, Indian International Centre, 1992.
35. Introduction to Indigenous and Tribal Solidarity, ICITP, Delhi, 1997.
36. BHURIA COMMITTEE REPORT AUR JHARKHAND KI SHETRA ME USKĀ KĀRYĀNVAYAN, Jharkhand Prakashan, Ranchi, 1997.
37. Abstract on Socio-Cultural Rights: Language, Education and Cultural Identity in B.K. Roy Burman and B.G. Verghese (Eds) ASPIRING TO BE, Delhi, Konark Publication, 1995.
38. An Insiders View of the Struggle for Jharkhand in JAI JHARKHAND, Coimbatore, Sarini, 1999.
39. Adivasi Identity in RISING FACISM, Delhi, Update Collection, 2000.
40. ADI DHARAM, Religious Beliefs of Adivasi of India, Sarini, Coimbatore, 2000. Hindi Version, Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2001. Bangali, Sail Rakab Puthi Centre, 2002.
41. ADIVASI ASTITVA AUR JHARKHANDI ASMITA KE SAWĀL, Prakashan Sansthan, Delhi, 2001.
42. ADANDI BONGA (WIVĀH MANTRA), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2001 (with Ratan Singh Manki).
43. JI-TONOL (MAN BANDHAN), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2002.
44. JI-RANAṚA (MAN BICHHURAN), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2001.
45. ENEON (JĀGARAN), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2002.
46. BA (H) BONGA (SARHUL MANTRA), Mundari- Hindi Version, Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2002.
47. REPORT OF THE WORKING GROUP ON EMPOWERMENT OF THE SCHEDULE TRIBES DURING THE TENTH FIVE YEAR PLAN, Planning Commission, Government of India, Delhi, 2002.
48. GONOE? PAROMEN BONGA (SHRĀDDHA MANTRA), Mundari Hindi Version, Sail Rakab Puthi Centre, Calcutta, 2003(with Ratan Singh Manki).
49. JHARKHAND MOVEMENT, Indian Social Institute, Delhi, 2000 (with S. Basu Malik).
50. GLOBALISATION AND THE CHALLENGES OF TRIBAL DEVELOPMENT (Dr. Durgabai Deshmukh Memorial Lecture), Council for Social Development, New Delhi, 2005.
51. ADI DHARAM, BHĀRATIYA ADIVĀSIYAON KI DHĀRMIK ASTHĀYEN, New Delhi (Rajkamal Prakashan), 2009.
52. SOSOBONGA (BHELWA PŪJAN) PUNARNAVISRIT, New Delhi (Rajkamal Prakashan) in press.

WORKS IN PROGRESS

1. TUKUI? LUTUR BONGA (KARNA BEDHI MANTRA), Mundari-Hindi Version.
2. BURU SENGEL (FOREST FIRE), Mundari Novel.
3. RECONSTRUCTING JHARKHAND ADIVAI[illegible]

उल्लेखनीय सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियां

आदिवासी सांस्कृतिक पहचान प्रतिबिंबन–

- राँची विश्वविद्यालयी दिनों में ही वृहत्तर झारखण्ड क्षेत्रीय आदिवासी सरहुल महोत्सव के रूप में राँची में एक विशाल शोभायात्रा की परम्परा प्रारंभ करने में प्रमुख भूमिका। इस महोत्सव ने कालक्रम में पिछले 50 वर्षों में एक क्षेत्रीय विकेन्द्रिय रूप ले लिया है जिसके फलस्वरूप चैत्र का पूरा महीना ही महोत्सवमय हो जाता है।
- विदेश (अमेरिका–यूरोप) प्रवास के 18 वर्षों (1963–81) के दौरान भाषाविज्ञान और भारत विद्या के अध्ययन–अध्यापन के क्रम में साउथ एशिया फोक पर्फोर्मर्स के 25 सदस्यीय दल के नेतृत्वकारी टीम सदस्य के रूप में मध्यअमेरिका प्रमुख विश्वविद्यालयों एवं अन्तरराष्ट्रीय नृत्यसंगीत आयोजनों में सफल सहभागिता।
- स्वदेश वापस आने के बाद राँची विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना के साथ आदिवासी भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रारंभ। साथ ही पूर्व एशिया (ताइपेई, जापान) एवं दखिण–पूर्व एशिया (इण्डोनेशिया, फिलीपीन) में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आयोजनों में झारखण्डी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सफल प्रस्तुति।
- झारखण्ड विषयक समिति, भारत सरकार (1989–2000) में सक्रिय सदस्यता एवं उल्लेखनीय भूमिका, जिसके फलस्वरूप झारखण्ड राज्य गठन।
- विश्व सामाजिक मंच (World Social Forum) मुंबई (2004) एवं दिल्ली (2007) सत्रों में सर्वोत्तम भागीदारी।
- डोम्बारी पहाड़ (जिला–खूंटी, झारखण्ड) पर जनसहयोग एवं सरकारी विभागों के समन्वय से आदिवासी महानायक, बिरसा मुण्डा की विशालकाय (18′) प्रतिमा एवं, 80′ शहीद स्तंभ खड़ा करने में अग्रणी भूमिका निर्वहन।
- झारखण्ड सांस्कृतिक क्षेत्र में यहां की लोक कलाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए अखरा (ग्राम सांस्कृतिक केन्द्र) के पुनर्जागरण एवं विस्तार–प्रसार को एक अभियान का रूप देने में उल्लेखनीय भूमिका निर्वहन। इस चेष्टा की मान्यता स्वरूप 2008 में संगीत–नाटक अकादमी द्वारा भारत के राष्ट्रपति के करकमलों से पुरस्कृत।
- सरकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं से मिलकर जनविकास के अनेक कार्यक्रमों में सफल सहभागिता, विशेषकर वन विस्तार एवं संरक्षण के क्षेत्र में।
- राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासी जनहित अधिनियमों के प्रारूप निर्माण कार्य में सक्रिय भूमिका, विशेषकर ग्राम स्वशासन (PESA) आदिवासी नीति एवं वन नीति–नियम निर्माण में।
- प्रकृति और मनुष्य के पारम्परिक सम्पोषण (Symbiotic) संबंध को बनाए रखने की चेष्टा के एक आस्थागत अभियान का रूप आदिधर्म को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापना को समर्पित एवं देश की आदिवासी आबादी के लिए 'आदिधर्म' की प्रस्तावना।
- देश के आदिवासी क्षेत्रों में फैलते हुए उग्रवाद पर चिंतित एवं इसके पीछे की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने की चेष्टा में संलग्न।

Travels : North America, Europe, Asia-Pacific
Contact : Sarnatoil-Hatma, Behind Ranchi College, Ranchi-834008, Jharkhand.
Email : rdmunda@yahoo.co.uk ● ***Cell Phone:*** 9431938180 ***Home:*** 0651-2233090